२२
८अ

चेतना

अनुराग

D—275

"बको मत," मिसेज़ सावित्री ने गुस्से से कहा, "न बच्चा नाजायज़ होता है न मां। बच्चा भगवान् का दूसरा रूप होता है। और मां भगवान् का तीसरा रूप—नाजायज़ तो घड़ियां और भावनाएं होती हैं जो इंसान के दिल में शैतान को जन्म देती हैं और क्या पता शैतानी ताकत मर्द में ज़्यादा होती है या औरत में। गीता एक औरत है। हो सकता है उसने किसी से प्रेम किया हो। और औरत जब किसी से प्रेम करती है तो उस पर पूरा-पूरा भरोसा कर लेती है। हो सकता है वही भरोसा उसके लुटने का कारण बना हो। और आज वह एक बच्ची की मां है। तुम लोग कहते हो कि मैं उसे यहां से निकाल दूं। अगर मैं उसे निकाल दूंगी तो वह वहां जाएगी ? नन्ही-सी बच्ची को लेकर कहां भटकेगी ? और अगर कठिनाइयों ने उसे गलत रास्ते पर डाल दिया तो उसकी ज़िम्मेदारी किस पर होगी ?"

—इसी उपन्यास में से

चेतना के अन्य उपन्यास

फूलों के आंसू
कुर्बानी
सरगम
परछाइं
दीवानगी
पूजा के फूल (प्रेस में)

यदि आप चाहते हैं रोचक व लोकप्रिय

डायमंड पाकेट बुक्स

आपको घर बैठे हर माह और भी कम मूल्य में प्राप्त होती रहें तो

'अपने घर में अपनी लाइब्रेरी योजना'

के सदस्य बनिए

(विवरण के लिए अन्तिम पृष्ठ देखें)

डायमंड पाकेट बुक्स

लेखना:

य

ल्य में

अनुराग

प

सूचना

चेतना का नाम रजिस्ट्रार आफ ट्रेडमार्क (भारत सरकार) द्वारा सिरियल नं. ३४३१८६ के अन्तर्गत रजिस्टर्ड है। किसी अन्य व्यक्ति या संस्था द्वारा इस नाम का किसी प्रकार का प्रयोग असंवैधानिक होगा, जिस पर कड़ी कार्यवाही की जायेगी।

— प्रकाशक

C467

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक :
डायमण्ड पाकेट बुक्स
२७१५, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२
वितरक :
पंजाबी पुस्तक भण्डार
दरीबा कलां, दिल्ली-६
मूल्य : चार रुपये
प्रथम संस्करण : अप्रैल 1980
मुद्रक : अशोक प्रिंटर्स, गांधी नगर, दिल्ली-११००३१

AANURAG (Novel) CHETNA Rs.

प्रकाशक की ओर से

दो शब्द

प्रिय पाठको,

'चेतना' का छठा उपन्यास 'अनुराग' आपके हाथों में है। चेतना के पिछले पांच उपन्यास फूलों के आंसू, दीवानगी, परछाइं, सरगम और कुर्बानी से इस उपन्यास में आप बिल्कुल नयापन पायेंगे। गीता के हृदय में दर्द का जो उफान है, बलिदान और ममता का संगम है, कर्त्तव्य और भावना का समन्वित एहसास है वह बहुत कम नारियों में पाया जाता है। सावित्री और राजीव के चरित्रों को लेखिका ने किस खूबी से बांधा है यह आप उपन्यास पढ़कर ही जान पायेंगे।

नारी मन की कोमल भावनाओं को अपने उपन्यासों में प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त आपकी प्रिय लेखिका 'चेतना' प्यार की एक अनूठी परिभाषा 'अनुराग' प्रस्तुत कर रही हैं। हमें विश्वास है उनकी यह रचना आपको एक लम्बी अवधि तक याद रहेगी।

अनुराग के बाद 'चेतना' का आगामी उपन्यास 'पूजा के फूल' शीघ्र प्रकाशित किया जायेगा। चेतना के उपन्यास केवल डायमण्ड पाकेट बुक्स में ही प्रकाशित होते हैं। उपन्यास पढ़कर लेखिका चेतना को निम्न पते पर अपनी राय लिखना न भूलें।

— प्रकाशक

चेतना
...२, बापू भाई वशी रोड
Rs. ...लि पारले वेस्ट,
...म्बई-४०००५६

अनुराग

राजीव की कार 'सावित्री सदन' के सामने पहुंचकर रुकी ता शाम के धुंधलके धरती पर उतर आए थे। सड़क के किनारे के लैम्प-पोस्टों पर लगे बल्वों की मद्धिम रोशनी धीरे-धीरे तेज़ होती जा रही थी। सड़क के दोनों ओर बनी हुई इमारतें काफी साफ-सुथरी और खूबसूरत थीं। हर इमारत के आगे छोटा-सा बगीचा था जिनमें रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियां बनी हुई थीं।

राजीव मन-ही-मन खुश हो उठा। डाक्टर मेहता ने सच ही कहा कि शहर का यह इलाका सबसे अधिक साफ-सुथरा और खूबसूरत इलाका है।

उसने 'सावित्री सदन' के गेट के पास पहुंचकर कार रोक दी। कार से उतरकर उसने कार लॉक की और गेट पार करके बिल्डिंग के मुख्य प्रवेश द्वार पर पहुंच गया। सामने एक छोटा-सा हाल था जिसके एक कोने में लिफ्ट थी और उसके साथ ही ज़ीना था।

वह लिफ्ट के सामने पहुंचकर रुक गया। लिफ्ट शायद ऊपर थी। वह हाल पर नज़र डालते हुए लिफ्ट की प्रतीक्षा करने लगा। लेकिन कई मिनट बीत गए लिफ्ट नीचे नहीं आई। उसने लिफ्ट का बटन दबाया लेकिन लिफ़्ट की बत्ती नहीं जली। वह एक लम्बी सांस लेकर सीढ़ियों की ओर बढ़ गया।

आज सारे दिन की दौड़-धूप ने उसे बुरी तरह थका दिया था। सुबह से उसने अपने कई परिचितों के घरों के चक्कर लगाए थे। लेकिन उसे हर जगह से एक ही उत्तर मिला था, "राजीव बाबू, इस शहर में नौकरी मिल जाना उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना महत्वपूर्ण सिर छिपाने के लिए एक छत का मिलना है।

शहर के कार्पोरेशन और प्रान्तीय सरकार हर साल हज़ारों क्वार्टर बनवाती है। अब तक लगभग पचास लाख क्वार्टर एलाट किए जा चुके हैं फिर भी लाखों लोग ऐसे हैं जो या तो झोंपड़ियों में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं या फुटपाथों पर खुले आसमान के नीचे। उन्हें इस शहर में रहते कई वर्ष हो चुके हैं लेकिन बेचारे सिर छिपाने के लिए एक छत नहीं जुटा पाए।"

मकान के सम्बन्ध में अपने मित्रों-परिचितों की यह बात सुन कर राजीव को लगा था कि जब तक हैड ऑफिस उसके लिए मकान की व्यवस्था नहीं कर देगा उसे उसी होटल में दिन बिताने पड़ेंगे जहां का न तो वातावरण ही उसे पसन्द है और न खाना। इसके अलावा हर महीने तनख्वाह का एक बड़ा हिस्सा तो होटल की गैलरी के एक कोने में ज़ीने के नीचे बने उस छोटे-से केबिन के किराए में ही चला जाएगा जिसे होटल का मालिक सिंगल रूम कहता है।

लेकिन डाक्टर भाटिया ने उसे आश्वासन ही नहीं पूरा-पूरा विश्वास दिलाया था कि उसे 'सावित्री सदन' में दो कमरों का एक छोटा-सा लेकिन खूबसूरत फ्लैट ज़रूर मिल जाएगा। डाक्टर भाटिया की बात सुनकर राजीव को हर्ष मिश्रित आश्चर्य हुआ था और वह डाक्टर भाटिया से मकान मालकिन के नाम पत्र लेकर सीधा 'सावित्री सदन' की ओर चल दिया था।

वह अभी आधी सीढ़ियां ही पार कर पाया था कि ऊपर से आते हुए शोर ने उसे चौंका दिया।

एक औरत चीख-चीखकर किसी औरत को गालियां दे रही थी और साथ ही किसी बच्चे को धमाधम पीटती भी जा रही थी। बच्चे के रोने और उस औरत की चीखती हुई गालियों ने शाम के शान्त वातावरण में अशान्ति भर दी थी।

राजीव का मन एक पल के लिए सहम गया। हो सकता है इस प्रकार की गाली-गलौज और लड़ाई-झगड़े इस बिल्डिंग में रोजाना ही होते हों। ऐसी स्थिति में वह यहां कैसे रह पाएगा।

वह कुछ देर सीढ़ियों पर खड़ा-खड़ा सोचता रहा और फिर कुछ सोचकर सीढ़ियां चढ़ने लगा।

सामने गैलरी में काफी भीड़ थी। एक स्त्री आठ-दस वर्ष के एक बच्चे का हाथ पकड़े उसे पीटते हुए कह रही थी, "हरामखोर, आज मैं तुझे जान से मार डालूंगी। ऐसी औलाद से तो बे-औलाद

ही अच्छी जो मां का कहना न माने। हज़ार वार मना कर चुकी हूं कि इस लड़की के साथ मत खेला कर जिसके बाप का पता नहीं लेकिन यह कमबख्त उसी के साथ खेलता है—मां की तरह से यह ज़रा-सी छोकरी भी अभी से मर्द जात को लुभाने के गुन सीख रही है।''

''ज़बान संभालकर बात करो कामिनी, खबरदार जो मेरी बच्ची के बारे में कुछ कहा। हलक में से ज़बान खींच लूंगी।'' सामने ही एक फ्लैट के दरवाज़े पर खड़ी एक युवती ने कहा जो एक रोती हुई बच्ची को गोद में लिए उसे चुप कराने की कोशिश करर ही थी।

राजीव धीरे-धीरे बढ़ता हुआ भीड़ के पास जा खड़ा हुआ। उसने उन दोनों स्त्रियों पर नज़र डाली। दोनों ही सम्भ्रान्त परिवार की पढ़ी-लिखी स्त्रियां दिखाई दे रही थीं। जो स्त्री लड़के को पीट रही थी उसके बदन पर नॉयलोन की नाइटी थी। होंठों पर गहरी लिपिस्टिक और गालों पर रूज की हलकी-सी परत थी। भौहें आई-ब्रो से बनी हुई थीं। उसके कटे हुए बाल उसके कन्धों पर झूल रहे थे। क्रोध ने उसके आकर्षण हीन चेहरे को कुरूप बना दिया था और दूसरी युवती जो रोती हुई बच्ची को गोद में लिए चुप कराने की कोशिश कर रही थी हैंडलूम की सफेद साड़ी और खादी का सफेद ब्लाउज़ पहने हुए थी। उसके चेहरे पर पाउडर तक भी नहीं था फिर भी उसके चेहरे का सौन्दर्य असामान्य था। उसकी आंखें बिना काजल के भी कजरारी थीं। चेहरे पर एक अद्भुत लालिमा और ताज़गी थी। उसके तराशे हुए होंटों ने उसके चेहरे के सौन्दर्य को और अधिक असामान्य बना दिया था। उसका बदन छरहरा, सुगठित और संतुलित था।

राजीव ठगा-ठगा-सा सौन्दर्य की उस सजीव प्रतिमा को देखता रह गया।

''तू तू मेरी ज़बान खींचेगी हरजाई, आवारा—न जाने किसका पाप लिए ।'' कहते-कहते कामिनी की आवाज़ फट गई और उसे क्रोध की अधिकता से जैसे दौरा-सा पड़ गया। वह पागलों की तरह दोनों हाथ फैलाकर उस युवती की ओर झपटी।

तभी एक भारी-भरकम स्त्री झपटकर उन दोनों के बीच में आ गई और उसने दोनों हाथ फैलाकर कामिनी को रोक लिया,

"यह क्या करती हैं कामिनी जी। आप अपने बेटे को संभालिए। उसे रोकिए कि वह अनु के साथ न खेला करे। आप बेकार ही गीता से आए दिन झगड़ती रहती हैं।"

और फिर उस भारी-भरकम महिला ने कामिनी को बांहों में भरकर इस तरह धकेलकर बाहर से दरवाज़े की चटकनी चढ़ा दी जैसे किसी पहलवान ने किसी मामूली आदमी को उठाकर अखाड़े से बाहर फैंक दिया हो।

"गीता, तुम भी अपने फ्लैट में जाओ। तुम दोनों के रोज़ाना झगड़े ने बिल्डिंग में रहने वालों का रहना दूभर कर दिया है," भारी-भरकम महिला ने कहा और फिर दोनों हाथों को झाड़ती हुई एक दुबले-पतले और नाटे कद के नौजवान से बोली, "चलो डार्लिंग, चाय ठंडी हो गई होगी।"

राजीव हक्का-बक्का-सा खड़ा देखता रहा और फिर अन्य लोगों के पीछे-पीछे गैलरी में आगे की ओर बढ़ने लगा।

गैलरी के छोर पर एक फ्लैट अलग-थलग बना हुआ था जिसके सामने रंग-बिरंगे फूलों के पौधों के गमले दीवार के सहारे-सहारे दूर तक रखे हुए थे। फ्लैट के सामने दीवार पर दरवाज़ों के पास ही एक दायरे में एक का अंक लिखा हुआ था।

राजीव ने दरवाज़े पर एक नज़र डाली और फिर कालबेल का बटन दबा दिया।

अन्दर घंटी की आवाज़ के साथ ही किसी स्त्री की आवाज़ सुनाई दी, "बसन्ती, देख तो दरवाज़े पर कौन है।"

हल्के कदमों की आवाज़ सुनाई दी और फिर दरवाज़ा खुल गया।

दरवाज़ा एक अल्हड़ किशोरी ने खोला था जो वेशभूषा से घर की नौकरानी दिखाई देती थी। उसका रंग सांवला था लेकिन नाक-नक्श बहुत ही तीखे थे। आंखें गहरी चमकदार और काली थीं जिनमें शोखी और शरारत झांक रही थी।

राजीव उस सांवले सलोने चेहरे को एक पल देखता रहा और फिर अपने आपको संभालकर बोला, "सावित्री जी हैं?"

"जी हां हैं?"

"उनसे कहो डाक्टर भाटिया का एक आदमी उनसे मिलने आया है," राजीव ने कहा।

किशोरी हिरणी जैसी कुलांचें भरती हुई अंदर चली गई और

दो पल के बाद उसी तरह कुलांचें भरती हुई लौट आई।

"आइए," उसने मुस्कराते हुए कहा और तेज़ी से अन्दर की ओर मुड़ गई।

अन्दर एक छोटा-सा ड्राइंग रूम था जिसमें एक महिला पहियों वाली कुर्सी पर बैठी कोई किताब पढ़ रही थी। राजीव के पैरों की आहट सुनकर उसने किताब बन्द करके गोद में रख ली और राजीव पर ऊपर से नीचे तक एक गहरी नज़र डालकर बोली, "बैठो बेटा।"

राजीव ने दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते की और फिर दीवार के सहारे पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया।

"तुम्हें डाक्टर भाटिया ने भेजा है?" उस महिला ने पूछा।

"जी हां," राजीव ने कहा और जेब में से एक लिफाफा निकालकर उस महिला की ओर बढ़ा दिया।

महिला ने लिफाफा खोलकर पत्र निकालकर पढ़ा और फिर राजीव के चेहरे को घूरकर देखने लगी।

राजीव को लगा जैसे उस स्त्री की आंखें उसके दिल की गहराइयों में उतरती चली जा रही हों।

"तो तुम्हें 'प्रभात इंटर प्राइजेज़' के ब्रांच ऑफिस में मैनेजर की पोस्ट मिल गई है," महिला ने राजीव को ऊपर से नीचे तक देखते हुए कहा। और फिर एक पल रुक कर बोलीं—"मेरा ख्याल है तुम्हारी शादी तो अभी नहीं हुई होगी?"

"आपका ख्याल बिल्कुल ठीक है," राजीव ने हल्की-सी झिझक के साथ कहा।

"वैसे तो बेटा, मैं कुंवारे नौजवानों को अपना किराएदार बनाना पसन्द नहीं करती। लेकिन क्योंकि डाक्टर भाटिया ने तुम्हारी सिफारिश की है। और मेरा अनुभव भी यही कहता है कि तुम किसी भले घराने के हो।– क्या यहां अकेले ही रहोगे या तुम्हारे साथ कोई और भी रहेगा?"

"जी अकेले ही रहना पड़ेगा। घर में सिर्फ मां हैं। वह घर छोड़कर यहां आ नहीं सकतीं। और वह यहां चली आईं तो गांव की ज़मीन-जायदाद की देखभाल कौन करेगा?" राजीव ने उत्तर दिया।

"खैर, मुझे कोई आपत्ति नहीं, लेकिन राजीव बेटे तुम्हें यहां रहते हुए कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना पड़ेगा?" महिला ने

कहा।

"फर्माइए," राजीव कुर्सी पर संभलकर बैठ गया।

"इस बिल्डिंग में देश के विभिन्न प्रान्तों, विभिन्न धर्मों और विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं। मैं इसे 'मिनी इंडिया' कहती हूं। मेरे जितने भी किराएदार हैं उनमें जितने भी मर्द हैं लगभग सभी भले हैं लेकिन कुछ औरतें ऐसी हैं जिनका खाना बिना लड़े हज्म ही नहीं होता। तुम भूलकर भी इन औरतों के झगड़ों में मत पड़ना।"

"ठीक है। मुझे किसी से क्या लेना-देना। और वैसे भी मुझे किसी से लड़ाई-झगड़ा करने या किसी के लड़ाई-झगड़े में हिस्सा लेना पसन्द नहीं है।" राजीव बोला।

"यह तो बहुत अच्छी बात है राजीव बेटा।" महिला ने कहा और फिर अन्दर के दरवाज़े की ओर मुंह उठाकर उन्होंने पुकार कर कहा, "बसन्ती, दस नम्बर फ्लैट की चाबी ले आओ।"

थोड़ी देर के बाद बसन्ती चाबी लेकर आ गई। सावित्री देवी ने चाबी बसन्ती से लेकर राजीव को देते हुए कहा, "लो बेटा, इस घर को अपना ही घर समझना किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो निस्संकोच चले आना।"

"सच पूछिए तो मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे मैं अपनी जिस मां को गांव में छोड़कर आया हूं वही आपके रूप में मुझे यहां मिल गई है। इस अनजाने शहर में अनजाने लोगों के बीच।" राजीव ने उठते हुए कहा। और फिर दोनों हाथ जोड़कर सावित्री देवी को प्रणाम करके दरवाज़े की ओर बढ़ गया।

कुछ देर के बाद राजीव होटल से अपना सामान उठाकर ले आया। थोड़ा-सा ही सामान था। उसने बिस्तर खोलकर पलंग पर बिछा दिया। सन्दूक से किताबें निकालकर एक अलमारी में सजा दीं।

गर्मी अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक थी। आकाश पर बादल छाए होने के कारण हवा बंद हो गई थी और बिजली भी चली गई थी। फ्लैट में एक पलंग, एक सोफा सेट के साथ एक सेन्ट्रल टेबुल और दो कुर्सियां तो थीं लेकिन पंखा नहीं था। इतने फर्नीचर की व्यवस्था सावित्री देवी ने हर फ्लैट में कर रखी थी। क्योंकि जब

भी कोई नया किराएदार आता था उसे शुरू-शुरू में फर्नीचर के बिना बहुत परेशानी होती थी इसलिए सावित्री देवी ने हर किराए-दार के लिए इतने फर्नीचर की व्यवस्था कर रखी थी। इस फर्नीचर का किराया फ्लैट के किराए के साथ ही ले लिया जाता था। और यह किराया इतना कम होता था कि किसी को अखरता ही नहीं था।

नहाने के बाद भी जब गर्मी से छुटकारा न मिला तो राजीव फ्लैट से निकलकर गलियारी के छोर पर बने हाल में आ खड़ा हुआ। इस हाल के एक ओर सड़क की साइड में रेलिंग थी। राजीव उसी रेलिंग के सहारे आ खड़ा हुआ। इस ओर से थोड़ी-थोड़ी हवा आ रही थी। उसे कुछ राहत महसूस होने लगी।

सहसा किसी दरवाजे पर हल्की-सी खटखटाने की आवाज सुनकर राजीव चौंक उठा। उसने अंधेरे से भरी गलियारी पर नजर डाली। हल्के अंधेरे में उसे एक साया गीता के फ्लैट के दरवाज़े पर खड़ा दिखाई दिया। वह उंगली की नोक से धीरे-धीरे दरवाजा खटखटा रहा था। उसके दरवाजा खटखटाने के अंदाज में राजीव को एक सांकेतिक ध्वनि सुनाई दी।

थोड़ी देर के बाद दरवाज़ा खुल गया और वह साया तेज़ी से गीता के फ्लैट के अन्दर चला गया।

राजीव भौचक्का-सा रह गया। तो क्या शाम को कामिनी जो कुछ कर रही थी सच था। क्या गीता वास्तव में वेश्या है? क्या वह वास्तव में कुंवारी मां है? और यदि वह इतनी चरित्रहीन है तो उसे मिसेज़ सावित्री ने अपनी बिल्डिंग में क्यों रख रखा है?

एक साथ कई प्रश्न राजीव के मस्तिष्क में कुलबुला उठे।

और फिर उसका फ्लैट तो गीता के फ्लैट के साथ वाला बराबर का ही फ्लैट था। उसके फ्लैट का नम्बर ग्यारह था और गीता के फ्लैट का नम्बर नौ था। गीता जवान है। सुन्दर है। सुन्दर ही नहीं असामान्य रूप से सुन्दर है। उसके सौन्दर्य में एक विचित्र-सा आकर्षण है। ऐसा आकर्षण जो सहज ही पुरुष को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। ऐसी दशा में गीता के पड़ोस में रहना राजीव को कुछ घबराहट-सी होने लगी।

लेकिन न जाने क्यों गीता की उन बड़ी-बड़ी नशीली आंखों में उसे ऐसा कुछ नहीं दिखाई दिया था जिससे उसके चरित्र पर किसी प्रकार का सन्देह किया जा सके। उसके चेहरे पर यौवन के

मादक आकर्षण के साथ-साथ बच्चे जैसा भोलापन भी था। एक अनोखा आत्म-विश्वास, दृढ़ता और संकल्प था।

राजीव मनोविज्ञान का विद्यार्थी रह चुका था। उसे लग रहा था जैसे वह जो कुछ देख रहा है उसका गीता के व्यक्तित्व से कोई सम्बन्ध नहीं है। लेकिन उसकी वह बच्ची जिसे कामिनी बिना बाप की बच्ची बता रही थी और फिर रात के अंधेरे में गीता के फ्लैट में किसी व्यक्ति का आना यह सब क्या है?

राजीव इन्हीं विचारों में डूबता-उतराता खड़ा था कि सहसा फिर गीता के फ्लैट का दरवाज़ा खुला और वह साया बाहर निकला। सहसा राजीव के मस्तिष्क को एक जोरदार धक्का लगा। जब उसने उस साए को दबे-पांव लेकिन बड़ी तेज़ी से कामिनी वाले फ्लैट में जाते हुए देखा।

वह सन्नाटे में खड़ा रह गया। तो क्या यह साया कामिनी का पति था? वह इतनी रात गए गीता के फ्लैट में क्यों गया था? क्या कामिनी जानती है कि उसका पति इस तरह चोरी-छिपे रात के अंधेरे में गीता से मिलने उसके फ्लैट में जाया करता है? और क्या इसीलिए वह गीता को चरित्रहीन कह रही थी।

उसके मस्तिष्क में एक-साथ अनेक प्रश्न जाग उठे। उसे लगा ये सब सोचते-सोचते उसका दिमाग फट जाएगा।

उसने अपने दोनों हाथों से सिर थाम लिया और अपने फ्लैट में आ गया।

वह अपने बिस्तर पर आकर लेट गया।

और फिर न जाने कब उसे नींद आ गई।

दूसरे दिन सुबह राजीव सोकर उठा तो वह रात की घटना भूल चुका था। वह उठकर नहाया और बाजार जाने की तैयारी करने लगा। उसे कल से अपना आफिस ज्वाइन करना था। इसलिए वह बाजार जाकर कुछ जरूरी सामान खरीद लाना चाहता था। रात पंखा न होने के कारण उसे बहुत परेशानी हुई थी। वह सबसे पहले कूलर और एक पंखा खरीदना चाहता था ताकि गर्मी से छुटकारा मिल जाए।

वह तैयार होकर अपने फ्लैट से निकला ही था कि उसे दौड़ते हुए कदमों की आवाज़ों के साथ-साथ ही चीखने-चिल्लाने की

आवाज़ें सुनाई दीं। राजीव ने चौंक कर देखा कुछ लोग गैलरी के सामने वाली रेलिंग की ओर चीखते हुए दौड़े चले जा रहे थे। राजीव ने जल्दी से गैलरी की ओर नज़र डाली और फिर उसका दिल जैसे उछलकर उसके हलक में आ गया। किसी बच्ची की फ्रॉक रेलिंग में लगी किसी कील में अटकी दिखाई दे रही थी और बच्ची रेलिंग से सड़क की ओर उलटी लटकी हुई थी। कील में अटकी हुई फ्रॉक धीरे-धीरे फटती चली जा रही थी और बस दो इंच फ्रॉक ही रह गई थी। उसके फटते ही बच्ची नीचे सड़क पर गिर सकती थी।

राजीव ने एक पल देखा और फिर वह बिजली जैसी तेज़ी से दौड़ता हुआ रेलिंग पर पहुंच गया। फ्रॉक का आखिरी किनारा फट चुका था और बच्ची तेज़ी से सड़क की ओर जा रही थी। राजीव ने जल्दी से रेलिंग पर झुककर नीचे गिरती हुई बच्ची की टांग पकड़ ली। इस तरह झुकने में उसका बैलेंस भी बिगड़ गया था। अगर उसका पांव रेलिंग के निचले हिस्से में न अटक जाता तो वह भी बच्ची के साथ-साथ सड़क पर जा गिरता।

उसने बड़ी कठिनाई से अपने आपको संभाला और बच्ची को संभाले हुए धम से रेलिंग के पास पड़ी बैंच पर बैठ गया। वह बुरी तरह हांफ रहा था। उसका सारा बदन पसीने से लथपथ हो गया था।

उसने बच्ची को कसकर अपने सीने से चिपटा लिया। बच्ची बेहोश थी, उसके कहीं चोट नहीं आई थी। वह केवल डर की वजह से बेहोश हो गई थी।

"मिसेज़ कामिनी, आपको अनु की ओर इस तरह नहीं दौड़ना चाहिए था अगर यह रेलिंग से नीचे गिर जाती तो क्या होता?" रवि खन्ना ने मिसेज़ कामिनी की ओर देखते हुए कहा जो हैरान-सी रेलिंग के पास खड़ी हांफ रही थीं।

"मैं— मैंने क्या किया?" मैंने क्या इस हरामजादी से यह कहा था कि तू रेलिंग से नीचे छलांग लगा दे।" कामिनी ने अपनी सांस ठीक करते हुए कहा।

"कुछ भी हो, आपको इतनी बुरी तरह उसे डांटना नहीं चाहिए था।" मिसेज़ सिन्हा बोली, "इसकी मां को पता चलेगा तो वह क्या कहेगी?"

"क्या कहेगी?" कामिनी गुस्से से बोली, "मैं क्या उससे

डरती हूं।"

तभी सीढ़ियों पर किसी के कदमों की आहट सुनाई दी और कामिनी कहते-कहते रुककर सीढ़ियों की ओर देखने लगी।

सीढ़ियों पर गीता आ रही थी जिसके हाथ में सब्ज़ी की टोकरी थी।

वह सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आई। उसने एक नज़र गैलरी के पास खड़े लोगों पर डाली और फिर अपने फ्लैट की ओर बढ़ने लगी। वह फ्लैट में रहने वालों से दूर रहना ही अच्छा समझती थी।

लेकिन जैसे ही वह अपने फ्लैट की ओर घूमी उसकी नज़र गैलरी के पास पड़ी बैंच पर बैठे हुए राजीव पर पड़ी जिसे घेरे हुए लोग खड़े थे। वह एक पल ठिठकी। उसने सोचा शायद राजीव के साथ कोई दुर्घटना हो गई है। उसने एक नज़र राजीव के चेहरे पर डाली और फिर अपने फ्लैट की ओर जाने लगी। और तभी उसकी नज़र राजीव की गोद में पड़ी अनु पर पड़ी। गीता के हाथ से सब्ज़ी की टोकरी छूटकर नीचे गिर गई। वह दौड़ी और भीड़ को चीरती हुई राजीव के पास पहुंच गई। उसने झपटकर अनु को उसकी गोद से ले लिया।

"क्या हुआ मेरी बच्ची को?" उसने लगभग चीखते हुए कहा।

"भगवान की बड़ी कृपा हुई बीबी जी, जो राजीव बाबू ने अपने आपको खतरे में डालकर अनु को पकड़ लिया। एक सैकिंड की भी देर हो जाती तो अनु नीचे सड़क पर जा गिरती," बसन्ती ने भीड़ में से निकलकर कहा।

गीता की आंखों से आंसू बहने लगे। उसने अनु को अपनी छाती से चिपटा लिया और तेज़ी से सीढ़ियों की ओर बढ़ गई।

अनु अभी तक बेहोश थी।

कुछ देर बाद राजीव ने अपने आपको संभाला। जेब में से रूमाल निकालकर माथे पर छलकती हुई पसीने की बूंदें पोंछीं और फिर एक लम्बी सांस लेकर संभलकर बैठ गया। एक-एक करके सब लोग अपने-अपने फ्लैट में जा चुके थे। केवल वहां बसन्ती रह गई थी जो गैलरी में बिखरी हुई सब्ज़ी समेटकर टोकरी में भर

रही थी।

राजीव कुछ देर यूं ही गुम-सुम बैठा रहा और फिर उठकर अपने फ्लैट की ओर चल दिया।

उसने अन्दर जाकर हाथ-मुंह धोए। कपड़े बदले और फिर फ्लैट में ताला लगाकर सीढ़ियों की ओर बढ़ गया।

उसकी आंखों में अनु का बेहोश मासूम चेहरा घूम रहा था।

दो

राजीव ने बिल्डिंग के नीचे कार रोकी और कार में बैठे-बैठे सिगरेट सुलगाया और सिगरेट-होल्डर दांतों में दबाकर नीचे उतर आया। लिफ्ट के पास लगे बोर्ड पर उसने नज़र डाली। 'प्रभात इंटर प्राइजेज़' का दफ्तर तीसरे फ्लोर पर था। लिफ्ट नीचे नहीं थी। वह लिफ्ट के नीचे आने का इन्तज़ार करने लगा।

उसने सिगरेट के कश लेते हुए घड़ी पर नज़र डाली। आठ बजने में दस मिनट रह गए थे।

उसने घंटी का बटन दबाया और केन्टीन की ओर देखने लगा। काउन्टर पर कुछ लोग खड़े गप्पें लड़ा रहे थे। साथ-साथ चाय और सिगरेट भी पीते जा रहे थे। उनमें एक ऐसा नौजवान भी था जिसके कहकहे औरों के कहकहों से ज्यादा ऊंचे थे। शक्ल-सूरत भी अच्छी-खासी थी। लेकिन उसने जो कपड़े पहन रखे थे। बिल्कुल बेमेल थे। लगता था उसने कई दिन से शेव नहीं बनाई थी। बाल भी ढंग से संवरे हुए नहीं थे।

तभी लिफ्ट नीचे आ गई। उसने सिगरेट नीचे गिराकर जूते से मसल दी और लिफ्ट में चला गया।

तीसरी मंज़िल पर 'प्रभात एंटर प्राइजेज़' का ऑफिस ढूंढ़ने में उसे अधिक परेशानी नहीं हुई। दफ्तर के दरवाज़े पर बैठा चपरासी बीड़ी फूंक रहा था। राजीव दरवाज़े के पास पहुंच गया। चपरासी ने उस पर एक उचटती-सी नज़र डाली और जब वह

अन्दर जाने लगा तो चपरासी ने बैठे-बैठे ही हाथ बढ़ाकर ही उसे रोकते हुए कहा

"ऐ साहब, किससे मिलना है आपको ?"

"मैनेजर साहब से ।"

"मैनेजर साहब अभी नहीं आए ।"

"आठ बजने में एक मिनट बाकी रह गया है। कोई और तो आया होगा ?"

"अजी साहब, अभी एक मिनट तो बाकी है ।"

"असिस्टेंट मैनेजर भी नहीं आए ?"

"जी नहीं साहब। कह तो दिया कि अभी कोई नहीं आया। आए होंगे तो नीचे चाय पी रहे होंगे ।"

"क्या रोज़ाना ये लोग इसी तरह रुककर चाय पीते हैं ?"

"पीते होंगे साहब, हमें क्या मालूम ?"

राजीव ने घड़ी देखी। ठीक आठ बज रहे थे।

उसने चपरासी का हाथ बीच में से हटाते हुए कहा "ठीक है। असिस्टेंट मैनेजर साहब आयें तो उनसे कहना कि नए मैनेजर ने सलाम बोला है।"

चपरासी भाड़-सा मुंह फाड़कर खड़ा हो गया बौखलाहट में सलाम के लिए उसका हाथ भी न उठ सका।

राजीव ऑफिस के हाल में पहुंचा। चारों ओर मेजें इधर-उधर पड़ी थीं। फर्श पर जगह-जगह कागज़ बिखरे हुए थे। वह उन सब पर गहरी नज़र डालते हुए उस केबिन की ओर बढ़ने लगा। जिसके दरवाज़े पर एक प्लेट लगी थी। जिस पर लिखा था—'मैनेज़र।'

राजीव ने खुद ही दरवाज़ा खोला और अन्दर चला गया। मेज़ और कुर्सी पर धूल की हल्की-सी तह जमी हुई थी। उसने मेज़ पर रखी घंटी पर हाथ मारा चपरासी भागता हुआ अन्दर आ गया, "हां, हुज़ूर ?"

"ऑफिस बुआय भी नहीं आया अभी तक ?" राजीव ने पूछा।

"ज—ज—जी नहीं साहब।"

"उसे तो ऑफिस खुलने से कम-से-कम पन्द्रह मिनट पहले आना चाहिये ताकि ऑफिस की सफाई कर दे। क्या सभी लोग देर से आते हैं ?"

"ज—ज—जी साहब !"

"पिछले मैनेजर साहब ने उनसे कभी कुछ नहीं कहा ?"

"तब तो साहब सब लोग उनसे पहले ही आ जाते थे।"

"अच्छा, तुम ज़रा ऑफिस की सफाई कर दो।"

राजीव बाहर आकर हाल में खड़ा हो गया। वह सोच रहा था कि पिछले मैनेजर ने यहां कितनी अव्यवस्था फैला दी है। जिस ऑफिस का मैनेजर ही लेट आएगा उसके स्टाफ को अपने आप लेट आने का बहाना मिल जाएगा।

पन्द्रह मिनट में चपरासी ने मैनेजर के ऑफिस की सफाई कर दी। पंखा चला दिया और बाहर निकल आया।

राजीव अन्दर चला गया।

पुराना मैनेजर हाल ही में नौकरी छोड़कर चला गया था और आज राजीव को असिस्टेंट मैनेजर का कार्य लेना था। और वह सोच रहा था कि इन लोगों के साथ किस तरह निर्वाह होगा।

लगभग साढ़े आठ बजे ऑफिस के बाहर ऊंचे-लम्बे कहकहों की गूंज सुनाई दी, लेकिन फौरन ही उन कहकहों के ब्रेक लग गए। और फिर ऑफिस में दबे-दबे कदमों की आहटें गूंजती रहीं।

लगभग तीन मिनट के बाद दरवाज़े के पास एक आवाज़ सुनाई दी।

"क्या मैं अन्दर आ सकता हूं जनाब !"

"यस !" राजीव ने उत्तर दिया।

दरवाज़ा खुला। राजीव ठंडी सांस भरकर रह गया।

यह वही आदमी था जिसे उसने नीचे केन्टीन में चाय पीते देखा था। जिसके कपड़े न तो उसके व्यक्तित्व से मेल खाते थे न आपस में ही एक-दूसरे से मेल खाते थे।

उसने अन्दर आकर बड़े अदब से कहा—"सेवक, असिस्टेंट मैनेजर है।"

"तशरीफ रखिये।" राजीव ने हल्की-सी मुस्कराहट के साथ कहा।

"मुझे अफसोस है। ऑफिस आने में आज कुछ देर हो गई।" आसिस्टेंट मैनेजर ने क्षमा-याचना-भरे स्वर में कहा।

राजीव उसकी बात का कोई उत्तर न देकर ऑफिस के काम-काज के बारे में बातें करने लगा।

दोपहर तक राजीव ऑफिस का चार्ज लेने में व्यस्त रहा। इस

अन्दर जाने लगा तो चपरासी ने बैठे-बैठे ही हाथ बढ़ाकर ही उसे रोकते हुए कहा

"ऐ साहब, किससे मिलना है आपको ?"

"मैनेजर साहब से।"

"मैनेजर साहब अभी नहीं आए।"

"आठ बजने में एक मिनट बाकी रह गया है। कोई और तो आया होगा ?"

"अजी साहब, अभी एक मिनट तो बाकी है।"

"असिस्टेंट मैनेजर भी नहीं आए ?"

"जी नहीं साहब। कह तो दिया कि अभी कोई नहीं आया। आए होंगे तो नीचे चाय पी रहे होंगे।"

"क्या रोज़ाना ये लोग इसी तरह रुककर चाय पीते हैं ?"

"पीते होंगे साहब, हमें क्या मालूम ?"

राजीव ने घड़ी देखी। ठीक आठ बज रहे थे।

उसने चपरासी का हाथ बीच में से हटाते हुए कहा – "ठीक है। असिस्टेंट मैनेजर साहब आयें तो उनसे कहना कि नए मैनेजर ने सलाम बोला है।"

चपरासी भाड़-सा मुंह फाड़कर खड़ा हो गया बौखलाहट में सलाम के लिए उसका हाथ भी न उठ सका।

राजीव ऑफिस के हाल में पहुंचा। चारों ओर मेज़ें इधर-उधर पड़ी थीं। फर्श पर जगह-जगह कागज़ बिखरे हुए थे। वह उन सब पर गहरी नज़र डालते हुए उस केबिन की ओर बढ़ने लगा। जिसके दरवाज़े पर एक प्लेट लगी थी। जिस पर लिखा था—'मैनेज़र।'

राजीव ने खुद ही दरवाज़ा खोला और अन्दर चला गया। मेज और कुर्सी पर धूल की हल्की-सी तह जमी हुई थी। उसने मेज पर रखी घंटी पर हाथ मारा चपरासी भागता हुआ अन्दर आ गया, "हां, हुज़ूर ?"

"ऑफिस बुआय भी नहीं आया अभी तक ?" राजीव ने पूछा।

"ज–ज–जी नहीं साहब।"

"उसे तो ऑफिस खुलने से कम-से-कम पन्द्रह मिनट पहले आना चाहिये ताकि ऑफिस की सफाई कर दे। क्या सभी लोग देर से आते हैं ?"

"ज—ज—जी साहब !"

"पिछले मैनेजर साहब ने उनसे कभी कुछ नहीं कहा ?"

"तब तो साहब सब लोग उनसे पहले ही आ जाते थे।"

"अच्छा, तुम ज़रा ऑफिस की सफाई कर दो।"

राजीव बाहर आकर हाल में खड़ा हो गया। वह सोच रहा था कि पिछले मैनेजर ने यहां कितनी अव्यवस्था फैला दी है। जिस ऑफिस का मैनेजर ही लेट आएगा उसके स्टाफ को अपने आप लेट आने का बहाना मिल जाएगा।

पन्द्रह मिनट में चपरासी ने मैनेजर के ऑफिस की सफाई कर दी। पंखा चला दिया और बाहर निकल आया।

राजीव अन्दर चला गया।

पुराना मैनेजर हाल ही में नौकरी छोड़कर चला गया था और आज राजीव को असिस्टेंट मैनेजर का कार्य लेना था। और वह सोच रहा था कि इन लोगों के साथ किस तरह निर्वाह होगा।

लगभग साढ़े आठ बज़े ऑफिस के बाहर ऊंचे-लम्बे कहकहों की गूंज सुनाई दी, लेकिन फौरन ही उन कहकहों के ब्रेक लग गए। और फिर ऑफिस में दबे-दबे कदमों की आहटें गूंजती रहीं।

लगभग तीन मिनट के बाद दरवाज़े के पास एक आवाज़ सुनाई दी।

"क्या मैं अन्दर आ सकता हूं जनाब !"

"यस !" राजीव ने उत्तर दिया।

दरवाज़ा खुला। राजीव ठंडी सांस भरकर रह गया।

यह वही आदमी था जिसे उसने नीचे केन्टीन में चाय पीते देखा था। जिसके कपड़े न तो उसके व्यक्तित्व से मेल खाते थे न आपस में ही एक-दूसरे से मेल खाते थे।

उसने अन्दर आकर बड़े अदब से कहा—"सेवक, असिस्टेंट मैनेजर है।"

"तशरीफ रखिये।" राजीव ने हल्की-सी मुस्कराहट के साथ कहा।

"मुझे अफसोस है। ऑफिस आने में आज कुछ देर हो गई।" आसिस्टेंट मैनेजर ने क्षमा-याचना-भरे स्वर में कहा।

राजीव उसकी बात का कोई उत्तर न देकर ऑफिस के कामकाज के बारे में बातें करने लगा।

दोपहर तक राजीव ऑफिस का चार्ज लेने में व्यस्त रहा। इस

बीच असिस्टेंट मैनेजर ने बड़ी तत्परता और परिश्रम का प्रदर्शन किया।

इस समय उसके चेहरे से यही प्रकट हो रहा था कि वह बहुत ही मेहनती नौजवान है। लंच के समय भी वह काम में ही लगा रहा। लेकिन राजीव ने कहा।

"मिस्टर—।"

"जी मुझे प्रदीप कहते हैं।"

"मिस्टर प्रदीप लंच टाइम हो गया।"

और यह कहते हुए स्वयं राजीव भी उठ गया। प्रदीप को भी काम छोड़ देना पड़ा। लंच टाइम के बाद ठीक एक बजे राजीव अपने केबिन में पहुंच गया। लेकिन प्रदीप उसके पास सवा बजे पहुंचा और स्टाफ के अन्य कर्मचारी डेढ़ बजे पहुंचे। राजीव ने उस दिन तो उन लोगों से कुछ नहीं कहा। चार्ज लेने के बाद फाइलों पर दस्तखत किए। कुछ फाइलें तो हफ्तों से केवल दस्तखतों के लिए ही पड़ी थीं। राजीव ने चार बजे तक उन सबको निबटा दिया। कुछ पत्रों के उत्तर दिये जाने थे। उत्तर डिक्टेड कराने के लिए उसने प्रदीप से कहा कि वह स्टेनों को भेज दे।

कुछ मिनट के बाद दरवाज़े के पास एक स्त्री की आवाज़ सुनाई दी—

"मैं अन्दर आ सकती हूं ?"

"यस, कम इन।" राजीव ने फाइलों पर नज़रें झुकाए हुए कहा।

कपड़ों की सरसराहट मेज़ के पास आकर रुक गई। राजीव ने नज़रें उठाईं। वह हैरान रह गया। उसके सामने गीता खड़ी थी।

गीता भी उसे हल्के आश्चर्य से देख रही थी। लेकिन राजीव ने अधिक आश्चर्य प्रकट नहीं किया। उसने अपने विशिष्ट, नर्म और शान्त लहजे में कहा—

"बैठिए।"

गीता बैठ गई। उसके हाथ में कापी और टिप पैंसिल थी। राजीव ने उसके चेहरे पर एक गहरी नज़र डाली और उसकी आंखों के आगे रात का दृश्य घूम गया। जब उसने आधी रात को गीता के एक पड़ोसी को उसके फ्लैट में जाते देखा था।

लेकिन राजीव ने वह विचार मस्तिष्क से झटक दिया और गीता को पत्रों के उत्तर डिक्टेड कराने लगा। उसने देखा गीता

बड़ी कुशलता और बड़ी शान्ति से अपना काम कर रही थी उसके चेहरे पर न तो घबराहट थी और न परेशानी का ही कोई चिन्ह था। उसमें आत्मविश्वास की झलक थी।

अपना काम करके गीता चली गई।

ठीक पांच बजे राजीव ने ऑफिस छोड़ दिया। बाहर निकला तो सारा स्टाफ उठकर खड़ा हो गया। उसने अपने केबिन के बराबर वाले केबिन पर नजर डाली। यह उसके असिस्टेंट प्रदीप का केबिन था और स्टैनो टाइपिस्ट की टेबुल भी उसी केबिन में थी।

सामने ही मेज पर प्रदीप बैठा था। लेकिन उसने अपना सिर मेज पर टिका रखा था और गुमसुम बैठा था।

एक पल के लिए राजीव ठिठका उसी पल प्रदीप ने अपना सिर उठाया राजीव ने देखा उसकी आंखें गहरी सुर्ख थीं जैसे वह देर तक रोता रहा हो। उनमें गहरी चिन्ता झलक रही थी।

राजीव ऑफिस से बाहर निकल गया।

थोड़ी देर बाद वह नीचे कैन्टीन में बैठा तीसरे पहर की चाय पी रहा था। उसने प्रदीप को कैन्टीन के सामने से गुजरते हुए देखा वह बहुत तेजी से जा रहा था। जैसे उसे कोई बहुत ही जरूरी काम हो। और उसके चेहरे पर ऐसा भय और आशंका थी जैसे उसकी कोई बहुत ही प्यारी चीज़ खोने वाली थी।

राजीव इत्मीनान से चाय पीता रहा।

फिर उसने गीता को उधर से जाते हुए देखा। उसकी आखों के आगे फिर वही रात वाला दृश्य घूम गया। उसके साथ ही गीता की बेटी अनु का चेहरा भी उसकी आंखों के आगे नाच उठा। जिसके बारे में उसने बिल्डिग में रहने वालों से सुना था कि वह गीता की अवैध औलाद है। लेकिन गीता के चेहरे को देखकर ऐसा लगता था जैसे उसका इस बात से कोई सम्बन्ध ही नहीं है कि अनु उसकी अवैध सन्तान है।

थोड़ी देर बाद वह कैन्टीन का बिल चुकाकर सिगरेट के कश लेता हुआ बाहर निकला और फिर उसकी कार सड़क पर दौड़ने लगी।

मोड़ पर पहुंचकर उसने बस-स्टाप पर एक लम्बे क्यू में गीता को खड़े देखा। गीता बड़ी बेचैनी से बार-बार कलाई की घड़ी देख

रही थी। राजीव की कार पास से गुजरी तो गीता ने चौंककर देखा। एक पल के लिए राजीव ने सोचा कि गीता को लिफ्ट दे दे। उसने कार की स्पीड भी धीमी कर दी। लेकिन दूसरे ही पल गीता ने मुंह फेर लिया और उस बस की ओर देखने लगी जो बस-स्टाप की ओर आ रही थी।

राजीव ने होंठों के कोने से धुआं छोड़ते हुए कार की स्पीड बढ़ा दी।

दूसरे मोड़ पर मुड़ते ही उसने एक केमिस्ट की दूकान से अपने ऑफिस के हेड-क्लर्क गुप्ता जी को निकलते देखा। गुप्ता जी की उम्र पचास के लगभग थी। दुबले-पतले थे। ढीली-ढाली पतलून पहने हुए थे जो चलते हुए बार-बार नीचे खिसक जाती थी। और उन्हें बार-बार उसे ऊपर सरकाना पड़ता था।

गुप्ता जी केमिस्ट की दूकान से बड़ी तेज़ी से निकले थे और बदहवासी में बड़ी तेज़ी से चले जा रहे थे। तेज़ चलने के कारण उनका पूरा बदन हिल रहा था। राजीव की कार उनके पास से गुज़री तो वह ज़ोर से बिदककर फुटपाथ पर जा गिरे। उन्होंने दो कलाबाज़ियां खाईं लेकिन उन्होंने हाथ में पकड़ी दवा की शीशी को नीचे नहीं गिरने दिया।

राज़ीव कार रोककर तेज़ी से नीचे उतर आया।

उसने गुप्ता जी के कन्धे पकड़कर उन्हें उठाने की कोशिश की लेकिन वह इस तरह कांप रहे थे जैसे उनकी टांगों में दम ही न रहा हो। साथ ही वह बड़बड़ाते जा रहे थे।

"अरे मार डाला रे-मेरे तो घुटने ही तोड़कर रख दिए।"

राजीव ने बड़ी मुश्किल से उन्हें सीधा खड़ा किया और उनके कपड़े झाड़ने लगा।

गुप्ता जी कराहते हुए कह रहे थे—

"अरे, अब धूल क्या झाड़ते हो। धूल झाड़कर अपनी इंसानियत का सबूत दे रहे हो? तुम्हें क्या मालूम, मेरी घरवाली बिना दवा के तड़प रही होगी। मेरे तो तुमने घुटने ही तोड़कर रख दिए—हाय राम अब घर कैसे पहुंचूंगा।"

"घबराइए नहीं। मैं आपको बस-स्टाप तक पहुंचाए देता हूं।"

"बस-स्टाप?—अरे मैं गरीब आदमी चालीस पैसे बस में कहां से दूंगा—चालीस पैसे की दाल पकेगी तो मेरे बच्चे एक वक्त

पेट भर लेंगे।"
"अच्छा चलिए, मेरी कार में चलिए। आपको घर तक छोड़
दूंगा।"
"भगवान तुम्हारा भला करे बेटा।"
गुप्ता जी ने कुहनियों को सहलाने के बाद नाक की नोक पर
फिसली हुई ऐनक ठीक की और फिर जैसे ही उनकी नज़र राजीव
के चेहरे पर पड़ी वह एकदम उछल पड़े।
"म—म मैनेजर साहब।" उन्होंने फौरन अटेन्शन होकर
सलाम किया और बोले, "मा—माफ कीजिएगा मैनेजर साहब—
म—म माफ कीजिएगा।—ग—ग गलती से गिर गया था मैं।"
राजीव ने उन्हें कार में बैठा लिया और कार दौड़ने लगी।

फिर तेज़ी
प्रदीप ने स्कूटर रोककर स्टैन्ड से लगा दिया और
से छलांगें लगाता हुआ सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। अपने फ्लैट के
सामने पहुंचकर उसने जल्दी से दरवाज़े पर दस्तक दी।
लेकिन जैसे ही दरवाज़ा खुला अपने सामने खड़ी बूढ़ी औरत
को देखकर वह ठिठक गया। उसके हाथ राख में लिथड़े हुए थे।
प्रदीप के चेहरे पर दुःख की रेखाएं उभर आईं। उसने धीरे
से पूछा- "सुखिया, रीता कहां है?"
"बहूरानी तो चली गईं।" सुखिया ने दरवाज़े के सामने से
हटते हुए कहा। प्रदीप की आंखों में चिन्ता की लहरें और भी
गहरी हो गईं। वह थके-थके कदमों से अन्दर चला गया।
सुखिया ने पूछा—
"चाय बना लाऊं?"
"नहीं," प्रदीप ने कहा, "रीता कितने बजे गई थी?"
"पांच बजे जिस समय हमेशा जाती हैं।"
"आज कोई खास बात बताकर गई हैं?"
सुखिया के होंठों पर स्नेह और सहानुभूति भरी मुस्कराहट
नाच उठी। उसने कहा—
"बेटा तुम हर हफ्ते यही बात पूछते हो कि वह कोई खास
बात तो कर नहीं गई हालांकि तुम जानते हो कि वह बस इतना
ही कहकर जाती है कि वह अपनी सहेली से मिलने जा रही है।"
प्रदीप चुपचाप बैठा रहा।

सुखिया कुछ रुककर बोली—

"पूरे पांच वर्ष हो गए हैं इस नाटक को देखते हुए। बहूरानी हर शनिवार की शाम को घर से कहीं चली जाती हैं। मैं उनसे पूछने की कोशिश करती हूं तो मुझे यह कहकर डांट देती हैं कि मैं सिर्फ नौकरानी हूं, अपने काम से काम रखूं। इसलिए मैंने पूछना ही छोड़ दिया। तुम्हें बहूरानी के प्यार ने पागल बना रखा है। तुम्हारा गुस्सा बस,तभी तक रहता है जब तक वह वापस नहीं आ जातीं। और जब वह वापस आ जाती हैं और दो आंसू बहाकर और भगवान् की सौगन्ध खाकर अपने प्यार का विश्वास दिलाती हैं तो तुम पिघल जाते हो। पिछले पांच वर्ष से मैं यही देख रही हूं और सोच रही हूं कि ऐसा आखिर कब तक चलता रहेगा? और अगर ऐसा होता ही रहा तो तुम्हारा भविष्य क्या होगा? कब तक तुम ये सब बर्दाश्त करते रहोगे?"

प्रदीप कुछ न बोला। सुखिया ठंडी सांस भरकर किचन में चली गई और बर्तन धोने लगी। प्रदीप ने सिगरेट सुलगाया और गहरे कश लेता हुआ टहलता रहा। उसके चेहरे पर गहरी चिन्ता थी आंखों में दुःख और क्रोध की झलक थी।

वह सिगरेट के कश लेता हुआ टहलता रहा। नौ बजे के लगभग सुखिया ने उससे खाने के लिए पूछा। लेकिन उसने इंकार कर दिया। सुखिया ने बताया कि खाना कहां रखा है। और फिर एक ठंडी सांस भरती हुई चल दी।

प्रदीप ने सिगरेट का पहला पैकेट खाली किया और फिर दूसरा भी खाली कर दिया।

उसने नई सिगरेट सुलगाकर पहला कश लिया ही था कि उसे दरवाज़े में रीता खड़ी दिखाई दी। प्रदीप ने उसकी ओर देखा और धीरे से सिगरेट जमीन पर डालकर जूते की नोंक से मसल दी। और फिर पतलून की जेब में दोनों हाथ डालकर उसे घूर कर देखने लगा।

रीता ने एक-दो बार उसकी आंखों से आंखें मिलाईं और फिर साड़ी का आंचल अपनी उंगलियों पर लपेटने लगी।

प्रदीप बड़े ध्यान से उसका चेहरा देखता रहा। रीता जो उसकी पत्नी थी। जिसे वह एक प्रेमिका की तरह प्यार करता था उसने अपने जीवन में अगर किसी को सबसे अधिक चाहा था तो वह रीता थी। और रीता हर शनिवार को किसी अज्ञात स्थान

पर जाती थी और रात गए लौटती थी।

रीता ने पलकें उठाईं। उसकी आंखें भीगी हुई थीं। उसके होंठ धीरे से कांपे और फिर भर्राई आवाज़ में उसने कहा —

"आ —आ —आज फिर मुझ पर संदेह कर रहे हैं।"

प्रदीप के होंठों पर एक विचित्र-सी मुस्कराहट रेंग गई। यह मुस्कराहट उसके मानसिक संघर्ष के लिए एक पर्दा थी। इस मानसिक संघर्ष का उसे हर सप्ताह सामना करना पड़ता था। रीता हर सप्ताह इसी तरह कहीं जाती थी और रात गए लौटती थी। उसकी इस अनुप्रस्थिति के सम्बन्ध में उसके मन में अनेक संदेह जाग उठते थे। लेकिन रीता को देखते ही उसके मन में फिर वही प्यार उमड़ आता था। थोड़ी देर तक संदेहों और विश्वास के बीच संघर्ष चलता रहता था। लेकिन रीता का प्यार उन संदेहों पर विजय पा जाता था। उसे रीता से बेहद प्यार था। वह जब रीता के चेहरे पर दुःख की परछाईं और आंखों में आंसुओं की नमी देखता तो उसका दिल तड़प उठता था और वह सब कुछ भूल जाता था।

उस समय भी कुछ देर तक वह उसी मानसिक संघर्ष में उलझता रहा। लेकिन रीता के आंसुओं ने सुलगती हुई संदेहों की आग को बुझा दिया।

"तुम जानती हो कि जब तक तुम थाली नहीं परोसतीं मेरा पेट नहीं भरता। फिर भी तुम इतनी देर लगा दिया करती हो।"

रीता ने इत्मीनान की सांस ली और उसके होंठों पर एक ऐसी मुस्कराहट रेंगने लगी जिसमें इत्मीनान झलक रहा था।

वह साड़ी का पल्लू ठीक करतीं हुई किचन की ओर चली गई।

जब वह किचन की ओर जा रही थी। प्रदीप उसे बड़े ध्यान से देख रहा था। वह कुशल इंजीनियर की तरह जो किसी शान-दार इमारत के किसी भाग में कोई ऐसी खराबी, ऐसी कमी तलाश करने की कोशिश कर रहा हो जिसके आधार पर इस इमारत को नष्ट किया जा सके।

थोड़ी देर बाद वह किचन में बैठा खाना खा रहा था। और रीता पंखा झल रही थी।

प्रदीप सोच रहा था 'ऐसी घरेलू, ऐसी सेवा करने वाली पत्नी पर किसी प्रकार का संदेह कैसे किया जा सकता है।'

तीन

राजीव ने हॉर्न बजाया और वह बच्ची भागकर फुटपाथ पर चढ़ गई।

राजीव ने उसे फौरन पहेचान लिया। वह अनु थी। उसके बदन पर स्कूल की यूनीफार्म थी। छोटा-सा बस्ता कंधे पर लटका हुआ था। वह नन्हे-नन्हे क़दम उठाती हुई और बड़ी मासूमियत से इधर-उधर देखती हुई चली जा रही थी।

राजीव ने अनु के बिल्कुल पास पहुंचकर कार रोक दी।

"अरे अनु, तुम स्कूल पैदल जा रही हो?"

"देर हो गई - बस निकल गई।" अनु ने सहमे हुए लहजे में कहा।

"आओ, हम तुम्हें स्कूल पहुंचा देंगे।"

राजीव ने कार की खिड़की खोली।

"नहीं। मम्मी नाराज़ होंगी।"

"क्यों नाराज़ होगी मम्मी?"

"मम्मी कहती हैं किसी पड़ोसी से मत बोला करो।"

"क्यों?"

"हमें कोई प्यार नहीं करता ना! सब गुस्से से बात करते हैं।"

"हम तो गुस्से से बात नहीं कर रहे – आओ, बैठ जाओ हम तुम्हें स्कूल पहुंचा देंगे।"

अनु कुछ देर तक राजीव को बड़े ध्यान से देखती रही जैसे यह जानने की कोशिश कर रही हो कि राजीव सचमुच प्यार से बात कर रहा है या केवल बहाना बना रहा है। जब उसे विश्वास हो गया तो वह अपनी मासूम-सी चाल से आगे बढ़ी। राजीव ने उसके माथे को उठाकर चूमा और फिर अपने बराबर बैठा लिया।

एक चौराहे पर लालबत्ती दिखाई दे रही थी राजीव ने कार

रोक दी। ठीक उसी समय एक डबल डैकर बस कार के पास आकर रुकी। अनु ने बस की ओर देखा। उसी समय चौराहे की बत्ती हरी हो गई। राजीव ने कार स्टार्ट कर दी। तभी अनु की नज़र डबल डैकर बस की एक ऊपरी खिड़की पर पड़ी। उसने चौंककर पुकारा —

"मम्मी —?"

राजीव ने उधर देखा। गीता आश्चर्य से झांक रही थी।

राजीव ने कार बायीं ओर मोड़ दी क्योंकि इस सामने वाली सड़क पर अनु का स्कूल था।

राजीव ऑफिस में पहुंचा तो केवल हैड-क्लर्क गुप्ता जी ही अपनी मेज़ पर बैठे काम कर रहे थे। बाकी सारी मेजें खाली पड़ी थीं।

वह हल्की-सी सांस लेकर आगे बढ़ा तो उसे असिस्टेंट मैनेजर के केबिन में टाइपराइटर की आवाज़ सुनाई दी। उसने अन्दर नज़र डाली। गीता अपनी सीट पर बैठी टाइप कर रही थी।

अपनी सीट पर पहुंचते ही राजीव ने घंटी पर हाथ मारा।

दूसरे ही पल दरवाज़ा खुला और गुप्ता जी ने झांककर कहा — "यस सर।"

"ऑफिस बुआॅय अभी तक नहीं आया ?"

"नो सर।"

"हुं।"

राजीव ने लम्बी सांस ली और बोला—

"गीता देवी को बुलाइए।"

गुप्ता जी वापस चले गए।

कुछ देर बाद गीता अन्दर आई। राजीव ने खड़े-खड़े ही कहा —"लिखिए।"

गीता ने हल्के आश्चर्य से राजीव की ओर देखा और फिर एक कोने से झाड़न उठाकर उसकी कुर्सी की ओर बढ़ने लगी।

राजीव ने उसे रुकने का इशारा करते हुए कहा—"ठहरिये गीता देवी, यह काम आपका नहीं ऑफिस बुआॅय का है।"

ठीक उसी समय ऑफिस बुआॅय हांफता हुआ वहां पहुंच गया और फिर उसने घबराये हुए लहज़े में अन्दर आने की इजाजत

मांगी। और गीता के हाथ से झाड़न लेकर जल्दी-जल्दी मेज़ साफ़ करने लगा।

राजीव ने कुर्सी पर बैठते हुए गीता से कहा—"बैठिए।"

राजीव ने डिक्टेशन देने के बाद कहा—

"इसकी एक-एक कापी हर मेज़ पर पहुंचा दी जाए।"

गीता ने कापी बंद की और उठकर चली गई।

लगभग एक घंटे बाद नोटिस की एक-एक कापी हर मेज पर रखी थी। हर आदमी ने उस सर्कुलर को पढ़ा और आंखों-ही-आंखों में इशारे किए। उन लोगों के तेवर अच्छे नहीं दिखाई दे रहे थे।

ऑफिस के सबसे पुराने क्लर्क रामलाल ने बड़ी लापरवाही से गर्दन झटकी और सर्कुलर फाड़कर रद्दी की टोकरी में फेंक दिया। उसकी आंखों से विद्रोह, उद्दंडता और उपेक्षा झलक रही थी।

कुछ देर बाद प्रदीप सर्कुलर की कापी लिए राजीव के पास पहुंचा।

उसे देखकर राजीव ने गम्भीर स्वर में कहा—"बैठिए।"

"धन्यवाद।"

प्रदीप धीरे-से बैठ गया। एक-दो बार राजीव के चेहरे की ओर देखने के बाद वह सर्कुलर की ओर देखने लगा।

राजीव ने उसके चेहरे पर निगाहें जमाते हुए कहा—

"आप जानते हैं मिस्टर प्रदीप, यह ऑफिस है।"

"जी।"

"और यहां अनुशासन बहुत ज़रूरी है। मैं देखता हूं आप कभी-कभी ही शेव बनाकर आते हैं। वरना आपका शेव हमेशा बढ़ा रहता है। इससे ऑफिस का अनुशासन तो भंग होता ही है दूसरों की नज़रों में हमारे ऑफिस का सम्मान भी कम होता है। आप इस ऑफिस में असिस्टेंट मैनेजर हैं। आप पर कोई कम ज़िम्मेदारियां नहीं हैं।"

"सॉरी—मैं अपने कर्त्तव्यों का पालन करने की पूरी-पूरी कोशिश करूंगा।"

"ठीक है। आप देर से आने के बारे में लिखित रूप में खेद-पत्र भेज दीजिए।"

"जी—मैं या सब लोग?"

"सब लोग क्यों? और किसी ने तो अपनी सफाई में अभी तक कुछ कहा नहीं है।"

"क्या आप मुझे इन सबका प्रतिनिधि नहीं समझ सकते।"

"यानी ये लोग आपकी वजह से देर से आते हैं?"

"नहीं। मेरा मतलब यह नहीं है।"

"ठीक है, मैं हर आदमी का अलग-अलग स्टेटमेन्ट और खेद-पत्र चाहता हूं।"

"जी—मगर—मेरा मतलब था।"

"मिस्टर प्रदीप, आप अपना स्टेटमेन्ट दे चुके हैं। मैं दूसरों का स्टेटमेन्ट चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि बात यहां से आगे न बढ़े। सिर्फ मेरी कोशिशों से ही ऑफिस का डिसिप्लेन सुधर जाए। ज़रा सोचिए एक-एक मेज़ पर कितने-कितने दिनों की फाइलें पड़ी हैं। अगर कहीं हैड-ऑफिस की ओर से चैकिंग होने लगी तो मैं कहां तक संभालूंगा।"

प्रदीप उठकर चला गया।

थोड़ी देर बाद गुप्ता जी ने आकर डरते-डरते कहा—

"मेरी पत्नी बीमार है सर—उसकी दवा-दारू लाने में मुझे देर लग जाती है।"

"आप अपनी पत्नी की दवा शाम को भी लेने जाते हैं और सुबह भी लेने जाते हैं। आप एक वक्त ही दवा क्यों नहीं ले आते।"

"जी—मेरा मतलब यह है मैं जहां रहता हूं वहां से यहां तक का रास्ता—।"

"ऑफिस का डिसिप्लेन रास्ता नहीं देखता। वहां से सुबह हर दस मिनट के बाद बसें आती रहती हैं। मैं ये पोच किस्म के हीले-बहाने सुनने को तैयार नहीं हूं। आप खेद-पत्र लिखकर दीजिए।"

गुप्ता जी सहमे हुए चले गए।

दूसरे क्लर्क भी आते-जाते रहे। उनके बहानों में कोई दम नहीं था। सबसे बाद में रामलाल आया। उसके चेहरे पर न डर था और न परेशानी थी। और न खेद की भावना।

राजीव के कहने पर वह बैठ गया। राजीव ने जब सर्कुलर के बारे में पूछा तो उसने बड़ी लापरवाही से उत्तर दिया—

"वह तो फाड़कर रद्दी की टोकरी में डाल दिया जी।"

राजीव ने बड़ी शान्ति और बड़े ध्यान से उसके चेहरे को देखा उसके स्वर में विद्रोह की झलक थी।

राजीव ने कहा -"आप जानते हैं मिस्टर रामलाल आपने मैनेजर की कुर्सी का अपमान किया है ?"

"अजी कुर्सी कुर्सी होती है मैनेजर मैनेजर कुर्सी तो अपनी जगह ही रहती है हां, मैनेजर आए-दिन बदलते रहते हैं।"

"हुं– आप उस सर्कुलर के बारे में क्या स्टेटमेन्ट दे रहे हैं।"

"स्टेटमेन्ट क्या जी सभी से देर सवेर हो जाती है। पिछले मैनेजर साहब तो नौ सवा नौ बजे से पहले आते ही न थे।"

"वह पिछले मैनेजर थे, मैं नया मैनेजर हूं।"

"मैं जानता हूं जी। आप जवान हैं फिर भी बूढ़ों की तरह कुर्सी से चिपके रहते हैं। आपकी उम्र तो अभी ऐश करने की है।"

"आप जा सकते हैं।"

रामलाल के जाने के बाद राजीव ने गीता को बुलाया और रामलाल के नाम नौकरी से हटाने का आॅर्डर टाइप कराकर भेज दिया।

थोड़ी-सी देर में ही सारे आॅफिस में खलबली मच गई। प्रदीप ने आकर परेशानी भरे लहज़े में पूछा।

"आपने रामलाल को नौकरी से हटा दिये जाने का नोटिस भिजवाया है सर।"

उन्होंने पिछले एक सप्ताह तक अनुशासन भंग करने के बारे में जो स्टेटमेन्ट दिया है। मैं उससे सन्तुष्ट नहीं हूं।"

"सर, वह वर्कर्स यूनियन का मेम्बर है। असरदार आदमी है। हमारी फर्म के डायरेक्टर तक उससे टकराने से डरते हैं।"

"आप मुझे मिस्टर रामलाल से भयभीत करना चाहते हैं।"

"नहीं सर, यह बात नहीं है। मैं तो आपको यह बताने आया हूं कि अगर यह नोटिस वापस न लिया गया तो ये सब लोग हड़ताल कर देंगे। यूनियन ने कर्मचारियों को इतना अधिकार दिला दिया है कि किसी भी कर्मचारी को बिना किसी ठोस कारण के नौकरी से नहीं हटाया जा सकता।"

"लेकिन मैंने रामलाल को अकारण नहीं हटाया।"

"अब मैं आपको कैसे समझाऊं सर।"

"मैं अपनी ज़िम्मेदारी समझता हूं—आप जा सकते हैं।"

प्रदीप ने बड़े ध्यान से राजीव का चेहरा देखा। उस पर दृढ़ निश्चय की झलक थी।

वह परेशान-सा बाहर आ गया। नए मैनेजर के प्रति न जाने क्यों उसके मन में दया, स्नेह और सहानुभूति की भावनाएं जाग उठी थीं। वह नहीं चाहता था कि राजीव किसी परेशानी में पड़े।

शाम को प्रदीप एक बार फिर रामलाल की सिफारिश लेकर आया। लेकिन राजीव ने अपना निर्णय बदलने से साफ इंकार कर दिया।

"मेरे निर्णय वापस लेने का अर्थ होगा कि इस ऑफिस में मैनेजर का कोई अस्तित्व नहीं है।"

"मैनेज़र साहब, यह यूनियन का मामला है।"

"मैं जानता हूं। मैं भी यूनियन का मेम्बर बन सकता हूं। यूनियनें इसलिए बनाई जाती हैं कि वे कर्मचारियों के हितों की रक्षा करें। उन्हें मालिकों की अनुचित इच्छाओं के आगे सिर झुकाने पर मजबूर न होने दें। कोई भी यूनियन कर्मचारियों को यह नहीं सिखाती कि आप जिस फर्म की तनख्वाह से अपना पेट भर रहे हैं उस फर्म के हितों की अवहेलना करें। उसे नुकसान पहुंचाएं। जब आप लोगों की अव्यवस्था फैलाने से फर्म बन्द हो जाएगी तो आपको वेतन कहां से मिलेगा? आप कहां से अपना पेट भरेंगे। और फिर अगर कर्मचारियों ने यूनियन के द्वारा अपनी गलत और अनुचित मांगें मनवा भी लीं तो यूनियन का उद्देश्य ही समाप्त ही नहीं हो जाएगा बल्कि यूनियन से दूसरों का विश्वास ही समाप्त हो जाएगा और हो सकता है कि फर्मों और संस्थानों को पहुंचने वाली हानि को देखकर एक दिन सरकार कर्मचारियों से यूनियन बनाने का अधिकार ही छीन ले।"

प्रदीप तो राजीव की बात समझ रहा था लेकिन वह जानता था कि रामलाल के द्वारा भड़काए हुए कर्मचारी इस बात को समझ न सकेंगे।

जब कर्मचारियों का हुल्लड़ बढ़ा तो राजीव अपने केबिन से बाहर निकल आया। उसे देखकर सारे कर्मचारी खामोश हो गए। लेकिन सब अपनी-अपनी जगह खड़े रहे।

राजीव ने सब पर एक गहरी नज़र डालकर कहा—

"आप लोग क्या चाहते हैं ?"

"रामलाल को नौकरी से हटाने का ऑर्डर वापस लिया जाए ।" सब ने एक स्वर में कहा ।

"ठहरिये ।" राजीव ने हाथ उठाकर कड़ाई से कहा—"यह ऑफिस है कोई जलसाघर नहीं है । आप में से सिर्फ एक आदमी बात करे ।"

एक क्लर्क ने कहा—

"रामलाल को नौकरी से हटाने का ऑर्डर वापस लिया जाए वरना हम यूनियन के द्वारा अपना अधिकार मांगेंगे ।"

"किस अधिकार की बात कर रहे हैं आप ?" राजीव ने उन लोगों पर गहरी नज़र डालकर कहा, "आप कौन-से अधिकार पाना चाहते हैं ? यही कि आप आठ बजे के बजाए साढ़े आठ बजे, नौ बजे ऑफिस आयें । या इस अधिकार को जिसके द्वारा आपकी मेज़ों पर अधूरी फाइलों के ढेर लगे रहें ? या इस अधिकार को जिसके द्वारा यहां का ऑफिस बुऑय तक अपना काम न करे। याद रखिए, रोजगार आज की सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या है । आप नहीं जानते कि आप लोग अपने आपको बेरोजगारी की ओर धकेल रहे हैं । शायद आप नहीं जानते कि बहुत से ऑफिसों में तालाबंदी इसलिए हुई कि वहां के कर्मचारियों ने अव्यवस्था फैला रखी थी । कर्मचारियों ने यूनियन के अपने अधिकारों का गलत प्रयोग करके मालिकों के विश्वास को ठेस पहुंचाई थी । अगर मालिक तंग आकर तालाबंदी कर दें तो कौन-सा कानून है जो उन्हें ऑफिस की तालाबंदी समाप्त करने पर मज़बूर कर सकता है ?"

ऑफिस में सन्नाटा छा गया । कोई कुछ न बोला ।

"क्या आप एक आदमी के लाभ के लिए फर्म के हितों को धक्का पहुंचाना पसन्द करेंगे ?" राजीव ने कहा ।

पूरे ऑफिस में किसी ने कुछ नहीं कहा ।

"बोलिए, आप लोग चुप क्यों हैं । क्या अब भी आप यूनियन का सहारा लेकर हड़ताल करेंगे ।"

"नहीं," रामलाल ने ही सबसे पहले कहा ।

राजीव के होंठों पर हल्की-सी मुस्कराहट दौड़ गई ।

"मैं अपनी हरकतों के लिए क्षमा चाहता हूं । मैंने अभी-अभी सोचा है कि हम जिस पेड़ की छांव में बैठे हैं उसी पेड़ के नीचे धुआं

करके यह कोशिश कर रहे हैं कि इस पेड़ के पत्ते मुरझा जायें। पत्ते मुरझा गए तो पेड़ रुंड-मुंड हो जाएगा और हम धूप में तपने लगेंगे। लेकिन अब पेड़ नहीं मुरझाएगा।" रामलाल ने कहा।

राजीव ने हल्की-सी मुस्कराहट के साथ कहा—

"यहां लड़ाई मेरी और आपकी नहीं थी। लड़ाई फर्म के हित और अहित की थी—मैनेजर और क्लर्क की कुर्सी के सम्मान की थी। आप लोग जानते हैं कि आंधी उन पेड़ों को कभी कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकती जो झुके हुए होते हैं। लेकिन घमंडी और सिर उठाकर अकड़ने वाले पेड़ों को जड़ से उखाड़कर फेंक देती है। अब आप अपना स्टेटमेंट लिखकर दे दीजिए, मैं आपको नौकरी से हटाने का ऑर्डर वापस ले लेता हूं।"

पूरे स्टाफ के चेहरों पर श्रद्धा तथा स्नेह की एक गहरी लहर दौड़ गई। और गीता—वह बड़े आश्चर्य से राजीव को देख रही थी। थोड़ी देर के बाद जब प्रदीप रामलाल का स्टेटमेंट लेकर राजीव के पास पहुंचा तो उसकी आंखें गीली थीं।

राजीव सोचने लगा कि प्रदीप इतना भावुक क्यों है।

शाम को जब राजीव ने अपनी कार 'सावित्री सदन' के नीचे खड़ी की और लिफ्ट के नीचे पहुंचा तो लिफ्ट हमेशा की तरह बंद थी। राजीव ने मुस्कराकर सिर को हल्का-सा झटका दिया और सीढ़ियों की ओर बढ़ गया।

तभी उसकी नज़र गीता पर पड़ी। उसने ठिठककर गीता की ओर देखा और फिर धीरे-धीरे ऊपर की ओर चढ़ने लगा। गीता ठहर गई। और जब राजीव उससे एक सीढ़ी आगे निकल गया तो गीता ने पीछे-पीछे चलते हुए धीरे-से कहा—

"मैं आपसे एक बात कहना चाहती हूं।"

"कहिए।"

"आप अनु को फिर कभी अपनी कार में न बैठाइएगा।"

"क्यों ?"

"मैं नहीं चाहती कि मेरी बच्ची को किसी ऐसी सुख-सुविधा की आदत पड़ जाए जो उसके भाग्य में न हो। और इसे पाने के लिए भगवान न करे कभी उसके कदम डगमगा जायें।"

राजीव ने आश्चर्य से गीता की ओर देखा। यह वही गीता

थी जिसकी बच्ची अनु उसकी अवैध सन्तान थी और अनु के भविष्य के लिए वह इतनी चिन्तित और जागरूक थी।

दो-तीन सीढ़ियां चढ़ने के बाद राजीव ने कहा—

"आज उसकी बस निकल गई थी इसलिए मैंने उसे बैठा लिया था।"

"उसकी बस तो अक्सर ही निकल जाती है।"

"और आप उसे पैदल ही इतनी दूर जाने देती हैं?"

"क्या हर्ज है। मैं चाहती हूं···उसमें अभी से आत्म-विश्वास पैदा हो।"

राजीव ने कोई उत्तर न दिया। वह हल्के आश्चर्य से गीता की ओर देखने लगा।

फिर किसी को ऊपर से आते देखकर गीता तेज़-तेज़ चलती हुई राजीव से आगे निकल गई।

राजीव से आगे निकल गई।

राजीव ऊपर पहुंचा तो उसने अनु को गीता के पीछे खड़े देखा। गीता फ्लैट का ताला खोल रही थी। थोड़ी दूर पर राजू चुपचाप खड़ा अनु को देख रहा था। उसकी आंखों में हसरत थी। जैसे ही अनु ने उसकी ओर देखा राजू ने उसे चिढ़ाने के लिए जीभ दिखाई। लेकिन अनु सहमकर मां की ओर देखने लगी।

फिर दरवाज़ा खुला और वह मां के साथ अन्दर चली गई।

चार

अचानक ही वर्षा होने लगी। और उसके साथ ही बिजली चली गई। पंखा और बत्ती बंद हो गए। थोड़ी देर में ही राजीव का दम घुटने लगा। फ्लैट में गर्मी के साथ घुटन भी फैल गई थी। उसने पिछवाड़े की खिड़कियां खोल दीं और दरवाज़ा भी खोल दिया। लेकिन गर्मी कम नहीं हुई। वह घबराकर फ्लैट से बाहर निकलकर गैलरी में आ गया। गैलरी के नीचे सड़क थी। खुला

वातावरण था। इसलिए हवा के साथ हल्की बौछारें बहुत ही भली लग रही थीं।

राजीव रेलिंग से लगकर खड़ा हो गया। हालांकि उसके चेहरे और सीने पर पानी की हल्की बौछारें पड़ रही थीं। कपड़े भीगने लगे थे। लेकिन भीगने में बड़ा आनन्द आ रहा था। जी चाहता था कि इसी तरह भीगता रहे।

अचानक नीचे किसी कार की हैड लाइट की रोशनी दिखाई दी। कार ठीक 'सावित्री सदन' के नीचे आकर रुकी। राजीव यों ही नीचे देखने लगा।

तभी बिजली चमक उठी और बादल गरज उठे। उसके साथ ही राजीव ने उस कार से गीता और अनु को उतरते देखा। उन लोगों के साथ एक आदमी भी उतरा जिसने उन दोनों को बड़े संकोच भाव से अपनी बरसाती में समेट रखा था।

राजीव को एक झटका लगा। यह वही गीता थी जिसने कुछ दिन पहले ही उससे कहा था कि वह अनु को अपनी कार में न बैठाया करे। क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि उसकी बेटी ऐसी सुख-सुविधाओं की आदी हो जाए जो उसे मिल न सकें। और उन्हें पाने के लिए उसे अनुचित रास्ते अपनाने पड़ें। और वही गीता आज किसी की कार में अनु के साथ बैठी हुई थी।

तभी पीछे से एक और कार की रोशनी दिखाई दी। राजीव पहचान गया, वह दिलीप की कार थी।

दिलीप की कार की रोशनी गीता, अनु और उस आदमी पर भी पड़ी। लेकिन उस आदमी ने बड़ी फुर्ती से अपना चेहरा अपनी बरसाती में छिपा लिया और तेज़ी से अपनी कार में घुस गया। फिर कार स्टार्ट हुई और तेज़ी से चली गई।

गीता और अनु तेज़ी से सीढ़ियों की ओर बढ़ गईं।

उसी समय बिजली आ गई और न जाने क्या सोचकर राजीव अपने फ्लैट में घुस गया। लेकिन दरवाज़े के पास पहुंचकर ही रुक गया और सोचने लगा कि वह कौन-सी तड़पन है जो गीता को ऐसी स्थितियों में देखकर उसके दिल में जाग उठती है।

गीता इत्मीनान से अनु को गोद में लेकर सीढ़ियां चढ़ रही थी। उसके कपड़े वर्षा की थोड़ी-सी बौछारों में ही भीग गए थे।

उसके पीछे-पीछे दिलीप भी तेज़ी से चढ़ने लगा। लेकिन गीता के पास पहुंचते ही उसकी चाल धीमी पड़ गई।

उसने बड़ी हमदर्दी से कहा—"ओ हो, अनु भी काफी भीग गई है। कहीं इसे सर्दी न लग जाए।"

गीता कुछ न बोली। वह चुपचाप सीढ़ियां चढ़ती रही।

"मेरे पास विक्स है। मैं दे जाऊंगा। थोड़ी-सी मालिश कर देना।"

"धन्यवाद," गीता ने रूखे स्वर में कहा।

"धन्यवाद की कोई बात नहीं। पड़ौसी ही पड़ौसी के काम आते हैं फिर मुझे तो तुमसे विशेष हमदर्दी है। मैं तुम्हारे ज़रा से भी दुःख को नहीं देख सकता। लेकिन तुम न जाने क्यों मुझे समझने की कोशिश नहीं करतीं। जानती हो, जब लोग अनु को अवैध सन्तान कहते हैं तो मुझे कितना दुःख होता है। काश मैं तुम्हारे किसी काम आ सकता। तुम्हारे दामन पर लगी बदनामी का यह दाग धो सकता।"

दोनों गैलरी में पहुंच गए।

अचानक अनु को छींक आ गई। गीता बेचैन हो उठी।

दिलीप ने जल्दी से कहा—

"देखा, मैंने कहा था न—अनु को शायद सर्दी लग गई है।"

गीता कुछ न बोली। वह सोच रही थी कि अगर अनु को विक्स कीहल्की-सी मालिश कर दी जाए तो यह खतरा टल जाएगा। गुड़िया-सी मासूम और कमज़ोर बच्ची है।

अपने फ्लैट का दरवाज़ा खोलकर गीता अन्दर चली गई और अनु को लिटाकर प्यार करने लगी। अनु नींद में थी।

थोड़ी देर बाद दरवाज़ा खुला और दिलीप विक्स की शीशी लिए अन्दर आया। उसकी आंखें एक अजीब-सी खुशी से चमक रही थीं। गीता ने उसके हाथ से शीशी ले ली और अनु की फ्रॉक ऊपर उठाने लगी।

ठीक उसी समय हवा के तेज़ झोंके से दरवाज़े के दोनों किवाड़ के फाटक खुल गए। अनु उछल पड़ी। गीता ने जल्दी से उसके सीने पर हाथ रख दिया।

दिलीप जल्दी से दरवाजे की ओर बढ़ा। उसने दरवाज़ा भेड़-

कर जल्दी से चटकनी चढ़ायी।

गीता ने उसे चटकनी चढ़ाते हुए देखा और विक्स की शीशी का ढक्कन खोलने लगी।

दिलीप की निगाहें गीता के चेहरे पर जमी हुई थीं। उसकी सांसें तेज़-तेज़ चल रही थीं। उसने दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर दिया था लेकिन गीता ने कोई आपत्ति नहीं की थी। वह बहुत ही निश्चिन्त दिखाई दे रही थी। कितनी सुन्दर है गीता। एक अवैध बच्ची की मां। कुछ देर पहले वह किसी अजनबी की कार से उतरी थी और वह अजनबी रोशनी से मुंह छिपाकर तेज़ी से चला गया था।

दिलीप गीता के पास पहुंचकर रुक गया। उसे अपनी गर्दन पर पसीने की नमी महसूस हो रही थी। गीता ने उगलियों से थोड़ा-सा विक्स निकाला और अनु के सीने पर धीरे-धीरे मालिश करने लगी।

उसने दूसरे हाथ से शीशी दिलीप की ओर बढ़ाते हुए बड़े इत्मीनान से कहा—"यह लीजिए शीशी और अब आप जाइए।"

दिलीप शीशी लेकर खड़ा रहा।

गीता ने उसकी ओर देखकर कहा—"दिलीप जी, मैं कह रही हूं अब आप चले जाइए।"

"आं," दिलीप चौंका। फिर धीरे-से बोला, "चला जाऊंगा, चला जाऊंगा।"

"अभी चले जाइए। आपकी पत्नी जाग गईं तो हंगामा खड़ा कर देंगी।"

"गीता, तुम मुझे कामिनी का ताना मत दिया करो। तुम नहीं जानतीं उस औरत ने मेरी ज़िन्दगी नर्क बना रखी है।"

"आप जानते हैं बारह बज चुके हैं। अब आप जाइए।"

दिलीप ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा—"चला जाऊंगा—लेकिन कुछ मिनट मुझे और ठहरने दो तुम नहीं जानतीं—मुझे तुम तुम्हारी अनु से कितना प्यार है—रात भर मुझे यह ख्याल सताता रहेगा कि न जाने अनु की तबीयत कैसी होगी?"

फिर दिलीप ने जेब में से बटुआ निकाला और उसमें से सौ-सौ के दो नोट निकालकर गीता की ओर बढ़ाते हुए बोला—"लो, ये अनु के इलाज के लिए रख लो?"

गीता ने ध्यान से नोटों की ओर देखा। उसके होंठों पर एक

अजीब-सी मुस्कराहट उभर आई। उसने धीरे से कहा—

"आप जाइए—अनु की चिन्ता न कीजिए। यह ठीक हो जाएगी। ये रुपये आप अपने राजू के लिए रखिए।"

"अनु और राजू राजू और अनु—मैं इन दोनों को अलग-अलग नहीं समझता गीता- और—और मैं चाहता हूं कि ये दोनों अब अलग-अलग न रहें। मुझे समझने की कोशिश करो गीता—मैं तुमसे शादी करना चाहता हूं। मैं अपना आधा कारोबार अनु के नाम कर दूंगा। तुम्हारे लिए कश्मीर में एक खूबसूरत बंगला खरीद दूंगा।"

दिलीप की टांगों में सनसनाहट और कनपटियों में धमक हो रही थी। उसने बेकरार होकर गीता का हाथ पकड़ना चाहा। गीता तेज़ी से पीछे हट गई। उसके चेहरे पर अब न तो घबराहट थी, न भय था। उसके होंठों पर एक विचित्र-सी मुस्कराहट नाच रही थी।

राजू ने चुपके से मां को जगाया—

"मम्मी- मम्मी- ऐ मम्मी—।"

"अंह, क्या बात है? सो क्यों नहीं जाता।"

"मुझे डर लग रहा है।"

"क्यों? क्या यहां चुड़ैलें आ रही हैं? सिर्फ मैं हूं।"

"दरवाज़ा खुला हुआ है मम्मी। मुझे डर लग रहा है।"

"दरवाज़ा—।"

कामिनी जल्दी से उठकर बैठ गई।

"किसने खोला है दरवाज़ा।"

"मैंने खोला था मम्मी। अभी-अभी डैडी आए थे। उन्होंने खुलवाया था।"

"डैडी आए थे? वह तो कह रहे थे ऑफिस के काम से बाहर जाना है फिर लौट कैसे आए? और फिर कहां चले गए?"

"पता नहीं। विक्स की शीशी लेकर गए हैं। मुझे कह गए थे दरवाज़ा बन्द मत करना। आपको जगाने को भी मना कर गए थे।"

अचानक कामिनी के मस्तिष्क में बिजली-सी कौंध उठी। वह फुर्ती से विस्तर छोड़कर खड़ी हो गई और बिना नाइट-गाऊन पहने ही नंगे-पांव बाहर निकल गई।

बाहर दिलीप के जूतों के निशान थे जो पहले सीढ़ियों की ओर से फ्लैट तक आए थे और फिर अपने फ्लैट से गीता के फ्लैट तक जाकर रुक गए थे। कामिनी की आंखों से शोले लपकने लगे। उसने आगे बढ़कर चुपके से गीता के फ्लैट की चटकनी बाहर से चढ़ायी और फिर ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगी—

"अरे लोगो, आओ—जल्दी आओ—ज़रा इस कलंकिनी की करतूतों को देखो।"

उसकी चीख-पुकार सुनकर दिलीप घबरा गया। उसने दरवाज़ा खोलना चाहा। लेकिन दरवाज़ा तो बाहर से बन्द था। उसने घबराकर गीता की ओर देखा। गीता के होंठों पर एक व्यंग्य-भरी मुस्कराहट नाच उठी। उसका चेहरा शान्त था।

दिलीप ने जल्दी-जल्दी दरवाज़ा पीटते हुए कहा—"ओ कामिनी यह क्या बेहूदगी है—दरवाज़ा खोलो कामिनी।"

"कामिनी की चीख-पुकार सुनकर सब लोग जाग उठ। फ्लटों के दरवाज़े खटाखट खुलने लगे। सबसे पहले राजीव बाहर निकला और ठिठककर रुक गया। उसने कामिनी को चीखते सुना कि दिलीप गीता के फ्लैट में बंद है। उसके चेहरे पर एक विचित्र-सा खिचाव पैदा हो गया। जैसे इस बात से उसके दिल को जबर्दस्त धक्का लगा हो।

मिस्टर और मिसेज़ सिन्हा भी निकल आए।

बसन्ती भी बाहर आ गयी।

थोड़ी देर में ही गीता के फ्लैट के आगे अच्छी-खासी भीड़ जमा हो गई।

कामिनी चीख-चीखकर कह रही थी—

"आज देख लो अपनी आंखों से इस हरामज़ादी की करतूत। मेरे पति को अपने फ्लैट में बन्द करके उनके साथ रंग-रेलियां मना रही है। क्या इस बिल्डिंग में एक भी गैरतदार आदमी नहीं रहता जो इस ज़हर की पुड़िया को इस बिल्डिंग से बाहर निकाल सके?"

कुछ लोगों ने मिलकर दरवाज़ा खुलवाया। दिलीप का बदन पसीने में डूबा हुआ था। चेहरे पर पागलपन था।

कामिनी चीखी—"देखा तुम लोगों ने—कैसा जादू कर दिया है मेरे पति पर इस जादूगरनी ने।"

"यह क्या बेहूदगी है।" दिलीप पसीना पोंछते हुए हकलाया, "त—त—तुम्हारा दिमाग चल गया है।"

कामिनी और भी बिफर गई। तभी गीता दिखाई दी। उसके चेहरे की शान्ति में कोई अंतर नहीं आया था।

कामिनी उसे देखते ही पागलों की तरह उस पर झपटी—

"मार डालूंगी इस कमीनी को ज़िन्दा नहीं छोड़ूंगी।"

उसने गीता के बाल पकड़कर खसोट डाले। और उसे ज़मीन पर गिराकर दोनों हाथों से पीटने लगी।

गीता चुपचाप पिटती रही। किसी ने उसे नहीं बचाया। उसके प्रति किसी के मन में हमदर्दी न थी। दिलीप एक ओर खड़ा अरे-अरे कर रहा था।

मिसेज़ सिन्हा खुश होकर कह रही थीं—

"शाबाश कामिनी—शाबाश। ऐसी औरत की यही सज़ा है जो एक शादीशुदा आदमी के साथ गुलछर्रे उड़ाती है।"

बसन्ती और सिन्हा ने बड़ी असहाय नज़रों से एक-दूसरे की ओर देखा। बसन्ती सहमकर पीछे हट गई। कामिनी पागलों की तरह गीता को पीटती रही थी। राजीव भी एक ओर खड़ा था। उसने एक बार पहले भी दिलीप को गीता के फ्लैट में घुसते हुए देखा था और आज किसी अजनबी की कार से गीता को उतरते हुए देखा था। इस समय गीता को पिटते देखकर उसे ऐसा लग [illegible] था जैसे कोई उसका दिल मुट्ठी में जकड़कर ज़ोर से भींच [illegible] हो।

अचानक उसका धैर्य समाप्त हो गया। कामिनी ने उसकी गर्दन पकड़ रखी थी और अपनी पूरी ताकत से दबाने की कोशिश कर रही थी। राजीव ने झटककर कामिनी के दोनों हाथ पकड़ कर उसे गीता के ऊपर से हटा दिया।

कामिनी बिलबिलाती हुई चीख पड़ी—

"छोड़ दो मुझे छोड़ दो—मैं इस कमीनी को ज़िन्दा नहीं छोड़ूंगी।"

"पागल हो गई हैं आप—आप इसे ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगी तो क्या कानून आपको ज़िन्दा छोड़ देगा?"

राजीव ने गीता को उठने के लिए सहारा देना चाहा। लेकिन

उसने झटके से उसका हाथ हटा दिया—और बोली—

"हट जाइए। मुझमें इतनी ताकत है कि मैं अपने आप खड़ी हो सकती हूं।"

फिर वह हांफती हुई सीधी खड़ी हो गई और सब लोगों की ओर देखते हुए बोली—

"आप लोगों ने इस औरत की ताकत तो देख ली। अब मेरी ताकत भी देखिए।"

और फिर उसने दांत पीसते हुए दिलीप की ओर देखते हुए कहा—

"देख लिया आपने? आपकी वजह से मेरी क्या हालत हुई है।"

"गीता।" दिलीप भर्राई हुई आवाज़ में हकलाया।

"और आपका दावा है कि आप मुझसे प्रेम करते हैं। अगर आप मुझसे प्रेम करते हैं तो तैयार हो जाइए। मैं इसी समय आपसे शादी करूंगी। अभी और इसी समय।"

"गीता—।" दिलीप ने हकलाते हुए कहा।

"हां दिलीप जी, अभी और इसी समय मैं शादी करूंगी। जिस ज़िन्दगी के आप सपने देख रहे हैं मैं आपको वही ज़िन्दगी दूंगी।"

"नहीं," कामिनी दिलीप के सीने से लगकर दोनों हाथ फैलाए रास्ता रोककर खड़ी हो गई, "यह नहीं हो सकता—यह नहीं हो सकता।"

"यह होगा कामिनी और ज़रूर होगा।" गीता मुस्कराई, "और इसलिए होगा कि तुमने अपने पति को कभी प्यार नहीं दिया जिसकी कामना हर पति अपनी पत्नी से करता है। तुमने अपने पति को हमेशा शक की नज़रों से देखा और उसपर कड़े पहरे बैठाने की कोशिश की। आज तक तुम अपने पति की ज़िन्दगी में सिर्फ ज़हर घोलती रही हो। लेकिन अब वह तुम्हारे शिकंजे से निकल आएंगे। मैं इन्हें शान्ति और संतुष्टि भरी ज़िन्दगी दूंगी जो तुम नहीं दे सकीं।"

"नहीं, नहीं—यह नहीं हो सकता। यह नहीं हो सकता।" कामिनी चीख उठी।

"दिलीप, आओ मेरे पास आओ।" गीता ने बड़े प्यार से दोनों हाथ बढ़ा दिए।

6467

दिलीप की आंखों में हज़ारों रंग-बिरंगे सपने मचल उठे। वह कामिनी के हाथ झटककर गीता की ओर बढ़ते हुए बोला—

"मैं आ रहा हूं गीता। मैं आ रहा हूं—मुझे शान्ति चाहिए।"

कामिनी कंपकंपाती, हांफती देखती रही।

दिलीप गीता के पास पहुंच गया। लोग आश्चर्य से देख रहे थे।

राजीव को ऐसा लग रहा था जैसे उसे किसी ने हज़ारों फुट की ऊंचाई से ठोकर मारकर उछाल दिया हो और वह तेज़ी से नीचे लुढ़कता हुआ चला जा रहा हो।

और जब दिलीप के दोनों हाथ गीता की ओर बढ़े तो गीता ने अपने हाथ खींचकर कहा।

"बस दिलीप ।"

दिलीप ठिठककर रुक गया।

गीता ने उन सब लोगों की ओर देखते हुए कहा।

"देख ली आप लोगों ने मेरी ताकत! कामिनी ने जो व्यवहार मेरे साथ किया है इससे भी बड़ा जवाब मैं इसे दे सकती हूं।"

गीता की आंखों से शोले बरस रहे थे।

राजीव हक्का-बक्का खड़ा था। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

अचानक उसे अनु की आवाज़ सुनाई दी। गीता जल्दी से अन्दर चली गई। और उसने दरवाज़ा अंदर से बन्द कर लिया और अनु को लिटाकर धीरे-धीरे सिसकियां भरने लगी।

बाहर खड़े लोग कानाफूसी कर रहे थे।

"जादूगरनी है बहुत ही खतरनाक औरत है।"

"अरे मैंने उसकी आंखों में से जादू की लहरें निकलती देखी हैं।"

"ऐसी खतरनाक औरत का पड़ौस में रहना खतरे से खाली नहीं है।"

"और क्या? किसी भी समय कुछ भी हो सकता है।"

कामिनी दिलीप के कन्धे से लगी सिसकियां भर रही थी।

कुछ लोगों ने कहा—

"हमें आज ही सावित्री जी से कहकर सुबह तक इस औरत को यहां से निकलवा देना चाहिये।"

यह सुनकर बसन्ती जल्दी से निकली और भागती हुई सावित्री

के फ्लैट में चली गई।

सब लोगों ने गीता को निकलवाने का निश्चय कर लिया और सावित्री के फ्लैट की ओर बढ़ने लगे।

मिसेज़ सिन्हा ने मिस्टर सिन्हा से कहा—

"चलो जी —कहीं इसने तुम पर जादू कर दिया तो मैं कहीं की नहीं रहूंगी।" मिसेज़ सिन्हा ने अपने पति का हाथ पकड़ा और उसे घसीटती हुई अपने फ्लैट में चली गई।"

बसन्ती की आवाज़ सुनकर सावित्री हड़बड़ाकर उठ बैठी थी। बसन्ती ने उन्हें सहारा देकर बैठा दिया था। उन्होंने अपनी अपाहिज टांगें बिस्तर पर टिका लीं थीं और अब बसन्ती की बात सुन रही थीं जो जल्दी-जल्दी सारी बातें उन्हें बता रही थी। सावित्री की आंखें आश्चर्य से फैलती जा रही थीं।

लोगों के आने की आवाज़ सुनकर बसन्ती जल्दी से सीधी खड़ी हो गई। सावित्री ने देखा, लोग उनके फ्लैट में आ रहे थे।

राजीव भी अंदर आ गया था। लेकिन किवाड़ से लगा अलग-थलग खड़ा था। सबसे आगे कामिनी और दिलीप थे।

मिसेज़ सावित्री ने उन लोगों पर एक नज़र डाली और इत्मीनान से बोलीं —"फ़र्माइए, क्या चाहते हैं आप लोग?"

"हम लोग चाहते है कि गीता को इसी समय बिल्डिंग से निकाल दिया जाए।"

"क्यों?" मिसेज़ सावित्री ने तीखे लहजे में पूछा।

"वह चरित्रहीन है। आवारा है। जादूगरनी है— उसने मेरा घर बर्बाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।" कामिनी बोली।

"हां मिसेज़ सावित्री।" दिलीप ने आगे बढ़कर कहा "वह सचमुच जादूगरनी है। उसने मुझ पर न जाने क्या जादू कर दिया था।"

"और अब अपने जादू से मुक्त कर दिया?" मिसेज़ सावित्री ने व्यंग्य भरी मुस्कराहट के साथ कहा, "अगर वह अपनी ताकत इस्तेमाल करके तुमसे सचमुच शादी कर लेती तो वह आवारा न होती और न जादूगरनी और न बदचलन होती? उसने तुम्हें ठोकर मार दी। इसलिए वह बदचलन, आवारा और जादूगरनी हो गई।"

"वह सचमुच जादूगरनी है।" कामिनी बोली, "उसके पास न जाने कौन-सी ताकत है।"

"जो ताकत उसके पास है वह तुम्हारे पास भी है। तुम भी उसी की तरह औरत हो। अंतर सिर्फ इतना है कि वह अपनी ताकत का अनुचित प्रयोग नहीं करती, इसलिए उसकी ताकत सुरक्षित है। तुम अपनी ताकत का अनुचित उपयोग करती हो। तुम अपनी ताकत - नाज़ नखरों— मेकअप, सोसायटी और अपने पति पर शक करने में खर्च करती हो। अगर तुम यही शक्ति सच्ची पत्नी बनने में खर्च करो तो शायद गीता से ज़्यादा ताकतवर हो सकती हो।"

"आप मेरा और गीता का मुकाबिला कर रही हैं। वह एक नाजायज़ बच्ची की मां है।"

"बको मत," मिसेज़ सावित्री ने गुस्से से कहा, "न बच्चा नाजायज़ होता है न मां। बच्चा भगवान् का दूसरा रूप होता है। और मां भगवान् का तीसरा रूप नाजायज़ तो घड़ियां और भावनाएं होती हैं जो इंसान के दिल में शैतान को जन्म देती हैं और क्या पता शैतानी ताकत मर्द में ज़्यादा होती है या औरत में। गीता एक औरत है। हो सकता है उसने किसी से प्रेम किया हो। और औरत जब किसी से प्रेम करती है तो उसपर पूरा-पूरा भरोसा कर लेती है। हो सकता है वही भरोसा उसके लुटने का कारण बना हो। और आज वह एक बच्ची की मां है। तुम लोग कहते हो कि मैं उसे यहां से निकाल दूं। अगर मैं उसे निकाल दूंगी तो वह कहां ज़ाएगी? नन्ही-सी बच्ची को लेकर कहां भटकेगी? और अगर कठिनाइयों ने उसे गलत रास्ते पर डाल दिया तो उसकी ज़िम्मेदारी किस पर होगी?"

"हम कुछ नहीं जानते। गीता एक पेशेवर रंडी से कम नहीं है। हम चाहते हैं कि उसे आज ही और इसी समय यहां से निकाल दिया जाए।"

"हुं," मिसेज़ सावित्री ने ठंडी सांस ली, तुम में से कौन-कौन चाहता है कि उसे यहां से निकाल दिया जाए? अपने-अपने हाथ ऊपर उठा लो।"

सब लोगों ने हाथ ऊपर उठा लिए। लेकिन राजीव चुपचाप खड़ा था। वह बड़े इतमीनान से सिगरेट सुलगा रहा था और लोग उसे गुस्से से घूर रहे थे।

मिसेज़ सावित्री ने सब लोगों पर एक नज़र डालकर कहा—"जिन लोगों ने हाथ उठाए हैं वे सब इस बिल्डिंग से बाहर निकल

जाएं। यह बिल्डिंग मेरी है। मैं इस बिल्डिंग की मालिक हूं। मैं जिसे चाहूंगी रखूंगी, जिसे चाहूंगी निकाल दूंगी। मेरे जीते-जी गीता को इस बिल्डिंग से कोई नहीं निकाल सकता।—कोई नहीं निकाल सकता।''

लोग हैरानी से मिसेज़ सावित्री को देख रहे थे। चीखने से उसकी आवाज़ फट गई थी। सारा बदन थर-थर कांप रहा था। लोग एक-एक करके खिसकने लगे।

चीखते-चीखते अचानक मिसेज़ सावित्री धड़ाम से गिर गईं। बसन्ती झपटकर उनकी ओर बढ़ी। राजीव ने झपटकर मिसेज़ सावित्री को बिस्तर पर लिटा दिया। वह बुरी तरह हांफ रही थीं।

बसन्ती बिलबिलाती हुई कह रही थी, ''ओ मैडम, गुस्सा मत करो। तुम्हें हार्ट-अटैक हो जाएगा मैडम।'' राजीव मिसेज़ सावित्री के माथे से खून पोंछ रहा था जो गिरने पर रगड़ लगने से निकल आया था।

मिसेज़ सावित्री कुछ देर तक यूं ही हांफती रहीं फिर अचानक उनकी आंखें भर आईं और वह सिसकियां भरकर रोने लगीं।

बसन्ती उन्हें चुप कराने की कोशिश कर रही थी। और उनके साथ खुद भी रो रही थी।

रोते-रोते मिसेज़ सावित्री ने आंखें खोलीं और राजीव को देखने लगीं। कुछ देर तक वह पड़ी-पड़ी बसन्ती को देखती रहीं और फिर उठने की कोशिश करने लगीं। राजीव ने उन्हें सहारा देकर बैठा दिया। बसन्ती ने उनकी पीठ के पीछे तकिया लगा दिया।

मिसेज़ सावित्री ने राजीव की ओर देखकर कहा, ''तुम इस पूरी बिल्डिंग में अकेले आदमी हो जिसने गीता के विरुद्ध आवाज़ नहीं उठाई। जानते हो मेरी उम्र कितनी है? मैं पूरे साठ बरस की हूं।—साठ बरस की—मेरी बिल्डिंग में दर्जनों किराएदार आए और चले गए। मैं आदमी की चाल से उसकी नीयत पहचान लेती हूं। उसके गुण जान लेती हूं। ये जितने लोग गीता के खिलाफ हैं उन सबको मैं अच्छी तरह जानती हूं।—बहुत अच्छी तरह जानती हूं।''

कुछ देर चुप रहकर उन्होंने फिर कहा—''और मेरा अनुभव कहता है कि तुम गीता को वह नहीं समझते जो ये सब समझते

हैं। इन लोगों को कैसे समझाऊं कि गीता क्या है ? ठहरो मैं तुम्हें एक लड़की की कहानी सुनाती हूं।''

वह कुछ देर तक शून्य में घूरती रहीं और फिर इस तरह बोलने लगीं जैसे किसी को कहानी सुना रही हों

''एक लड़की शीला थी। लोग कहते थे शीला बहुत सुन्दर थी। उसके बहुत सारे साथी उहकी निकटता प्राप्त करना चाहते थे। लेकिन शीला एक लड़के से प्यार करती थी। बहुत अमीर घराने का लड़का था। हंसमुख सोसायटी का —। उसने शीला से शादी करने का वायदा कर लिया था। लेकिन जब उसे पता चला कि शीला उसके बच्चे की मां बनने वाली है तो उसने शीला का साथ छोड़ दिया। उसने उसपर आवारगी और बदचलनी का आरोप लगाया। शीला के मां-बाप ने भी उसे आवारा कहकर घर से निकाल दिया। शीला को दुनिया से घृणा हो गई। दुनिया ने उसके प्रेम का मज़ाक उड़ाया। शीला ने निश्चय कर लिया कि वह अपने माथे पर लगे इस कलंक को धोकर ही रहेगी। उसे बड़ी कठिनाइयां झेलनी पड़ीं। हज़ारों हाथ उसकी मजबूरियों और बेवसी से लाभ उठाने के लिए उसकी ओर बढ़े। लेकिन शीला उन हाथों को झटककर दूर हटाती रही। न जाने कहां-कहां भटकती रही। और जब उसने महसूस किया कि वह मां बनने वाली है तो वह अपने प्रेमी की मां से मिलने गई। घर की सीढ़ियों पर ही उसे अपना प्रमी मिल गया। उसने शीला से पूछा कि वह यहां क्यों आई है ? शीला ने कहा कि वह अपना अधिकार मांगने आई है। जब वह बच्चे को जन्म दे देगी। और फिर चीख-चीख कर दुनिया से न्याय मांगेगी कि देखो, यह बच्चा किस-किस का है ? इस बच्चे की रगों में एक आदमी का खून है या एक आदमी से अधिक का। शीला का प्रेमी नहीं चाहता था कि शीला उसकी मां से मिले। उसने शीला को सीढ़ियों पर से धक्का दे दिया। शीला तीसरी मंजिल की सीढ़ियों से लुढ़कने लगी तो वह अकेली थी। लेकिन फिर उसके साथ एक नन्हा-सा मासूम बच्चा भी लुढ़कने लगा।''

मिसेज़ सावित्री ने एक सिसकी भरी।

राजीव और वसन्ती गुमसुम बैठे उसकी कहानी सुन रहे थे।

कुछ देर रुककर मिसेज़ सावित्री ने कहा—''नीचे पहुंचते-

डायमंड पाकेट बुक्स में

रानी बाजपेयी

की नवीनतम भेंट

दान दहेज

मूल्य 4/-

नारी के त्याग और लालची पुरुष की बर्बरता की कहानी ...

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करवालें !

डायमंड पॉकेट बुक्स में...

लाखों पाठकों के
प्रिय उपन्यासकार

समीर का

आज के बाद
एक और नया उपन्यास

मंगलसूत्र

मूल्य 4/-

समीर के अन्य लोकप्रिय उपन्यास:
आन • पायल • कसके
दाग • आराधना • सुहाग

पहुंचते वह मासूम बच्चा मर गया। उसकी पहली कुछ सांसें ही आखिरी सांसें थीं। और जब उसके प्रेमी और उसकी मां ने देखा तो उन्हें विश्वास हो गया कि बच्चा उन्हीं का है। उसके खून में कोई मिलावट नहीं थी। मासूम बच्चा अपनी कुर्बानी देकर उसकी मां के माथे कर लगा कलंक तो धो गया। लेकिन जाते-ज़ाते अपनी मां को अपाहिज बना गया।"

मिसेज़ सावित्री सिसकियां ले-लेकर रोती रहीं। बसन्ती और राजीव गुमसुम सुनते रहे।

कुछ देर बाद मिसेज़ सावित्री ने आंसू पोंछकर कहा– "और उसके बाद मेरा प्रेमी सत्यकाम न जाने कहां गुम हो गया। फिर कभी लौटकर नहीं आया। उसकी मां ने मुझे बहू बनाकर अपने पास रखा और बेटे का इंतज़ार करने लगीं। और एक दिन इंत-ज़ार करते-करते उन्होंने अपनी आंख मूंद लीं। और यह बिल्डिग मेरे नाम कर गईं।"

वे फिर चुप हो गईं। और कुछ देर बाद ठंडी सांस भरकर बोलीं, "मैं जानती हूं गीता मुझसे ज़्यादा बहादुर है। मैं अपनी पवित्रता के साक्षी को ज़िन्दगी न दे सकी। लेकिन गीता अपनी पवित्रता की गवाह को न केवल ज़िन्दगी दे रही है बल्कि उसका भविष्य रही है। शक्ति दे रही है। मैं जानती हूं कि ऐसी स्थिति में नारी को कितने तूफानी समुद्रों और फौलादी चट्टानों से टकराना पड़ता है। उसे किसी की आंख में हमदर्दी दिखाई नहीं देती। ऐसी हालत में अगर उसे तूफानी समुद्र की बेरहम लहरों की गोद में छोड़ दिया जाए तो उसकी बाहें कब तक उलका साथ दे सकेंगीं। तूफानी लहरों का वह कब तक मुकाबिला कर सकेंगी?"

फिर मिसेज़ सावित्री बड़बड़ाने लगीं—

"लेकिन मैं हरगिज़ हरगिज़ ऐसा नहीं होने दूंगी—कभी नहीं होने दूंगी। गीता को इस बिल्डिग से कोई नहीं निकाल सकता—कोई नहीं निकाल सकता।"

पांच

मिसेज़ सिन्हा बुरा-सा मुंह बनाए बैठी थीं। डाक्टर उसकी जांच कर रहा था। जब उसने मिसेज सिन्हा के भारी-भरकम पेट पर हाथ रखकर देखा तो वह उछल पड़ीं —

"ही-ही-ही, गुदगुदी होती है। यह क्या करते हो?"

"मैडम, थोड़ी देर चुपचाप लेटी रहिए।" डाक्टर ने कहा।

मिसेज़ सिन्हा ने मज़बूती से अपना मुंह बंद कर लिया।

डाक्टर ने जांच करते हुए पूछा —

"जी भी मितलाता होगा—कभी-कभी कै भी हो जाती होगी।"

"लेकिन मिसेज़ सिन्हा, मज़बूती से मुंह बंद किए लेटी रहीं।"

डाक्टर ने कहा —

"तबीयत भी गिरी-गिरी रहती होगी। जी चाहता होगा हर वक्त सोती रहें।"

मिसेज़ सिन्हा फिर भी कुछ न बोलीं।

मिसेज़ सिन्हा के चेहरे की ओर देखते हुए डाक्टर ने पूछा — "यहां पेट पर कभी-कभी खुदबुद भी होती है।"

मिसेज़ सिन्हा मुंह बंद किए पड़ी रहीं।

डाक्टर झल्लाकर बोला —"उत्तर दीजिए ना।"

मिसेज़ सिन्हा के मुंह से हंसी का फ़व्वारा फूट पड़ा। सारा वदन थल-थल करने लगा। डाक्टर दांतों-पर-दांत जमाए खड़ा रहा।

काफ़ी देर तक हंसने के बाद उन्होंने कहा—"पेट में यों ही गुदगुदी करते हो। हंसी आए तो चुप रहने को कहते हो। चुप रहो तो जवाब देने को कहते हो? तुम डाक्टर हो या घन-चक्कर।"

"घन-चक्कर हूं तो नहीं। लेकिन अगर कुछ देर तक आपकी

जांच करता रहा तो हो जाऊंगा।"

डाक्टर ने गुस्से से कहा और बाहर निकल गया।

बाहर खड़ा सिन्हा बड़ी चिन्तित मुद्रा में दीवार के सहारे खड़ा था।

डाक्टर को देखते ही वह उसकी ओर बढ़ आया।

डाक्टर ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा—

"आपकी पत्नी गर्भवती हैं, मिस्टर सिन्हा।"

"गर्भवती ?"

डाक्टर ने लम्बी सांस ली और बोला—

"गर्भवती—गर्भवती—गर्भवती—मेरा मतलब है आप बाप बनने वाले हैं।"

"ऐं ?" सिन्हा का मुंह आश्चर्य से फैल गया।

"गर्भवती ?" मिसेज़ सिन्हा दरवाज़े से निकलते-निकलते खुशी से उछल पड़ीं, "सच—? यानी मैं मां बनने वाली हूं। पूरे सात साल के बाद।"

वह खुशी से नाचने लगीं।

डाक्टर ने कहा—"मैडम, संभलकर रहिए। इन दिनों एक-एक कदम सावधानी से उठाने की ज़रूरत होती है।"

मिसेज़ सिन्हा ठिठककर रुक गईं। फिर बड़ी सावधानी से एक-एक कदम उठाती हुई बेंच पर जाकर बैठ गईं।

सिन्हा आश्चर्य से मुंह फाड़ बैठा था।

डाक्टर सिन्हा को बुलाकर ले गया। उसने कहा, "आखिरी दिन हैं। बहुत ही सावधानी की ज़रूरत है। मेरा विचार है बच्चा पैदा होने के समय इनका मोटापा आड़े आएगा।"

"डिलीवरी ?"

डाक्टर घबराकर बोला—"डिलीवरी—यानी बच्चा पैदा होने के समय हो सकता है ऑपरेशन करना पड़े।"

सिन्हा कुछ न बोला। उसका मुंह पूर्ववत् फटा ही रहा।

राजीव नेकटाई की गांठ ठीक कर रहा था कि दरवाज़े पर किसी ने ज़ोर-ज़ोर से दस्तक दी। उसने जल्दी से बढ़कर दरवाज़े

खोल दिया। दरवाज़े पर भारी-भरकम मिसेज़ सिन्हा खड़ी थीं। उनके चेहरे से खुशी फूट रही थी।

मिठाई के कुछ टुकड़े राजीव को देते हुए उसने कहा—

"लो – लो – मिठाई खाओ —मिठाई।"

"किस खुशी में मिठाई खिला रही हैं मिसेज़ सिन्हा ?"

"अरे, मिस्टर सिन्हा मां बनने वाले हैं।"

"व्हाट—?"

"अररर— मेरा मतलब है मिस्टर सिन्हा बाप बनने वाले हैं।—यानी मैं—मैं—मां ?"

और वह शरमाकर गोल-मटोल होती चली गईं।

राजीव ने बाहर निकलकर उसे जाते हुए देखा। तभी गीता और अनु अपने फ्लैट से निकलीं। उन्हें देखकर मिसेज़ सिन्हा ने गर्दन झटकी और सीधी चली गईं।

थोड़ी दूर पर राजू खड़ा मिठाई खा रहा था। उसने अनु को देखा तो उसका हाथ मुंह तक जाते-जांते लौट आया। गुम-सुम-सा अनु को देखने लगा। फिर जब अनु ने उसकी ओर देखा तो उसने अनु को मिठाई दिखाकर अपनी ओर आने का इशारा किया लेकिन अनु ने ना के इशारे में सिर हिला दिया और सहमकर मां की ओर देखने लगी।

गीता ताला लगा चुकी थी। तभी नीचे किसी बस का हॉर्न सुनाई दिया। उसने जल्दी से कहा—

"जल्दी करो अनु तुम्हारे स्कूल की बस आ गई।"

फिर वे दोनों राजीव के सामने से गुज़रती हुई सीढ़ियों की ओर चली गईं।

राजीव ने अंदर जाकर अपना कोट पहना और चश्मा उठाकर निकल आया।

वह फ्लैट में ताला लगा ही रहा था कि उसे कामिनी की आवाज़ सुनाई दी। वह राजू को डांट रही थी।

"मैं इतनी देर से ढूंढ रही हूं और तू यहां खड़ा है ? जानती हूं उसी चुड़ैल के लिए खड़ा होगा। दिन-पर-दिन आज़ाद होता जा रहा है। मैं दो-तीन दिन में ही तेरा स्कूल में एडमीशन करा दूंगी।"

वह राजू का कान पकड़कर खींचती हुई अपने फ्लैट में ले गई।

राजीव ताला लगाकर नीचे उतर आया।

थोड़ी देर के बाद उसकी कार सड़क पर दौड़ रही थी।

आज वह और दिन की अपेक्षा कुछ जल्दी ही अपने फ्लैट से निकल गया था। इसलिए वह धीरे-धीरे कार चला रहा था। एक फुटपाथ पर उसे एक क्यू में गीता खड़ी दिखाई दी। क्यू बहुत बड़ा था और गीता बहुत पीछे थी। वह बार-बार बेचैनी से अपनी घड़ी देख रही थी।

कुछ सम्झकर राजीव ने कार की स्पीड सुस्त कर दी। और फिर फुटपाथ के पास पहुंचकर रोक दी। गीता ने उसकी ओर एक उचटती-सी निगाह डाली। और फिर दूसरी ओर देखने लगी। राजीव ने गीता को पुकारना चाहा। तभी पीछे से एक साथ आती हुई दों बसों के हॉर्न ने उसे चौंका दिया। वह कार को आगे बढ़ा ले गया।

वह पौने आठ बजे ही ऑफिस की बिल्डिंग के सामने पहुंच गया। उसने केन्टीन काउन्टर पर रुककर सिगरेट का एक पेकेट खरीदा और सिगरेट सुलगाकर धीरे-धीरे कश लेने लगा। फिर उसने एक प्याला चाय ली और वहीं खड़े-खड़े चाय पीने लगा। जब उसने चाय खत्म की तो आठ बजने में चार मिनट बाकी थे। उसने पैसे दिए और लिफ्ट की ओर बढ़ गया। संयोग से लिफ्ट नीचे ही मौजूद थी। लेकिन लिफ्ट चलाने वाला नहीं था।

राजीव जल्दी से लिफ्ट में चला गया। उसके पीछे ही एक साया-सा अंदर आया। राजीव ने पलटकर देखा। वह गीता थी। उसे देखकर वह एक पल के लिए ठिठका और फिर बोला—

"आपको कोई आपत्ति हो तो मैं बाहर चला जाऊं?"

"नहीं-नहीं। आप पहले आए हैं। आप पहले जाइए। मैं बाहर जाती हूं।"

गीता बाहर जाने लगी तो राजीव ने उसे रोक लिया।

"आप ठहरिए गीता जी।"

फिर उसने घड़ी देखी। आठ बजने में एक मिनट रह गया था।

"पता नहीं चपरासी कहां चला गया।" उसने कहा।

"उसे मैंने बाहर लेबोट्री में घुसते देखा था।" गीता बोली।

"ओह," राजीव ने हल्की-सी सांस ली और फिर खींचकर दरवाज़ा बन्द कर दिया। उसने थर्ड फ्लोर का बटन दबाया तो

लिफ्ट हल्का-सा झटका लेकर ऊपर उठने लगी। उसके मन में एक सुखद हूक जाग उठी।

लिफ्ट ऊपर चढ़ती रही।

पहली मंज़िल गुज़र गई।

लिफ्ट पहली और दूसरी मंज़िल के बीच में ही थी कि अचानक लिफ्ट की स्पीड धीमी पड़ गई। फिर हल्का-सा झटका लगा और लिफ्ट रुक गई और उसके साथ ही लिफ्ट में गहरा अंधेरा छा गया। गीता घबराकर बोली—

"यह क्या हो गया?"

"घबराइए नहीं। बिजली चली गई है। थोड़ी देर में आ जाएगी।" गीता खामोश खड़ी रही।

फिर राजीव ने कपड़ों की सरसराहट सुनी। शायद गीता दूसरी ओर खिसक रही थी। राजीव ने दूसरी ओर खिसकने की कोशिश की तो उसके जूतों की आहट हुई। और गीता ने घबराकर कहा—

"क्या बात है?"

"कुछ नहीं।"

राजीव ने इत्मीनान से कहा—

"आपको शायद डर लग रहा है।"

गीता ने कोई उत्तर नहीं दिया। अंधेरे में उसे घुटन महसूस हो रही थी। न जाने कब बिजली आए। ताज़ा हवा ठीक से नहीं आ रही थी। पास में ही राजीव खड़ा था। राजीव जो एक मर्द था। एक मर्द और एक औरत। एकान्त और अंधेरा और फिर घुटन—गीता का दम और अधिक घुटने लगा। वह अपना गला मसलने लगी। वह जानती थी कि वह एक कमज़ोर-सी लड़की है। दूसरी जगह होती तो चीखने पर दो-चार आदमी इकट्ठे हो जाते। लेकिन यहां तो—यहां तो...।

और फिर वह अपने दिल को ढारस देने लगी। ऐसा नहीं हो सकता— राजीव ऐसा आदमी नहीं है। उसे याद आया कि राजीव ने अनु को गिरने से बचाया था। और इस अहसान के बाद उसने आम आदमियों की तरह उसके निकट आने की कोई कोशिश नहीं की। उसने एक बार अनु को अपनी कार से स्कूल भी पहुंचाया था। और जब कामिनी ने उसे मारा था तो उसे बचाने वाला भी वही था।

उसकी आंखें अंधेरे में देखने में अब कुछ-कुछ अभ्यस्त हो गई थीं। उसने देखा राजीव एक कोने में चुपचाप खड़ा था। राजीव ने उसकी ओर देखा। सहमी हुई आंखें—चेहरे पर भय—और वह सोचने लगा—यह वही गीता है जिसे उसने एक अजनबी की कार से उतरते देखा था और जिसके कमरे में दिलीप पकड़ा गया था। इस समय कितनी सहमी हुई खड़ी है—यह एक मासूम बच्ची अनु की मां है।

अनु का ख्याल आते ही उसके चेहरे पर छिपा हुआ स्नेह झलक आया। और वह धीरे-से बोला—

"गीता जी, मैं आपसे एक बात कहना चाहता था।"

"जी?" गीता की आवाज़ कांप उठी।

एक भय एक आशंका—कहीं वह धारणा झूठी न निकले जो उसने राजीव के सम्बन्ध में बनाई थी।

राजीव ने धीरे से कहा—

"अनु बहुत प्यारी बच्ची है—उसे लापरवाही से सड़क पर भीड़भाड़ में न छोड़ दिया कीजिए।"

गीता ने हल्की-सी सांस ली। राजीव के लहज़े में सादगी थी। स्नेह था लेकिन गीता को गहरी घुटन का एहसास होने लगा। उसे ऐसा महसूस होने लगा था जैसे उसका दम घुट जाएगा। वह घबराकर राजीव की ओर थोड़ी-सी खिसक आई। राजीव ने चौंककर उसकी ओर देखा।

गीता ने गर्दन मसलते हुए कहा—

"बिजली अभी तक क्यों नहीं आई?"

"कभी-कभी देर लग जाती है। सप्लाई ऑफिस में कोई खराबी हो गई होगी।"

"मेरा तो दम घुटा जा रहा है," गीता ने तेज़-तेज़ सांस लेते हुए कहा।

"घबराइए नहीं। अपने आप को संभालिए।"

"मैं—मैं कहीं बेहोश न हो जाऊं।"

गीता की आंखों में सचमुच अंधेरा गहरा होने लगा। उसे चक्कर-सा आया। पहले वह दीवार से लग गई और जब अंधेरा और अधिक गहरा होने लगा तो सूनेपन का डर सांप बनकर उसके मस्तिष्क में रेंगने लगा और वह अन्धों की तरह बड़-बड़ाई—

"राजीव—राजीव ?"

"गीता जी अपने आपको संभालिए !"

लेकिन गीता ने टटोलकर राजीव का कन्धा थाम लिया। और उसका पूरा बदन कांपने लगा। वह एक नन्ही-सी भयग्रस्त बच्ची की तरह राजीव से लिपट गई। और राजीव—वह कुछ पल के लिए आश्चर्य से जैसे पत्थर बना खड़ा रह गया। जैसे उसकी समझ में ही न आ रहा हो कि यह क्या हो गया।

लेकिन थोड़ी देर के बाद जब सब कुछ उसकी समझ में आया तो उसके मस्तिष्क में चींटियां-सी रेंगने लगीं। बदन में गुदगुदी होने लगी। उसे स्वयं अपनी गर्म-गर्म सांसें भी नर्म और ठंडी हवा के झोंकों जैसी महसूस होने लगीं।

गीता के बदन की थरथरी कम नहीं हुई थी। लेकिन अब इस थरथरी में ऐसा सुख था जैसे एक भयभीय हिरणी को कोई आश्रय मिल जाएगा। एक विचित्र-सी सुखद अनुभूति। यह सब घबराहट और असमंजस की हालत में हुआ था। लेकिन अब उसे ऐसा लग रहा था जैसे बहुत दूर तक तपती धूप में चलते-चलते उसे अचानक हरे-भरे पेड़ों की घनी-ठंडी छांव मिल गई हो। और उसके प्राण सुख और शान्ति की गहराइयों में डूबते चले जा रहे हों।

और राजीव सोच रहा था यह गीता है। यह वही गीता है जो अवैध बच्ची अनु की मां है। कुवांरी मां। कितनी सहमी हुई कुवांरी थरथरी से कांप रही है। एक मासूम बच्ची की तरह उसकी सांसें अस्त-व्यस्त हैं और वही गीता है जिसे परिस्थितियों से टक्कर लेने के लिए कितनी शक्ति का प्रयोग करना पड़ रहा है।

उसकी आंखों के आगे वह दृश्य घूम गया जब कामिनी गीता को मार रही थी। एक सहानुभूति, स्नेह, दया और करुणा उसके मन में जाग उठी। उसने गीता को थोड़ा और कसकर थाम लिया जैसे उसने किसी भयभीत हिरणी को शिकारी से छिपाने के लिए अपनी बांहों में समेट लिया हो।

दोनों शायद यही सोच रहे थे कि ये थोड़ी-सी घड़ियां हज़ारों वर्षों में बदल जाएं। उनकी सांसों में सुबह की हवा की गन्ध और शीतलता उभर आई थी। उसकी आंखों के अंधेरों में रंग-बिरंगे सितारे जगमगा उठे थे।

और फिर अचानक मस्तिष्क की रोशनियां अंधेरों में बदल गईं और अंधेरा रोशनियों में बदल गया।

लिफ्ट की बत्ती झिलमिलाकर मुस्करा उठी। लिफ्ट ने एक नर्म से झटका लिया। और फ़िर उड़न-खटोले की तरह ऊपर उठने लगी। सारा ज़ादू समाप्त हो गया। दोनों चौंककर जाग गए। गीता कसमसाई और राजीव ने घबराकर उसके बदन से लिपटी अपनी बांहें हटा लीं।

गीता जल्दी से अलग हटकर खड़ी हो गई।

राजीव को ऐसा लगा जैसे वह बड़ी तेज़ी से हवा में उड़ता चला जा रहा है। उसने कनखियों से गीता की ओर देखा। उसका चेहरा गुलाब के फूल की तरह सुर्ख था।

एक हल्का-सा झटका लगा और लिफ्ट तीसरी मंज़िल पर रुक गई। राजीव ने बढ़कर दरवाज़ा खोल दिया।

सामने लिफ्टमेन खड़ा कह रहा था—

"बड़ी देर बंद रहना पड़ा आपको। इतनी देर के लिए कभी बिजली गई ही नहीं थी। पूरा घंटा हो गया।"

फिर जैसे ही राजीव के पीछे से गीता निकली लिफ्टमेन एकदम चुप हो गया। प्रदीप पास ही खड़ा सिगरेट के कश ले रहा था। वह अपनी विशिष्ट वेश भूषा में था। बेजोड़ कोट—पतलून—बेमेल नेकटाई। कमीज़ का कॉलर फटा हुआ था! दाढ़ी बनी हुई थी। यह अलग बात थी कि कहीं-कहीं बाल खुरचने से रह गए थे। जब से उसने वायदा किया था कि वह राजीव को शिकायत का मौका न देगा तब से वह रोज़ाना शेव बनाकर आता था।

राजीव और गीता को देखकर वह ठिठका और फिर उसके होंठों पर मुस्कराहट रेंग गई। उसने धीरे से कहा—

"हैलो सर—।"

"हैलो," राजीव ने गंभीरता से कहा और ऑफिस की ओर बढ़ गया।

रामलाल की आंखों में आज फिर पहले जैसी विद्रोह की भावना जाग उठी थी। वह अपनी मूछों पर ताव देते हुए कह रहा था, "देखा, मैनेजर साहब ने आते ही डिसिप्लेन का रौब झाड़ा था— आज वह खुद अब तक गायब हैं। अरे मारो, कुर्सियों पर बैठ-

कर हुक्म चलाने वाले कहीं डिसिप्लेन के पाबंद हो सकते हैं। यह सब हम क्लर्कों के लिए होता है। अब कोई जवाब मांगेगा मैनेजर साहब से।''

''हो सकता है वह आज आएं ही नहीं। तबियत भी तो खराब हो सकती है।'' एक दूसरे क्लर्क ने कहा।

''मैंने तो उनकी गाड़ी बाहर खड़ी देखी है। तुम लोग तो चूहों की तरह डरकर अंदर आ जाते हो। आज मुझे कुछ देर हो गई थी। मैं आठ बजकर दो मिनट पर आया था। मैंने कार खड़ी देखी थी। मेरा ख्याल है उस समय साहब केन्टीन में बैठे चाय या कॉफी पी रहे होंगे। मैनेजर साहब जो ठहरे।'' रामलाल ने व्यंग्य भरे स्वर में कहा।

ठीक उसी समय ऑफिस आ दरवाज़ा चपरासी ने खोला और राजीव अन्दर आया। सब लोग खड़े हो गए। रामलाल भी खड़ा हो गया लेकिन कुछ कहने की उसकी हिम्मत न हुई।

राजीव ने सब पर एक उचटती-सी नज़र डाली। उसके पीछे ही प्रदीप और गीता भी अन्दर आ गए। राजीव और गीता अपने-अपने केबिन में चले गए तो रामलाल ने प्रदीप से पूछा

''आप तो सिगरेट खरीदने नीचे गए थे। आपने इनकी गाड़ी देखी होगी।''

लेकिन जब प्रदीप ने वास्तविक घटना सुनाई तो रामलाल के चेहरे पर शर्मिन्दगी उभर आई। वह सिर झुकाकर काम में लग गया और प्रदीप अपने केबिन में चला आया। न जाने क्यों उसे ऐसा लगा कि गीता उससे नज़रें मिलाने से कतरा रही है। प्रदीप के होंठों पर एक खुश्क-सी मुस्कराहट दौड़ गई। जी चाहा कि एक ज़ोरदार कहकहा लगाए। लेकिन यह ऑफिस था। इसलिए वह चुपचाप सिगरेट की राख ऐसट्रे में झाड़ने लगा।

•

उस दिन राजीव की हालत अजीब-सी रही। कई बार उसका जी चाहा कि गीता को बिना काम के ही बुला ले। यूं ही डिक्टेशन देता रहे। लेकिन उसने काम होते हुए भी गीता को कम ही बुलाया। वह गीता का ख्याल अपने दिमाक से निकालने की निरंतर

कोशिश कर रहा था। लेकिन हर बार गीता का चित्र उसकी आंखों के आगे नाच उठता था- गीता का स्पर्श—गीता के दिल की धड़कनें—गीता की सांसें।

एक बार प्रदीप फाइल लेकर उसके पास आया। राजीव ने उसे बैठने को कहा। आज प्रदीप फिर बेचैन दिखाई दे रहा था। राजीव ने उसकी बेचैनी अनुभव की। वह फाइल देख रहा था। और प्रदीप किसी सोच में डूबा हुआ था।

वह राजीव का सिगरेट का पेकेट उठाकर उसमें से एक सिगरेट निकालने लगा। राजीव ने चौंककर उसकी ओर देखा और दूसरे ही पल प्रदीप चौंक पड़ा। उसने जल्दी से सिगरेट होंठों से निकालकर पैकेट में रखते हुए कहा —

"क्षमा कीज़िएगा—गलती हो गई।"

"कोई बात नहीं," राजीव ने धीरे-से कहा।

और फिर जब राजीव ने प्रदीप की एक गलती की ओर उसका ध्यान दिलाया तो प्रदीप का चेहरा फक पड़ गया। क्योंकि गलती असाधारण नहीं थी।

राजीव ने उसके चेहरे पर नज़रें जमाते हुए कहा—

"क्या करते हैं आप? क्या हो जाता है आपको? ज़रा सोचिए अगर इतनी बड़ी गलती मेरी निगाह से भी चूक जाए तो आपके साथ-साथ मेरी भी छुट्टी हो जाए। शायद यह तीसवीं बार आपकी गलती चैक कर रहा हूं।"

"म—म—माफ कीजिएगा म-म—माफी चाहता हूं," प्रदीप भर्राई आवाज़ में बोला, "कभी-कभी मेरा दिमाग काबू में नहीं रहता।"

"इससे ऑफिस को नुकसान पहुंच सकता है। आपको कम से कम ऑफिस में तो अपने दिमाग पर काबू रखना चाहिए।"

"मैजनेर साहब, ऑफिस में आते ही आदमी का व्यक्तित्व बदल जाता है या उसके चारों ओर परिस्थितियों ने जो ताने-बाने बुन रखे हैं उसकी रूपरेखा बदल जाती है।"

"फाइल को रिटेक कीजिए। और मुझसे ऑफिस टाइम के बाद मिलिए।"

प्रदीप चला गया। लेकिन उसके चेहरे की पीड़ा और बेचैनी राजीव से छिपी न रह सकी। लंच तक राजीव ने गीता को एक बार भी नहीं बुलाया। लंच से थोड़ी देर पहले एक बहुत ज़रूरी

पत्र डिक्टेड कराने के लिए उसे बुलवाया और जब वह ऑफिस में आई तो राजीव का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क उठा। लेकिन उसने जल्दी ही अपने दिल पर काबू पा लिया। गीता का चेहरा भी बार-बार रंग बदल रहा था।

उसने धीरे से कहा—

"बैठिए गीता जी।"

गीता बैठ गई। राजीव बड़ी सावधानी से पत्र डिक्टेड कराने लगा। लंच का समय शुरू होते ही गीता उठकर चली गई। राजीव उसे रोक न सका।

थोड़ी देर बाद राजीव केन्टीन में पहुंचा तो उसने ऑफिस के कई लोगों के साथ प्रदीप को खड़ा देखा जो उन्हें ट्विस्ट के पोज़ बनाकर दिखा रहा था। फिर उसने कुछ कहा और ऑफिस के अन्य लोग हंसने लगे। प्रदीप भी हंसता रहा और ट्विस्ट करता रहा।

राजीव उन लोगों के पास से गुज़र रहा था तो किसी ने प्रदीप को टोका। प्रदीप ठिठक गया। सब लोग बौखलाकर गम्भीर हो गए।

राजीव उन लोगों की ओर ध्यान दिए बिना उस हिस्से में चला गया जहां ऑफीसर्स लोग बैठा करते थे।

वेटर के आने पर राजीव ने प्रदीप का हुलिया बताकर उससे कहा कि वह जाकर उसे बुला लाए।

थोड़ी देर बाद प्रदीप बड़े अदब से उसके सामने खड़ा था।

"बैठिए," राजीव ने कहा।

प्रदीप के बैठने के बाद राजीव ने वेटर से दो जगह खाना लाने के लिए कहा। लेकिन प्रदीप ने इन्कार करते हुए कहा, "मुझे भूख नहीं है।"

राजीव के इशारे पर वेटर चला गया फिर उसने प्रदीप से कहा—

"यह कैसे हो सकता है कि सुबह से शाम तक आपको भूख ही न लगे।"

"कभी-कभी ऐसे पल भी आते हैं जब आदमी का जी चाहता है कि खाने को हाथ ही न लगाए।"

"इसका कोई कारण तो होता है।" राजीव ने प्रदीप की ओर सिगरेट का पैकेट बढ़ाते हुए कहा।

प्रदीप ने झिझककर राजीव से कहा—

"ऑफिस में हम लोग अफसर और मातहत हैं। लेकिन यह ऑफिस नहीं है। यहां मैंने आपको चाय पीने के लिए बुलाया है।"

प्रदीप ने सिगरेट ले ली।

राजीव ने अपनी और प्रदीप की सिगरेट सुलगाकर कहा—

"मैंने आपको इसलिए बुलाया है कि—जरा ठहरिए, आप इस ऑफिस में कितने वर्ष से हैं?"

"जब से होश संभाला है," प्रदीप मुस्करा पड़ा।

राजीव को ऐसा लगा जैसे प्रदीप उसका मज़ाक उड़ा रहा है।

"आप शायद मेरी बात को मज़ाक समझ रहे हैं। यह सच है। शायद आपको विश्वास न हो। मेरे पिता कैडवरी के शेयर-होल्डरों में से थे।"

"ओह।"

"उनके सबसे ज़्यादा शेयर थे। और जब वह ऑफिस में आते थे चपरासी से लेकर मैनेजर तक उनके आगे-पीछे हाथ बांधे फिरा करते थे।"

"और आप उनके बेटे हैं। उसी ऑफिस में असिस्टेन्ट मैनेजर—क्या यह एक ऐसी पहेली नहीं है जिसे आप खुद ही हल कर सकें।"

प्रदीप ने सिगरेट का कश लेकर धुआं छोड़ा और धीरे से बोला—

"मैं आज तक इस पहेली का हल नहीं खोज पाया हूं। ज़िन्दगी ही एक पहेली बनकर रह गई है अब तो।"

"मैं जानना चाहता हूं कि आपकी ज़िन्दगी पहेली बनकर क्यों रह गई है?"

"आपको मुझमें इतनी दिलचस्पी क्यों है—मैं तो आपका मातहत हूं।"

"मैं खुद नहीं समझ पाता—वैसे जहां तक अफसर—मातहत का प्रश्न है मैं इस रिश्ते को केवल ऑफिस तक ही मानता हूं। वहां भी मेरी और आपकी पोज़ीशन में केवल एक सीढ़ी का अन्तर है। सम्भव है आपके इस मानसिक असन्तुलन ने ही आपको उस सीढ़ी पर चढ़ने से रोका हो। आप अपने मातहत स्टाफ से जितने बेतकल्लुफ हैं उसे देखते हुए अगर यहां के मैनेजर बना दिए जाएं तो आपके ओहदे का रौब कोई भी नहीं मानेगा। आपने शायद

जान-बूझकर अपनी उन्नति के रास्ते की दीवारें खड़ी की हैं।"

"मैंने नहीं। मैनेजर साहब ।"

"एक मिनट," राजीव ने हाथ उठाकर कहा, "इस रूखे-सूखे सम्बोधन का प्रयोग आप ऑफिस में ही किया करें। मेरा नाम राजीव है हां फिर—।"

"मैं कह रहा था—ये दीवारें मैंने नहीं खड़ी की हैं। ये दीवारें तो अपने आप ही खड़ी होती चली जा रही हैं। अब से नहीं बहुत पहले से। शायद लगभग चार वर्ष से।"

एक पल के लिए प्रदीप रुका और फिर उसकी निगाहें शून्य में भटकने लगीं। और इस तरह बोलने लगा जैसे अपने आप से बोल रहा हो—

"ये दीवारें मेरे रास्ते में उठती जा रही हैं—बहुत पहले से—शायद मेरी शादी के बाद से—हां शादी के बाद से ही। शादी से पहले मैं भी एक खुशमिज़ाज और अल्हड़ स्टूडेन्ट था। मेरे हंसमुख स्वभाव के चर्चे कालेज़ भर में होते थे। कालेज़ की रंगीन तितलियां मेरे पीछे-पीछे दौड़ा करती थीं। फन्कशनों की जान समझा जाता था मुझे। और मेरी साथी तितलियां अपने आपको मेरी बांहों में समो देना अपने लिए गर्व समझती थीं। जिस लड़की के साथ मैं कुछ दिन रहता था वह बड़े गर्व से अपनी सहेलियों में मेरी चर्चा किया करती थी। और सिर ऊंचा करके मेरी इम्पाला कार में घूमा करती थी। मैं भी मस्त था। ज़िन्दगी की रंगीन धाराओं में बहता चला जा रहा था। मां—बाप का इकलौता बेटा था। पैसे की कोई कमी नहीं थी—ऐश ही ऐश थे।

"अचानक डैडी ने बताया कि उन्होंने मेरी शादी अपने एक मित्र की लड़की रीता के साथ तै कर दी है। मैंने रीता को देखने की इच्छा प्रकट की। रीता मुझे दिखा दी गई। इतनी सुन्दर थी वह लड़की कि मैं अपने आपको भाग्यशाली समझने लगा। खोई-खोई— सपने देखने वाली—जो कभी-कभी जागते में भी इस तरह चौंक पड़ती थी जैसे सोते-सोते जाग उठी हो। मुझे उसकी अदाएं बड़ी प्यारी लगीं।

"फिर हम दोनों का विवाह हो गया।

"मैं बहुत खुश था। पहली रात मैंने गीता को देखा तो मैं हर उस लड़की को उसकी तुलना में गया बीता समझने लगा। जो रीता से पहले ही मेरी बांहों में कसमसा चुकी थी। रीता वैसे ही

खोई-खोई सी थी मैं बात करता तो जैसे वह सुनती ही न थी। और ज़ोर-ज़ोर से पुकारते ही एकदम चौंक पड़ती थी। शुरू-शुरू में उसकी ये अदाएं मुझे बहुत ही प्यारी लगीं।

"लेकिन धीरे-धीरे वे अदाएं मुझे बोझ लगने लगीं। मेरे मन में प्रश्न उठने लगे कि शायद वह किसी के ख्यालों में खोई रहती है। पहले तो मैं अपने आपको समझाता रहा और इस ख्याल को भी पाप समझता रहा कि रीता किसी के ख्याल में खोई रहती है। लेकिन कहां तक ? रीता का यह हाल था कि उसे अपनी सुध-बुध ही न थी। हर घड़ी किसी के ख्याल में डूबी रहती थी। मेरा सूट निकालते-निकालते अपने कपड़े मुझे थमा देती। परिणाम यह हुआ कि दो-ढाई वर्ष के अंदर-अंदर सब कुछ सपना-सा हो गया। शेयर होल्डरों के मन में स्वार्थ पैदा हो गया। इम्पाला बेचकर शेयर खरीदें। कोठी बेचकर सारी पूंजी लगा दी। लेकिन भाग्य न पलटा। फिर इन लोगों ने एक शेयर होल्डर का बेटा समझकर असिस्टेंट मैनेजर की नौकरी दे दी। कभी-कभी गलतियां भी हो जाती हैं। लेकिन ये लोग उन्हें अनदेखा कर देते हैं क्योंकि इस फर्म की जड़ों में मेरे पिता का खून-पसीना भी है। मेरा खून-पसीना नहीं है। इसलिए मैं सिर्फ असिस्टेंट मैनेजर हूं। बहुत कोशिश करता हूं कि अपने आपको परिस्थितियों के सांचे में ढाल लूं। इसलिए हंसने-बोलने की कोशिश भी करता हूं। लेकिन जब भी ज़ोर से हंसता हूं ज़ख्मों के टांके टूटने लगते हैं आत्मा को धक्का-सा लगता है। और मेरे कहकहे दिल से उठने वाली टीसों में गुम हो जाते हैं।

"लेकिन रीता आज भी वैसी ही है। तीन वर्ष से हर शनिवार की शाम को मेरे घर पहुंचने से पहले वह घर से चली जाती है। और रात गए वापस आती है। शुरू-शुरू में मैंने सख्ती से पूछा कि वह कहां जाती है लेकिन उसने रो-रोकर बुरा हाल कर लिया। भगवान की मूर्ति के सामने जाकर कसम खाई कि वह अपने पति के विश्वास को ठेस नहीं पहुंचा रही है और न कभी पहुंचाएगी। मुझे विश्वास हो गया। मैंने कई बार छिप-छिपकर मालूम करने की कोशिश की है कि वह कहां जाती है लेकिन मैं मालूम नहीं कर पाया। वह घर से ऐसे समय निकलती है जब मैं घर पर नहीं होता। बहुत चौक्कनी होकर चलती है। एक बार मैंने पीछा करने की कोशिश की तो उसने मुझे देख लिया और अपनी सहेली के घर

जाकर लौट आई।"

राजीव चुपचाप बैठा प्रदीप की कहानी सुन रहा था। वेटर उन दोनों का खाना रख गया था। लेकिन राजीव को खाना खाने का ध्यान ही नहीं रहा।

"और अब तो ये सब बातें जैसे जीवन की दिनचर्या में सम्मिलित हो गई हैं।" प्रदीप ने कहा, "मैं हर समय उसे खोई-खोई देखता हूं और दिन भर संदेहों का ज़हर मेरी रगों में लावा बनकर दौड़ता रहता है। हर रात उसकी मासूमियत मुझे बहका देती है। दिल कहता है कि वह निर्दोष है, लेकिन हर सुबह बेचैनी का सन्देश ले आती है। और हर शनिवार मेरे लिए ऐसा होता है जैसे मुझे फांसी का हुक्म सुनाए जाने वाला हो। दिल में हल्की-सी यह आस भी रहती है कि इस शनिवार को शायद वह न गई हो। हो सकता है कि अगले शनिवार को भी न जाए। लेकिन ऐसा कभी नहीं होता। और जब वह घर से बाहर होती है मैं घर में बैठा-बैठा उसके विरुद्ध न जाने क्या-क्या निर्णय करता रहता हूं। लेकिन जब वह लौट आती है मेरे वे निर्णय न जाने कहां चले जाते हैं। यही है मेरी ज़िन्दगी। बेज़ार, बेचैन, और अविश्वास तथा संदेहों की आग में सुलगती हुई। घुटन भरी ज़िन्दगी। जैसे निचले धड़ को फालेज मार गई हो। लेकिन न जाने किस आस पर शरीर का ऊपरी भाग अपनी ज़िन्दगी को घसीटता फिर रहा हो। एक अपाहिज ज़िन्दगी को जिसमें कोई खुशी न हो।"

कहते-कहते प्रदीप की आवाज़ भर्रा गई और राजीव की आंखों में सहानुभूति और स्नेह सिमट आया।

"आपने कभी यह अनुमान लगाने की कोशिश भी की है कि रीता के इस रवैये के पीछे क्या रहस्य हो सकता है।" राजीव ने पूछा।

"अनुमान लगाने को अब रह ही क्या गया है," प्रदीप बोला, "कोई भी अनुमान लगा सकता है कि रीता किसी से प्रेम करती है। और सभी जानते हैं कि औरत अपना पहला प्यार कभी नहीं भूल सकती। रीता की शादी मेरे साथ शायद ज़बर्दस्ती की गई है। वह आज भी अपने प्रेमी को भुला नहीं पाई है।"

सोच में डूबा राजीव प्रदीप की ओर देखता रहा।

तभी वेटर आ गया और खाना देखकर बोला—

"साहब, आप लोगों का खाना ठंडा हो रहा है।"

"ओह," राजीव चौंक पड़ा, "बातों में ध्यान ही नहीं रहा। चलो प्रदीप शुरू करो। क्षमा करना, जबकि हम एक ही मेज़ पर खाना खा रहे हैं। एक-दूसरे के बीच यह औपचारिकता कुछ अजीब-सी लगती है।

शाम को राजीव ऑफिस से निकलकर लिफ्ट तक आया तो उसने गीता को सीढ़ियों की ओर जाते देखा। लिफ्ट ऊपर नहीं थी। ऑफिस के अन्य कर्मचारी भी सीढ़ियों की ओर जा रहे थे। उनके जाने का अंदाज़ ऐसा था जैसे वे कैद से छूटे हों। राजीव लिफ्ट के पास रुककर इन्तज़ार करने लगा।

लगभग दस मिनट के बाद लिफ्ट ऊपर आई।

थोड़ी देर बाद राजीव की कार सड़क पर दौड़ रही थी। जिस बस-स्टाप पर गीता खड़ी थी आज भी अन्य दिनों की तरह वहां काफी भीड़ थी आज भी अन्य दिनों की तरह वहां काफी भीड़ थी। गीता क्यू में सबसे पीछे थी।

राजीव ने गीता के पास पहुंचकर कार धीमी कर ली। अन्य दिनों के विरुद्ध आज गीता के चेहरे पर एक शर्मीली मुस्कराहट थिरक उठी। और लाज से पलकें नीचे झुक गईं। वह अपने सैंडिल की नोंक देखने लगी। इस हालत में वह बड़ी प्यारी लग रही थी। राजीव ने कार रोक ली और सरककर बोला

"गीता जी।"

लाज के बोझ से दबी-दबी पलकें उठीं और आंखों में लाज की लाली दौड़ गई।

"आइए, मैं आपको ले चलूं। यहां कब तक खड़ी रहेंगी।"

"रोज़ ही खड़ी रहती हूं।"

"मेरी कार रोज़ाना इस खूबसूरत बोझ को उठाने के लिए तैयार है।"

गीता का चेहरा रक्ताभ हो उठा।

"क्या अब भी यह ताकलुफ की दीवार नहीं टूटेगी।"

अचानक पीछे से बस के हॉर्न की आवाज़ सुनाई दी।

"जल्दी कीजिए। पीछे बस आ रही है।"

राजीव ने जल्दी से खिड़की खोल दी। गीता जल्दी से कार में आ बैठी। और फिर कार तेज़ी से दौड़ने लगी।

कुछ दूर जाने के बाद गीता ने कहा—

"राजीव, गाड़ी रोकिए।"

"क्यों ?"

"कोई मुझे आपकी गाड़ी में देख लेगा तो क्या कहेगा और आपके बारे में क्या सोचेगा ?"

"क्या सोचेगा ?" राजीव ने शरारत भरी मुस्कराहट के साथ पूछा।

"जी - यह —यह तो आप खुद ही सोचिए।"

"नहीं आप बताइए," राजीव ने स्पीड और बढ़ा दी।

"आप समझते क्यों नहीं," गीता ने बेचैनी से कहा।

"अच्छा ठहरिए, अभी फैसला हुआ जाता है," राजीव ने कहा, "वह सामने गुप्ता जी जा रहे हैं। मैं देखूंगा कि आपको मेरी गाड़ी में देखकर कल गुप्ता जी लोगों से क्या कहेंगे।"

इससे पहले कि गीता कुछ कहती कार तेज़ी से गुप्ता जी के बराबर से गुज़र गई। और गुप्ता जी ठिठककर एक चीख के साथ फुटपाथ पर जा गिरे। लेकिन उन्होंने अपने हाथ में दबी हुई कोई चीज़ नहीं गिरने दी। उसमें दवा की शीशियां भी थीं। राजीव ने घबराकर कार रोक दी और कार से उतरकर गुप्ता जी को उठाने की कोशिश करने लगा। गुप्ता जी कराहते हुए कह रहे थे—

"अरे राम- मार डाला रे- मार डाला।"

"क्षमा कीजिएगा," राजीव बोला।

"अरे राम राम राम। तुम कार वाले पहले आदमी को गिरा देते हो और फिर उसे उठाने की कोशिश करते हो। हाय राम, मुझसे तो एक कदम भी नहीं चला जा रहा। हाय मेरी घरवाली दवा के बिना तड़प रही होगी।"

और राजीव का सहारा लेकर कार की ओर बढ़ते हुए गुप्ता जी ने अपना चश्मा नाक की फुनगी पर से सरकाकर आंखों पर चढ़ाया और राजीव को पहचानकर हड़बड़ाकर बोले—

"अरे बाप रे—आज फिर—ग—ग गलत गाड़ी से टकरा गया म- म—माफ़ कीजिएगा मैनेजर साहब।"

और फिर वह अपनी खिसकती हुई पतलून संभालते हुए बड़ी तेज़ी से एक ओर को चलते चले गए। उन्होंने एक नज़र गीता पर भी डाली थी। लेकिन रुके नहीं। राजीव उनकी चाल को आश्चर्य से देख रहा था। क्योंकि कुछ देर पहले तो वह बुरी तरह लंगड़ा रहे थे। गीता हंसकर बोली—

"क्या देख रहे हैं राजीव बाबू, अब भी नहीं समझे आप?"

"मैं तो कुछ नहीं समझा, अचानक क्या जादू हो गया?"

राजीव ड्राईविंग सीट पर आ बैठा। गाड़ी चल पड़ी।

गीता हंसती हुई बोली—

"गुप्ता जी तो रोज़ाना ही किसी न किसी कार से इसी तरह टकरा जाते हैं और कार वाला घबराकर उन्हें घर तक पहुंचा देता है—और इस तरह बस के किराए के पैसे बच जाते हैं।"

राजीव ने कार की स्पीड बड़ा दी।

अचानक गीता घबराकर बोली—

"अरे, अरे, मुझे तो उतर जाने दीजिए।"

"अब गाड़ी चल पड़ी तो क्या करोगी उतरकर," राजीव ने मुस्कराकर गीता की ओर देखा।

"लोग बेकार ही आपको बदनाम कर देंगे। आप जानते नहीं हैं कि मैं क्या हूं और कैसी हूं।"

"मैं जानता हूं। तुम एक सुन्दर, स्वावलम्बी, आत्म-विश्वास से भरपूर और बहुत ही भोली-भाली लड़की हो।" राजीव ने कहा।

"आप बात को मज़ाक में टाल रहे हैं, राजीव बाबू।"

"बिल्कुल नहीं गीता," राजीव ने गम्भीरता से कहा, "यह एक सच्चाई है। मैं जानता हूं। अनु तुम्हारी बेटी है। ऐसी बेटी जिसका बाप कहलाने वाला कोई नहीं है। तुम एक कुवांरी मां हो। लेकिन जिस आत्म-विश्वास और साहस के साथ तुम एक मां का कर्त्तव्य निभा रही हो उससे स्पष्ट हो जाता है कि तुम अनु को अपनी किसी भूल का परिणाम नहीं समझतीं और अगर अनु तुम्हारी किसी भूल, गलती या बहकावे का परिणाम नहीं है तो इसका अर्थ यह भी है कि जिस आदमी ने शादी से पहले ही तुम्हें एक

बच्ची की मां बना दिया तुमने उससे विश्वास भरा भरपूर प्यार किया था। हो सकता है वह ऐसी नाज़ुक स्थिति में तुम्हें धोखा दे गया हो। उसने स्त्री और पुरुष की एक सम्मिलित गलती का सारा बोझ स्त्री के कन्धों पर ही डाल दिया हो। पुरुष तो बड़ी आसानी से अपना दामन बचा लेता है क्योंकि उसके पाप की निशानी पर उसके नाम की मुहर नहीं लगी होती। नारी चाहे तो वह भी इस बोझ को अपने कन्धों पर से उतारकर फेंक सकती है। लेकिन तुमने जिस साहस और दिलेरी के साथ इस बोझ को संभाल रखा है और इस बोझ के लिए तुम जिस तरह इस दुनिया से टक्कर ले रही हो यही सब कुछ तुम्हें ऐसी नारियों की पंक्ति में लाकर खड़ा कर देता है जिनके विश्वास और भरोसे पर पुरुषों को गर्व करना चाहिए।''

गीता चुपचाप सुनती रही और आश्चर्य से देखती रही। राजीव पहला पुरुष था जिसने उसके साहस को बढ़ावा दिया था। वह सोचने लगी इसके पीछे कोई लालच, कोई स्वार्थ तो नहीं है। नहीं। वहां तो एक पवित्र और निःस्वार्थ भावना बोल रही थी। जाने क्यों गीता का दिल भर आया। आंखें डबडबा गईं। उसने राजीव के कन्धे पर सिर टिका लिया।

राजीव उसकी पीठ थपथपाने लगा।

कुछ देर बाद जब कार 'सावित्री सदन' के पास पहुंची तो गीता सरककर बैठ गई। लेकिन अब उसके चेहरे पर वही शान्ति और दृढ़ता थी।

राजीव ने गाड़ी रोकी तो उसे सामने ही एक एम्बुलेन्स खड़ी दिखाई दी। राजीव और गीता दोनों चौंक पड़े। उन्होंने देखा चार आदमी मिसेज़ सिन्हा को स्ट्रेचर पर उठाकर ला रहे थे। उनके पीछे-पीछे सिन्हा भी था। दुखी और उदास-सा।

मिसेज़ सिन्हा को एम्बुलेन्स पर लादा जाने लगा।

राजीव सिन्हा के पास पहुंच गया। तभी ऊपर से अनु गीता को देखकर चिल्लाई—

''मम्मी—मम्मी—।''

और फिर सीढ़ियों की ओर दौड़ पड़ी।

राजीव ने सिन्हा से पूछा—

''मिस्टर आपकी मिसेज़ का क्या हुआ?''

''डि—डिलीवरी होने वाली है,'' सिन्हा ने चश्मा ठीक करते

हुए कहा।

"डाक्टर ने कहा है केस सीरियस है—सीरियस।"

राजीव ने जल्दी से कहा—

"हां—हां, सीरियस है—तो फिर।"

"फिर क्या?" सिन्हा ने कहा, "ऑपरेशन होगा। ऑपरेशन में जच्चा और बच्चा दोनों की जानों को खतरा है।—बहुत परेशान हूं मैं—सुमन के साथ मैं अस्पताल में नहीं रह सकता। कोई ऐसी औरत नहीं है जो इसके साथ रह सके। सुमन का दिल बहुत कमज़ोर है। और ऐसी तकलीफ में अपना कोई पास न हो तो इंसान वैसे ही अधमरा हो जाता है।"

गीता उसके पास खड़ी थी। उसने जल्दी से आगे बढ़कर कहा—

"मिस्टर सिन्हा, अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं रह जाऊं आपकी मिसेज़ के पास।"

"आप आप?" सिन्हा ने आश्चर्य से कहा।

"हां, मैं दो-तीन दिन की ऑफिस से छूट्टी ले लूंगी।"

"मैं—मैं—मेरी समझ में नहीं आ रहा कि क्या करूं? और क्या कहूं?"

तभी अनु मम्मी-मम्मी पुकारती हुई वहां पहुंच गई और गीता की टांगों से लिपट गई। गीता ने उसे उठाकर चूम लिया।

"मगर अनु?" सिन्हा ने कहा।

"अनु मेरे पास रह जाएगी।" राजीव जल्दी से बोला।

गीता ने चौंककर राजीव की ओर देखा।

राजीव ने दोनों हाथ फैलाकर बड़े प्यार से कहा—

"आओ बिटिया—हमारी गोद में आ जाओ।"

अनु के चेहरे पर उलझन दिखाई दी। उसने गीता की ओर देखा। गीता ने धीरे से कहा—

"जाओ बेटी।"

अनु जल्दी से राजीव की गोद में चली गई।

राजीव ने अनु को प्यार करके सीने से लिपटा लिया। न जाने क्यों उसे एक विचित्र-से सुख की अनुभूति होने लगी।

गीता ने अनु से कहा—

"देखो अनु, तुम एक-दो दिन राजीव बाबू के पास रहना।

इन्हें बिल्कुल परेशान न करना। और सुबह ही तैयार होकर स्कूल चली जाया करना।"

अनु ने बड़ी मासूमियत से 'हां' में गर्दन हिला दी।

गीता एम्बुलेन्स में मिसेज़ सिन्हा के पास जा बैठी। एम्बुलेंस चल पड़ी।

मिसेज़ सिन्हा बुरी तरह कराह रही थीं। बेचैनी से करवटें बदल रही थीं। मछली की तरह तड़प रही थीं।

गीता ने बड़े प्यार से उनके माथे पर हाथ फेरकर बिखरे हुए बाल हटाते हुए कहा

"धीरज और हिम्मत से काम लीजिए मिसेज़ सिन्हा।"

"हाय" मिसेज़ सिन्हा कराहकर बोली, "मैं—मैं आज—बचूंगी नहीं।"

गीता ने मिसेज़ सिन्हा का हाथ अपने हाथ में ले लिया। मिसेज़ सिन्हा ने अपने दोनों हाथों से गीता का हाथ पकड़ लिया। गीता उसे तसल्ली देती रही। मिसेज़ सिन्हा की तड़प और बेचैनी बढ़ती चली जा रही थी।

जब मिसेज़ सिन्हा को अस्पताल के प्राइवेट वार्ड में ले जाया गया तो तब भी वह गीता का हाथ कसकर पकड़े हुए थीं।

कई डाक्टरों ने मुआयने के बाद जब मिसेज़ सिन्हा को ऑपरेशन थिएटर की ओर ले जाया जा रहा था तो सिन्हा दीवार से टेक लगाए चुपचाप गुमसुम खड़ा था। जैसे उसकी समझ में ही न आ रहा हो कि ये सब कुछ क्या हो रहा है।

और जब मिसेज़ सिन्हा का स्ट्रेचर ऑपरेशन थिएटर में जा रहा था, तब भी वह बड़ी मजबूती से गीता का हाथ पकड़े हुए थीं और उसके होंठों से बस इतना निकला —

"माफ माफ कर देना मुझे गीता बहिन।"

और स्ट्रेचर अन्दर चला गया। गीता का हाथ थोड़ी दूर तक खिचा और फिर मिसेज़ सिन्हा के हाथ से छूट गया।

गीता का दिल बहुत ज़ोर से धड़क रहा था। चेहरे पर अज्ञात आशंकाएं घुमड़ रही थीं। वह धीरे-धीरे चलता हुई सिन्हा के पास

जा खड़ी हुई।

ठीक ग्यारह बजे ऑपरेशन थिएटर से एक नवजात शिशु के रोने की आवाज़ सुनाई दी। सिन्हा ने खड़े होते हुए दरवाज़े का ओर देखा। गीता बेचैनी से उधर देखनें लगी।

थोड़ी देर बाद दरवाज़ा खुला और डाक्टर मुंह लटकाए बाहर निकला। उसने सिन्हा के पास आकर उसके कन्धे पर हाथ रखा और दुख भरे स्वर में बोला —

"अफसोस है मिस्टर सिन्हा, हम बहुत कोशिश करने पर भी जच्चा को नहीं बचा सके।"

गीता हल्की-सी आहट से दीवार से लग गई और सिन्हा सन्नाटे में डूब गया। वह समझ न पा रहा था कि इस दुर्घटना पर रोए या हंसे। आज उसे कैद से मुक्ति मिली है या उसे किसी शानदार इमारत के बाहर धकेल दिया गया है।

सात वर्ष पहले उसकी शादी सुमन से हुई थी। एक बेजोड़ और बेमेल शादी। विवाहित जीवन के इन सात वर्षों में सुमन की ही प्रधानता रही थी। वह तो पत्नी का गुलाम बनकर रह गया था। वह सोच रहा था कि इस गुलामी से छुटकारा पाने पर खुश हो या पत्नी की मृत्यु पर शोक मनाए।

छः

राजीव ने अनु के पास से हटना चाहा लेकिन अनु ने कुनमुनाकर अपनी बांहें उसकी गर्दन में और भी कस लीं। राजीव को उस पर इतना प्यार आया कि वह उसे और चिपटाकर लेट गया। उसका जी चाह रहा था कि वह अनु का प्यारा-प्यारा मासूम चेहरा देखता रहे। यह गीता की नाजायज़ बेटी कहलाती थी। लेकिन राजीव सोच रहा था कि अनु के बदन के किस हिस्से पर नाजायज़ की छाप लगी हुई है ?/ जैसे और बच्चे होते हैं वैसी ही

अनु है।

अनु ने राजीव को बिल्कुल परेशान नहीं किया था। अपने आप स्कूल की यूनीफार्म उतारकर कपड़े बदल लिए थे। हाथ-मुंह धोकर बड़े सलीके से राजीव के साथ खाना खाया था। कुछ देर तक वह टहलती रही थी और फिर किताब लेकर पढ़ने बैठ गई थी। राजीव को अपना पाठ सुनाती रही थी और जब राजीव ने उसे सीधा लिटाया था तो वह उसके गले में बांहें डालकर लेट गई थी।

और तभी से राजीव के गले में बांहें डाले सो रही थी।

अचानक किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। राजीव चौंक पड़ा। उसने धीरे-से अनु को अलग किया और दरवाज़ा खोल दिया।

दरवाज़े पर वसन्ती खड़ी थी। उसने उसे मिसेज़ सिन्हा की मृत्यु की सूचना दी।

राजीव सन्नाटे में खड़ा रह गया।

कामिनी राजू को प्राइमरी स्कूल में दाखिला कराने आई थी। वह हेड मास्टर के कमरे में बैठी थी। फार्म आदि भर दिया था। फीस भी जमा कर दी थी।

"मेरा राजू बड़ा लाड़-प्यार का पाला हुआ है," उसने हेड-मास्टर ने कहा।

"आप चिन्ता न कीजिए। यहां बच्चों को बहुत ही मनोवैज्ञानिक ढंग से पढ़ाया जाता है।"

अचानक राजू ने चीखकर कहा—

"आ हा—अनु—।"

और फिर सहमकर मां की ओर देखने लगा।

"अनु—। कहां है अनु—? क्या वह भी इसी स्कूल में पढ़ती है?" कामिनी ने आश्चर्य से पूछा।

"यह लड़की भी यहीं पढ़ती है?"

"जी हां।" बहुत ही होनहार बच्ची है। अपनी क्लास में सबसे तेज है।"

"क्यों न होगी," कामिनी झटके से खड़ी होकर बोली, "एक होनहार मां की बेटी है ना। क्षमा कीजिए मैं अपने राजू का एडमीशन कैंसिल कराना चाहती हूं।"

"क्यों ?" हेड मास्टर ने आश्चर्य से पूछा।

"जिस स्कूल में हरामी के बच्चे भी पढ़ते हों मैं उस स्कूल में अपने बच्चे को दाखिला कराकर गन्दगी में नहीं झोंकना चाहती।"

"मम्मी, "राजू ने पूछा," ये हरामी के बच्चे कैसे होते हैं।"

"चुप रहो।"

"मैं आपका मतलब नहीं समझा ?" हेड मास्टर ने आश्चर्य से कहा।

"आ हा, क्या आपको अनु की मां ने बताया नहीं कि अनु एक कुंवारी मां की बेटी है।"

हेड मास्टर आश्चर्य से आंखें फाड़े उसे देखता रह गया। फिर उसने बड़ी खूंखार नज़रों से अनु की ओर देखा। अनु सहमकर वहां से भाग गई।

कामिनी ने राजू की बांह पकड़कर कहा—

"चलो बेटा, तुम्हें किसी और स्कूल में दाखिल कराऊंगी।"

"ठहरिए," हेड मास्टर ने उठते हुए कहा, "इस बात का हमें पता नहीं था।"

कामिनी ठहर गई।

अनु बाहर बच्चों के साथ खेल रही थी।

हेड मास्टर ने बाहर आकर अनु को डांटकर पुकारा—

"ऐ अनु - चलो इधर।"

अनु सहम गई। उसकी मासूम आंखों में भय की छाया डोल उठी। वह धीरे-धीरे लुढ़कने के अन्दाज़ में चलती हुई हेड मास्टर के पास आ गई। हेड मास्टर ने उसे घूरकर देखते हुए एक ओर इशारा करते हुए कहा—

"चलो, उधर बैठो अलग जाकर— खबरदार जो किसी बच्चे से बात की।"

अनु सहमी हुई मासूम कदम उठाती हुई एक ओर जाकर बैठ गई। उसके साथी बच्चे दूर खड़े थे। वे आश्चर्य से कभी अनु को देखते और कभी हेड मास्टर को।

हेड मास्टर ने बच्चों को डांटकर कहा—

"खबरदार, अगर किसी ने अनु के साथ खेलने की कोशिश की तो उसे स्कूल से निकाल दिया जाएगा।"

अनु सहमी-सहमी-सी कभी उन बच्चों की ओर देखती और कभी हेड मास्टर को। और फिर कामिनी की ओर देखने लगती।

कामिनी विजय गर्व से गर्दन अकड़ाकर बोली —

"मेरा राजू तभी दाखिल होगा जब यह हराम की बच्ची यहां से चली जाएगी।"

"आप मेरे साथ आइए।"

हेड मास्टर उसे ऑफिस में ले गया।

राजू बड़ी हसरत से अनु को देख रहा था। और अनु के साथी राजू को बड़े गुस्से से देख रहे थे।

एक लड़की ने कहा —

"हमारे साथ खेलने से हेड मास्टर जी ने अनु को मना कर दिया है।"

"अनु तो बहुत अच्छी है। कभी किसी से झगड़ा नहीं करती। अगर कोई लड़ता है तो उसे फौरन मना लेती है।"

"जो चीज़ लाती है सबको बांटकर खाती है।"

"उस दिन टैस्ट हो रहे थे। श्यामा के पास कलम नहीं थी। वह रोने लगी। अनु ने उसे चुप कराया और अपना कलम उसे दे दिया।"

"इतनी अच्छी है हमारी अनु। फिर भी हेड मास्टर जी इसे डांट रहे हैं।"

"पहले तो कभी नहीं डांटते थे। इस लड़के की मां ने कुछ कहा है।" एक लड़के ने राजू की ओर इशारा किया।

"कह रही थी अगर अनु यहां पढ़ेगी तो राजू यहां नहीं पढ़ेगा।"

"ठहर जाओ। मैं देखता हूं। इस राजू के बच्चे को," एक लड़का आस्तीनें चढ़ाते हुए बोला। उसने इशारे से राजू को बुलाया।

राजू पास आ गया तो उसने पूछा—

"क्यों जी, अगर तुम यहां पढ़ोगे तो अनु नहीं पढ़ेगी ?"

"मुझे पता नहीं। मम्मी कहती हैं।"

"क्यों कहती हैं तुम्हारी मम्मी ?"

"कहती हैं अनु हराम की बच्ची है।"

"हराम की बच्ची?"

सब आश्चर्य से एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

"यह हराम की बच्ची कैसी होती है? अनु तो बिल्कुल हमारे जैसी है। बल्कि हम सबसे अच्छी है। हमसे ज़्यादा साफ़-सुथरी है। किसी से लड़ती-झगड़ती नहीं है।"

"वह तो मुझसे भी नहीं लड़ती। मैं खुद उसके साथ खेलना चाहता हूं मगर मम्मी रोकती हैं।"

"मम्मी रोकती है," उस लड़के ने गर्दन हिलाई, "मम्मी के बच्चे—बड़ा मासूम बनता है। अगर अनु यहां नहीं पढ़ेगी तो हम तुझे भी यहां पढ़ने नहीं देंगे।"

और उस लड़के ने राजू का गिरेबान पकड़कर उसे मारना शुरू कर दिया। फिर सारे बच्चे उस पर पिल पड़े।

अनु ने देखा तो चिल्लाती हुई दौड़ी—

"नहीं-नहीं, राजू को मत मारो राजू को मत मारो।"

राजू ज़ोर-ज़ोर से मम्मी-मम्मी चिल्लाने लगा।

कामिनी भागती हुई बाहर आ गई। उसके पीछे-पीछे हेड मास्टर भी बाहर आ गया।

अनु ने एक-एक कर सारे बच्चों को अलग कर दिया। राजू गिर पड़ा था। उसके मुंह से खून निकल रहा था।

अनु सिसकियां भर-भरकर उसका खून पोंछती हुई कह रही थी, "राजू राजू—।"

"अरे मार डाला मेरे बच्चे को।"

कामिनी सीना पीटती हुई चिल्लाई और उसने दौड़कर अनु के बाल पकड़कर झटके से उठाया और मुंह पर चांटा मारकर बोली—

"कम्बख्त मेरे बच्चे की जान की दुश्मन बन गई है।"

वह दूसरा चांटा मारने ही वाली थी कि हेड मास्टर ने आकर उसे रोक लिया। और अप्रसन्नता से बोला –

"यह क्या कर रही हैं आप? स्कूल के अंदर आप किसी बच्चे पर हाथ नहीं उठा सकतीं।"

"अरे, इसने मेरे बच्चे को पिटवाया है। दुश्मन है यह राजू की।"

"क्यों बच्चो, तुमने क्यों पीटा था इस लड़के को।" हेड मास्टर ने गुस्से से कहा।

"हमने सुना था। इसकी वजह से अनु को स्कूल से निकाला जा रहा है।" एक लड़के ने सहमकर कहा।

"सुना आपने," कामिनी दहाड़ी, "इसीलिए इस कम्बख्त ने मेरे बच्चे को पिटवाया है।"

"नहीं मम्मी, अनु ने मुझे नहीं पिटवाया," राजू ने मुंह पोंछते हुए कहा, "अनु ने तो मुझे बचाया है इन सबसे।"

"चुप रह कमीने, अब झूठ भी बोलने लगा," कामिनी ने राजू पर चांटा उठाया। हेड मास्टर ने उसे रोककर कहा -

"आप यहां किसी बच्चे पर हाथ नहीं उठा सकतीं, मैडम।"

अनु फिर वहीं जा बैठी। और चुपके-चुपके रोने लगी।

राजीव फ्लैट का ताला लगाकर मुड़ा ही था कि गीता और अनु को देखकर ठिठक गया।

"अरे, तुम्हें कैसे पता चला कि मैं तुम्हें ही लेने आ रहा था—और अनु स्कूल नहीं गई।"

"जी—?"

"अरे भई, ऑफिस बंद है न दो दिन के लिए। एक शेयर-होल्डर की अचानक मृत्यु हो जाने के कारण। मैंने सोचा फ्लैट में पड़े-पड़े क्या करूंगा। कहीं घूम-फिर आएंगे। आज का मौसम भी बहुत अच्छा है। देख रही हो। ये उठी-उठी घटाएं—ठंडी-ठंडी हवाओं के धीमे-धीमे झोंके।"

"राजीव बाबू," गीता ने धीरे से कहा, "मैं अनु के स्कूल जा रही हूं।"

"क्यों ?"

"अनु को स्कूल से निकाल दिया गया है।"

"क्यों ?" राजीव एकदम गंभीर हो उठा।

"इसलिए कि वह एक कुंवारी मां की बेटी है। जिसके बाप को कोई नहीं जानता।"

राजीव सन्नाटे में खड़ा रह गया और फिर धीरे से बोला—"मैं भी तुम्हारे साथ चल रहा हूं।"

उसी समय कामिनी राजू को लेकर अपने फ्लैट से निकली और उन्हें देखकर गर्दन झटककर ताला बंद करने लगी।

राजीव गीता और अनु के साथ सीढ़ियों की ओर चल दिया।

थोड़ी देर बाद गीता और अनु को अपनी कार में लेकर स्कूल की ओर जा रहा था।

स्कूल के अहाते में पहले कामिनी की कार पहुंची और फिर राजीव की कार पहुंची।

कामिनी राजू को लेकर उतरी। राजू के गले में बस्ता लटक रहा था। और वह मुड़-मुड़कर अनु को देख रहा था। कामिनी विजय गर्व से गर्दन उठाए जा रही थी।

थोड़ी देर के बाद हेड मास्टर के कमरे में राजीव, गीता, अनु के अलावा कामिनी और राजू भी मौजूद थे। बच्चों ने अनु को देख लिया था। वे ऑफिस के बाहर आकर इकट्ठे हो गए थे।

"फर्माइए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?" हेड मास्टर ने गीता की ओर देखकर पूछा।

"मैं आपसे सिर्फ इतना पूछना चाहती हूं कि अनु का नाम स्कूल से क्यों काटा गया है।"

"देखिए श्रीमती जी, हम यह बताकर आपको बेकार शर्मिन्दा नहीं करना चाहते। बस इतना ही कह देना चाहते हैं कि इस स्कूल में शरीफ और इज़्ज़तदार घरानों के बच्चे ही पढ़ते हैं। और हम उनके चरित्र को बरबाद नहीं कर सकते।"

"खूब," गीता ने कड़वी मुस्कराहट के साथ कहा, "ज़रा मुझे बताइए कि अनु के साथ पढ़ने वाले बच्चों का चरित्र किस तरह बर्बाद हो रहा है। अनु उन्हें चोरी करना सिखाती है? आवारा बनाती है? या और कोई बुरा काम सिखाती है। या इन्हें पढ़ने और अच्छी बातें सीखने से रोकती है?"

"मैं आपको अब क्या बताऊं? जब ये बच्चे कुछ समझदार होंगे और इन्हें पता चलेगा कि वे एक नाजायज़ लड़की के साथ पढ़ते थे तो इन पर क्या असर पड़ेगा?"

"कौन बताएगा इन्हें कि यह बच्ची नाजायज़ है। इन्हें यह कौन बताएगा नाजायज़ क्या है और जायज़ क्या है? आप ही बताएंगे न? तो क्या यह एक बच्ची के साथ अन्याय नहीं होगा। इस बच्ची को ज़रा ध्यान से देखिए। इसके माथे पर कहीं लिखा है यह नाजायज़ बच्ची है? क्या नाजायज़ बच्चों की शक्ल-सूरत और हरकतों में कोई अनोखी बात होती है? मेरी अनु भी दूसरे बच्चों की तरह भोली-भाली और मासूम बच्ची है जिसे पता ही नहीं कि जायज़ और नाजायज़ में क्या अन्तर होता है। मैं जानती हूं कि अनु को अपने मां-बाप की भूल का दंड आप क्यों देना चाहते हैं? स्कूल बच्चों को अच्छी आदतें सिखाने के लिए होता है, यह सिखाने के लिए नहीं होता कि कौन जायज़ है और कौन नाजायज़ है। आप एक मासूम बच्ची का भविष्य क्यों बिगाड़ रहे हैं।"

गीता बोल रही थी और राजीव आश्चर्य से उसका चेहरा देख रहा था।

कामिनी की आंखों में घृणा थी। और हेड मास्टर उकताया-सा बैठा था।

उसने उकताए हुए स्वर में कहा—

"आपकी सारी बहस बेकार है मैडम। हम अनु को यहां नहीं रख सकते।"

"क्यों नहीं रख सकते?" गीता उत्तेजित होकर खड़ी हो गई, "कौन-सा रोकता है आपको अनु को यहां पढ़ाने से? मुझे भारतीय संविधान की कोई भी ऐसी धारा दिखा दीजिए जिसमें किसी बच्चे को केवल इसलिए शिक्षा से वंचित किया गया है जिसका पिता अज्ञात हो?"

"देखिए मैडम—।"

"मैं अपनी बच्ची के अधिकारों के लिए आखिरी सांस तक लड़ूंगी। प्रान्तीय और केन्द्रीय शिक्षा मंत्री को लिखूंगी। और तब तक चैन की सांस नहीं लूंगी जब तक कि अनु इस स्कूल में दाखिल न हो जाएगी। समझे आप?"

गीता ने इतना ज़ोर से मेज़ पर हाथ मारा कि हेड मास्टर हड़बड़ाकर पीछे हट गया।

फिर उसने अनु का हाथ पकड़कर कहा—

"चलो बेटी, न्याय पाने के लिए आदमी क़ो अनथक मेहनत करनी पड़ती है।"

राजीव गीता और अनु के पीछे-पीछे बाहर निकल आया।

बरामदे में,बहुत सारे बच्चे खड़े थे। उन्होंने अनु और गीता का रास्ता रोक रखा था। गीता ने सब बच्चों पर नज़र डालकर कहा—

"तुम्हारी अनु जा रही है बच्चो, इसके लिए दुआ करो कि इसे अपने अधिकार पाने में सफलता मिल जाए। और यह फिर तुम्हारे साथ पढ़े।"

"नहीं, अनु नहीं जाएगी," एक बच्चे ने आगे बढ़कर कहा, "अनु हमारे साथ पढ़ेगी।"

हेड मास्टर, कामिनी और राजू भी बाहर निकल आए थे और बच्चों को बड़े आश्चर्य से देख रहे थे।

हेड मास्टर, ने ऊंची आवाज़ में बच्चों से कहा—

"अपनी-अपनी क्लास में जाओ बच्चो।"

"नहीं, हम नहीं जायेंगे। पहले अनु जाएगी।"

"अनु अब यहां नहीं पढ़ेगी।"

"अनु नहीं पढ़ेगी तो हम भी नहीं पढ़ेंगे।"

हेड मास्टर परेशान हो उठा। उसने कहा—

"मैं अभी तुम्हारे मां-बाप को बुलवाऊंगा।"

"बुलवा लीजिए। हमारा फैसला तब भी नहीं बदलेगा। अनु इसी स्कूल में पढ़ेगी।"

राजू ने चुपके से कामिनी की ओर देखा और फिर चुपके से बच्चों के साथ जा खड़ा हुआ। वह भी बच्चों के साथ चीखने लगा—

"अनु इसी स्कूल में पढ़ेगी।"

कामिनी ने राजू को पुकारा लेकिन राजू चीखता रहा।

कामिनी हेड मास्टर के साथ उसके ऑफिस की ओर खिसकती हुई बोली—

"देखा आपने—दोनों मां-बेटी जादूगरनी हैं—जादूगरनी। जादू कर देती हैं आदमी पर।"

"व्यवहार सबसे बड़ा जादू होता है मैडम," हेड मास्टर ने बुरा-सा मुंह बनाकर कहा।

"अनु को सारे बच्चे बहुत प्यार करते हैं। और बच्चे थोड़े ही जानते है कि जायज़ और नाजायज़ औलाद क्या होती है। बच्चे तो केवल अच्छे व्यवहार और स्नेह को जानते हैं।"

और फिर उन्होंने रिसीवर उठा लिया।

"यह—यह क्या कह रहे हैं आप।"

"मामला मेरे हाथ से निकल गया है मैडम। ये तो मासूम बच्चे हैं। अनु के प्यार और व्यवहार ने इनके दिल में घर कर लिया है। ये अगर अपनी ज़िद पर अड़ गए तो इन्हें मनाना असम्भव हो जाएगा। अपने मां-बाप की भी नहीं सुनेंगे। गीता देवी ने शिक्षा मंत्री को लिख दिया और दूसरे स्कूलों में यह बात पहुंच गई तो सारे बच्चे मेरे स्कूल पर चढ़ दौड़ेंगे। फिर क्या पुलिस को बुलवाकर इन मासूम बच्चों पर गोलियां चलवाऊंगा। और अगर शिक्षा मंत्री की ओर से पूछा गया तो क्या उत्तर दूंगा।"

"फिर आप क्या कर रहे हैं।"

"बच्चों के मां-बाप को बुला रहा हूं।"

दोपहर तक स्कूल के बरामदे में बच्चों के मां-बाप की भीड़ लग गई।

बच्चे ग्राऊंड में खड़े नारे लगा रहे थे—

"अनु पढ़ेगी तो हम भी पढ़ेंगे—अनु नहीं पढ़ेगी तो हम भी नहीं पढ़ेंगे।"

"अनु हमारी साथी है।"

बच्चों के मां-बाप परेशान थे। एक-दो ने बच्चों को मारने की कोशिश की तो दूसरे बच्चे उन्हें छुड़ाकर ले गए। मास्टरों ने भी उन्हें मारने से रोक दिया था। बच्चों के मां-बाप ने अनु को भी देखा और गीता को भी।

"बच्ची तो बड़ी प्यारी और मासूम है," एक औरत बोली।

"बच्चे तो मासूम ही होते हैं। वे क्या जानें कि वे मां-बाप की किस करतूत का परिणाम हैं।"

"लेकिन हरामी तो हरामी ही होता है," एक आदमी ने

कहा।

"यह बात आप इसलिए कह रहे हैं कि आप मर्द हैं।" उसकी पत्नी बोली, "अगर आपने किसी बच्चे को नौ महीने पेट में रखा होता और उसे पैदा करने में मौत से लड़े होते तो चीख-चीखकर कहते कि बच्चा नारी की एक ऐसी कृति है जिस पर हराम या हलाल का लेबिल लगाना नारी के बलिदानों का अपमान करता है।"

थोड़ी देर बाद बच्चों के मां-बाप ने हेड मास्टर से कहा, "हमारा ख्याल है अनु के यहां पढ़ने में कोई हर्ज नहीं है।"

"जिस लड़की को इतने बच्चे प्यार करते हैं वह बहुत अच्छी लड़की होगी। उसे फिर दाखिल कर लीजिए।"

"अनु के माथे पर तो नहीं लिखा कि वह हरामी है। बस इतना ध्यान रखिए, हमारे बच्चों के आगे अनु को कोई हरामी न कहे। आप अनु को फिर दाखिल कर लीजिए।"

थोड़ी देर बाद हेड मास्टर ने बरामदे में आकर बच्चों से कहा—

"सुनो बच्चो, शान्ति से सुनो। अनु तुम लोगों के साथ ही पढ़ेगी। अब तुम अपनी-अपनी क्लासों में जाओ।"

बच्चों ने खुशी से तालियां बजाईं। और राजू तथा कुछ अन्य बच्चे अनु को गोद में उठाकर ले गए।

गीता ने इत्मीनान की सांस ली और अपनी भीगी आंखों को पोंछने लगी।

जब हेड मास्टर ने गीता को अन्दर बुलाया तो कामिनी झटके से बाहर निकलती चली गई।

हेड मास्टर ने गीता और राजीव को बैठाते हुए कहा—

"आप जीत गईं और मैं हार गया।"

"नहीं हेड मास्टर साहब, न मैं जीती और न आप हारे। यह जीत तो अनु के अधिकारों की है—अगर मां-बाप हत्यारे हों तो आप उनके बच्चों को फांसी पर नहीं चढ़ा सकते।—अगर कुम्हार गन्दी मिट्टी से भगवान की मूर्ति बना दे तो आप उसे मूर्ति नहीं कहेंगे।"

हेड मास्टर चुपचाप बैठा गीता के तमतमाए बिजली चेहरे की चमक और आंखों की ज्योति देख रहा था। और न जाने क्यों उसे

अपने मन में एक विचित्र-सी अनुभूति हो रही थी। उसे ऐसा लग रहा था कि यह जीत गीता की नहीं स्वयं उसी की है।

हेड मास्टर के कमरे से निकलकर वे दोनों कार की ओर बढ़ तो एक बच्चे के मां-बाप ने उन्हें देखा। बाप ने धीरे-से कहा—

"जोड़ी कितनी सुन्दर है।"

मां ने गीता से पूछा।

"अनु आपकी बच्ची है?"

"जी हां।"

बच्चे की मां ने गीता और राजीव को ऊपर से नीचे तक देख कर कहा—

"तो अब आप लोग शादी क्यों नहीं कर लेते।"

गीता बुरी तरह गड़बड़ा गई। उसने घबराकर राजीव की ओर देखा और राजीव के शान्त चेहरे पर सन्तुष्टि भरी मुस्कराहट दौड़ गई। गीता जल्दी-जल्दी उंगलियों पर आंचल लपेटने लगी।

राजीव ने उस स्त्री से कहा—

"अब दीवारें टूट चुकी हैं। हम लोग बहुत जल्दी शादी ।"

गीता ने कुछ कहना चाहा लेकिन राजीव ने उसकी बांह पकड़कर कहा, "चलो गीता देर हो रही है।"

कुछ देर बाद राजीव की कार स्कूल के फाटक से बाहर निकल रही थी। गीता चुपचाप बैठी सामने की ओर देख रही थी।

राजीव ने कार की स्पीड तेज़ करते हुए कहा—

"गीता।"

"आं- ।" गीता चौंक पड़ी।

"क्या सोचने लगीं।"

"कुछ नहीं," गीता ने ठंडी सांस ली।

"नहीं- तुम कुछ सोच ज़रूर रही हो।"

राजीव ने गीता को कंधों से पकड़कर अपनी ओर खिसका लिया और बोला—

"मैं बताऊं तुम क्या सोच रही हो। इस समय तुम्हारी कल्पना में एक छोटा-सा घर है जिसमें एक छोटा-सा किचन है। एक सुन्दर-सा बाथरूम। उसके अन्दर एक ड्रेसिंगरूम। डाइनिंग टेबुल। छोटा-सा टिफिन रूम। इसके अलावा एक छोटा-सा कमरा

जिसमें अनु की छोटी-सी मेज़-कुर्सी। किताबों की अलमारी और छोटा-सा बिस्तर है। अनु चुपचाप बैठी पढ़ रही है और तुम अपने बेडरूम में हो। उस बेडरूम में दो बिस्तर हैं एक तुम्हारा और दूसरा अनु के पिता का।"

गीता कुछ सपना देख रही थी। और जब राजीव ने अनु के बाप का नाम लिया तो वह सुबक पड़ी। राजीव ने उसके बालों पर हाथ फेरते हुए कहा

"तुमने यही सब समने देखे होंगे जब अनु पैदा नहीं हुई होगी या होने वाली होगी। तुम्हारा रास्ता बहुत कठिन है। लेकिन तुम उस पर बड़ी दृढ़ता से बढ़ी चली जा रही हो। मैं जब भी तुम्हारे हौसले देखता हूं न जाने क्यों मेरा सिर गर्व से ऊंचा हो जाता है। और जब यह सोचता हूं कि तुम्हें किसी पुरुष ने यह कांटों भरा बोझ उठाने के लिए अकेला छोड़ दिया है तो सारी पुरुष जाति पर गुस्सा आने लगता है। तुम सुन रही हो न गीता—।"

"ऐं—हां सुन रही हूं, राजीव बाबू। सब कुछ सुन रही हूं।"

"तुमने कभी यह भी सोचा है कि इस भारी बोझ के साथ तुम कितनी दूर तक चल सकोगी।"

"जब तक आखिरी सांस है।"

"आखिरी सांस तो कोई भी हो सकती है। भगवान न करें तुम्हारी कोई भी ऐसी सांस अन्तिम सांस हो सकती है। जिस समय अनु के जीवन को किसी महत्वपूर्ण परिस्थिति में तुम्हारी आवश्यकता हुई तो तुम क्या करोगी।"

"मैं अनु के अधिकारों के लिए भी भगवान से भी लड़ जाऊंगी।"

"और अगर इसकी नौबत ही न आने दी जाए।"

"जी?"

"सुनो गीता, तुमने कभी जो सुहाने सपने देखे हैं उन सपनों में अनु के पिता का स्थान मुझे दे दो।"

"राजीव बाबू।"

"हां गीता, इसके बाद तुम अकेली न होगी। यह बोझ हम दोनों मिलकर उठाएंगे। कभी कहीं से यह आवाज़ आएगी कि अनु का पिता कोई नहीं तो मैं अनु के कानों तक यह आवाज़ पहुंचाऊंगा

कि मैं हूं अनु का बाप। तुम्हें दुनिया से बस इतना ही मतलब होगा कि हम दुनिया में रहते हैं। लेकिन अनु से हमारा गहरा सम्बन्ध होगा। हमें तो अनु के कानों तक यह आवाज़ पहुंचने से रोकना है कि उसका बाप कोई नहीं है।''

''नहीं राजीव बाबू, यह नहीं हो सकता।''

''क्यों नहीं हो सकता?''

''अनु किसी और की भूल का परिणाम है। मैं नहीं चाहती कि इस भूल का दंड आपको भोगना पड़े।''

''पगली—अगर पूजा भी एक दंड है तो मैं यह दंड भोगने के लिए तैयार हूं। क्या यह भगवान की पूजा नहीं है कि एक बच्ची को बाप दे दिया जाए। तुम स्वयं सोचो। अनु ने कभी समझदार होकर तुमसे पूछा कि उसका बाप कहां है तो तुम क्या उत्तर दोगी?''

गीता ने बेचैनी से पहलू बदलकर कहा—

''नहीं राजीव बाबू भगवान के लिए मेरे दिमाग में ऐसे प्रश्न न जगाइए जिनके उत्तर अक्ल न दे सके। तब मैं अपने कर्त्तव्य से बहक जाऊंगी। और इस समय मेरा एकमात्र कर्त्तव्य अपनी अनु के भविष्य को संवारना है। इसे अंधेरों से निकालकर रोशनी में लाना है।''

''लेकिन यह काम हम दोनों भी मिलकर कर सकते हैं।''

''बहुत कठिन है राजीव बाबू—बहुत कठिन है। इंसान अपनी भट्ठी के पास बैठकर तो अपनी खाल तक जला लेता है लेकिन पराई आग की गर्मी भी उसे बुरी लगती है। आज आप जोश में यह सब कह रहे हैं। कल हम दोनों एक हो गए और अनु को पिता मिल गया तो क्या यह ज़रूरी है कि मेरी गोद न भरे। और फिर जब आप अपने बच्चों के बीच एक ऐसी बच्ची को देखेंगे जो आपकी बच्ची नहीं है तो क्या आपको अपने दिल और दिमाग में एक चुभन-सी महसूस न होगी? क्या आप अनु को वही स्थान दे सकेंगे जो अपनी सन्तान को देंगे? नहीं राजीव बाबू, यह कभी नहीं हो सकता। मैं अपने कन्धों का बोझ बांटने के लिए अनु के भविष्य के लिए इतना बड़ा खतरा कभी मोल नहीं ले सकती।''

''तुम मुझे समझने की कोशिश क्यों नहीं करतीं गीता?''

''मैं आपके हाथ जोड़ती हूं राजीव बाबू। आप ज़िद न

कीजिए।"

राजीव चुप हो गया। हालांकि उसकी आंखों में एक उलझन मचल रही थी।

राजीव अपने फ्लैट में ताला लगा रहा था कि उसे गीता सीढ़ियों की ओर जाती दिखाई दी। उसने जल्दी से ताला लगाया और तेज़ी से सीढ़ियों की ओर बढ़ गया।

उसने गीता के पास पहुंचकर कहा—

"अनु स्कूल गई?"

"गई," गीता ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

"तुम कुछ दिनों से मुझसे कुछ नाराज़-सी दिखाई देती हो।" राजीव ने कहा।

"नहीं तो।"

"मैं जानता हूं कि तुम नाराज़ क्यों हो।"

गीता ने कोई उत्तर न दिया। वह चुपचाप चलती रही।

नीचे पहुंचकर राजीव ने कार का दरवाज़ा खोला तो गीता बोली—

"जी धन्यवाद, मैं बस से चली जाऊंगी।"

"क्या हो गया है तुम्हें गीता?"

"राजीव बाबू —प्लीज़ मेरा रास्ता छोड़ दीजिए।"

राजीव कुछ देर गीता का चेहरा देखता रहा फिर धीरे-से बोला—

"मैं तुम्हें अपनी कसम दिलाता हूं—गाड़ी में बैठ जाओ और लो मैं तुम्हारा रास्ता छोड़े देता हूं। तुम अगर कसम की इस लकीर को फांदकर चली गईं तो मैं समझूंगा कि इस दुनिया में प्यार नाम की कोई चीज़ नहीं है। मेरी सांसों में, मेरे दिल की धड़कनों में हर घड़ी जो तुम्हारा नाम गूंजता रहता है यह बस एक जादू है। इसके सिवा कुछ नहीं।"

राजीव रास्ता छोड़कर खड़ा हो गया।

गीता की हालत कुछ विचित्र-सी हो गई। मस्तिष्क कहता था पार कर जाओ इस रेखा को। तुम एक ऐसी बच्ची की संरक्षक हो जिसके भविष्य की ज़िम्मेदारी तुम पर है। और वह बच्ची इस लकीर की दूसरी ओर खड़ी है। लेकिन मन कहता था, इस रेखा को मत फांदो— यह प्यार की रेखा है। जिस प्यार के लिए तुम हमेशा तड़पती रही हो। आज वही प्यार तुम्हारे आगे झोली फैलाए खड़ा है। और तुम इस झोली में प्यार के फूलों की बजाए घृणा के कांटे डाल रही हो।

दूसरी ओर उसे फिर अनु दिखाई दी। रोती हुई मासूम अनु। जो बड़ी हसरत से उस रेखा की ओर देख रही थी जहां राजीव था— उसके बच्चे थे। अनु की मासूम आंखों की खामोश ज़बान जैसे तीर बनकर गीता के दिल में धंस गई। उसने आंखें मूंद लीं और फिर बड़ी तेज़ी से उस रेखा को लांघ गई। हालांकि उसे ऐसा लग रहा था जैसे किसी मजबूत डोर में उसका दिल बंधा हुआ है। और उस डोर का दूसरा सिरा राजीव के पैरों के नीचे दबा हुआ है। और ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ रही है उसका दिल पीछे खिंच रहा है। दिल में ऐसा दर्द उठा कि आंसू निकल आए। लेकिन गीता ने पलटकर नहीं देखा। वह बड़ी दृढ़ता से कदम उठाती हुई चली गई।

और राजीव—वह गुमसुम सन्नाटे में खड़ा रह गया। फिर उसके होंठों पर एक विचित्र उलझी-उलझी मुस्कराहट नाच उठी और अपनी कार में जा बैठा।

राजीव ने पंखे की ओर देखा। बिजली चली जाने के कारण उसकी रफ्तार धीरे-धीरे सुस्त होती चली जा रही थी। उसने पैड उठाया और अपनी मां को पत्र लिखने लगा।

"मेरी अच्छी मां—!

आपका तीन दिन में यह दूसरा पत्र मिला है। आपने मेरे अकेलेपन के सम्बन्ध में जो परेशानी व्यक्त की है तो मैं अकेला कहां हूं। यहां भी आपकी ममता और आपका प्यार हर घड़ी मेरे आगे-पीछे रहता है। मैं जानता हूं कि आप घर छोड़कर नहीं आ सकतीं। क्योंकि उस घर से आपके जीवन

की अनेक खट्टी-मीठी यादें जुड़ी हुई हैं। मैं स्वयं नहीं चाहता कि आप घर से कहीं जायें। मैं यहां बड़े मजे में हूं।

आपने लिखा है कि मैं शादी कर लूं ताकि मेरा अकेलापन दूर हो जाए। अपने लिए लड़की भी मैं ही खोज लूं तो सुनिए मां जी, मैंने एक ऐसी दृढ़ निश्चयी और ज़िद्दी लड़की खोज ली है जो आपकी बहू बनने के एकदम उपयुक्त है।

अपनी धुन की पक्की और बहुत ही ज़िद्दी लड़की है। मैं जल्द ही आपको यहां लाकर दिखा दूंगा।

अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखिएगा।

मैं दो-तीन दिन की छुट्टी लेकर आने की कोशिश करूंगा।

आपका

राजीव"

पत्र समाप्त करते-करते वह पसीने में डूब गया। उसने जल्दी-जल्दी रूमाल से पसीना पोंछा और फिर उसी से हवा करने लगा।

और जब गर्मी बहुत परेशान करने लगी तो वह फ्लैट से निकलकर बाल्कनी में आ गया। बाहर आकर उसने सिन्हा को देखा जो गैलरी के दूसरे छोर की ओर जा रहा था।

तभी उसकी नज़र बसन्ती पर पड़ी जो धीरे-धीरे सिन्हा की ओर बढ़ रही थी।

और जब वे दोनों आमने-सामने पहुंच गए तो राजीव ने जल्दी से उनकी ओर पीठ मोड़ ली और बाल्कनी की रेलिंग के सहारे पड़ी बेंच पर आ बैठा।

सात

गीता ने बेचैनी से करवट बदली और पिछली खिड़की से बाहर देखने लगी। आज आसमान साफ था। बादल का एक

टुकड़ा भी कहीं नहीं दिखाई दे रहा था। लेकिन चन्द्रमा दिखाई नहीं दे रहा था। केवल तारों की टोलियां उसकी खोज में आंखें फाड़-फाड़कर इधर-उधर ताक रही थीं।

और गीता की आंखों के आगे राजीव का चेहरा नाच उठा। उसकी आंखों के आगे राजीव का वह चित्र झांक उठा जब कामिनी ने अनु को मारा था। और मारने के बाद वह उसे बुरा-भला कह रही थी और राजीव आंखों में क्रोध और घृणा लिए कामिनी की ओर देख रहा था।

और फिर जब राजीव ने अपने आपको खतरे में डालकर अनु को रेलिंग से गिरने से बचाया था।

फिर उसके सामने वह दृश्य उभर आया जब कामिनी उसे मार रही थी। तब इतने लोगों की भीड़ में केवल राजीव ने ही आगे बढ़कर उसे कामिनी के हाथों से बचाया था। वरना कामिनी उस दिन उसका गला घोंटकर उसे मार डालती। और तब अनु का क्या होता।

उसे फिर याद आया—जब लिफ्ट में बिजली चली गई थी तो वह राजीव से भयभीत हो उठी थी। लिफ्ट में उन दोनों के अतिरिक्त और कोई नहीं था। लेकिन राजीव उससे दूर एक कोने में चुपचाप खड़ा रहा था। और फिर धीरे-धीरे उसके मन से वह डर निकल गया था जो एक जवान लड़की के मन में अकेले में एक नौजवान को देखकर जाग उठता है। लेकिन जब उसे घुटन महसूस होने लगी थी तो न जाने कौन-सी अज्ञात शक्ति उसे राजीव की ओर खींचने लगी थी। और उसे ऐसा महसूस होने लगा था कि यह घुटन और भय राजीव के निकट पहुंचते ही समाप्त हो जाएगा। और वह स्वयं बिना किसी संकोच और झिझक के राजीव से जा लिपटी थी।

गीता के होंठों पर एक मुस्कराहट नाच उठी। और फिर अचानक उसे याद आया कि राजीव ने एक लकीर बनाई थी और कहा था कि अगर तुम इस लकीर को फलांग गईं तो मैं समझूंगा कि दुनिया में प्यार नाम की कोई चीज़ ही नहीं है।

गीता को ऐसा महसूस हुआ जैसे उसका दिल किसी ने मुट्ठी में पकड़कर जोर से भींच दिया हो।

वह तड़पकर उठ बैठी। सुराही से उंढ़ेलकर एक गिलास

पानी दिया। उसे कुछ राहत-सी महसूस हुई।

तभी अनु ने जागकर बिस्तर पर इधर-उधर टटोला और गीता को न पाकर आंखें खोल दीं। और फिर इधर-उधर देखती हुई पुकारने लगी—

"मम्मी—! मम्मी—!!"

गीता को एकदम ऐसा लगा जैसे अनु की आवाज़ सुनते ही राजीव बड़ी तेज़ी से उससे दूर होता चला गया हो। उसने झुंझ-लाकर कहा -

"क्या है ? क्यों जाग गई ?"

गीता की आवाज़ सुनकर अनु सहम गई। गीता का यह लहजा उसके लिए एकदम नया था। आज तक अनु को मारना या डांटना तो दूर गीता ने कभी झिड़का तक न था। अनु की मासूम आंखों में भय और आश्चर्य उभर आए। मासूम और भोली-भाली आंखें। वह आश्चर्य से गीता को देखती रह गई।

"सो जाओ चुपचाप—!" गीता ने फिर रूखे और कठोर स्वर में कहा।

अनु सहमी-सहमी-सी फिर बिस्तर पर लेट गई और उसने आंखें मूंद लीं। गीता बड़े ध्यान से अनु को देखती रही। उसने देखा अनु सहमी-सहमी चुपचाप पड़ी थी। और उसकी आंखों से चुपके-चुपके आंसू बह रहे थे। गीता का दिल तड़प उठा जैसे किसी ने जलती हुई सलाख उसके सीने में भोंक दी हो। वह अनु के पास जा लेटी और उसे खींचकर अपने सीने से लिपटा लिया। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। उसने सिसकियों के बीच अपने आपसे कहा, 'मेरी बच्ची, मेरी चांद—मैं तेरी मासूमियत को अकेलेपन के अंधियारे में कभी भटकने नहीं दूंगी।"

अनु ने गीता के गले में बांहें डाल दीं और चुपके-चुपके सिसकती रही। गीता उसके आंसुओं से भरे चेहरे को चूमती रही।

थोड़ी देर बाद अनु की सिसकियां रात के सन्नाटे में डूब गईं। उसे नींद आ गई थी।

गीता उसे चिपटाए लेटी रही। उसके सिर पर हाथ फेरती रही। उसके माथे को चूमती रही। उसकी आंखों से बहते हुए आंसुओं को पोंछती रही।

फिर गीता ने भी आंखें मूंद लीं। उस पर हल्की-हल्की-सी

नींद छाने लगी।

और उसकी आंखों के आगे फिर राजीव का चेहरा नाच उठा। नींद में डूबते-डूबते भी उसके होंठों पर एक हल्की-सी मीठी-मीठी मुस्कराहट नाच उठी।

राजीव के दोनों हाथ गीता की ओर फैले हुए थे। और उसकी मुस्कराती हुई आंखें गीता को अपनी ओर बुला रही थीं। वह धीरे-धीरे गीता की ओर बढ़ रहा था। उसका हर बढ़ता हुआ कदम गीता के दिल में गुदगुदी पैदा कर रहा था। उसे अपनी धड़कनों में दूर ऊंचाइयों से गिरते हुए झरनों की झनकारें सुनाई दे रही थीं। आहिस्ता-आहिस्ता बहती हुई नदी की लहरों जैसी धीमी-धीमी गुनगुनाहट सुनाई दे रही थी। उसने देखा वह किसी हरे-भरे लॉन में खड़ी थी। उसके चारों ओर रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियां थीं। और राजीव उन क्यारियों में से फूल तोड़-तोड़कर गीता की गोद में भर रहा था। अनु एक कोने में खड़ी उदास-उदास नज़रों से उसे देख रही थी।

वह इसी उलझन में थी कि राजीव के दिए हुए फूल ले ले या अनु को गोद में उठाए। उसकी निर्णयात्मक शक्ति जैसे समाप्त हो गई थी। वह इसी अर्न्तद्वन्द्व में फंसी बड़बड़ा उठी —

"हे भगवान, मैं क्या करूं—मुझे रास्ता दिखाओ भगवान।"

बड़बड़ाते हुए अचानक उसकी आंख खुल गई। और वह तड़पकर उठ बैठी। उसने अनु को देखा। वह दूसरी ओर करवट बदले चुपचाप सो रही थी।

गीता का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क उठा। वह बिस्तर से उठकर खड़ी हो गई। और पागलों की तरह इधर-उधर देखने लगी। उसे गहरी घुटन महसूस होने लगी। वह तेज़ी से दरवाज़े की ओर बढ़ी और दरवाज़ा खोलकर बाहर गैलरी में निकल आई।

वह रेलिंग के सहारे आ खड़ी हुई और दोनों हाथों से मुंह छिपाकर हल्की-हल्की सुबकियां लेने लगी। आज उसे अपना दिल बहुत ही कमज़ोर महसूस हो रहा था। जी चाह रहा था कि बिलख-बिलखकर रोए। इतना रोए कि उसके आंसुओं में सारी दुनिया डूब जाए।

वह धीरे-धीरे सुबकियां लेती रही।

अचानक उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई उसके बालों में

उंगलियां फेर रहा है। गीता की सिसकियां एकदम रुक गईं। उसे लगा जैसे उंगलियों के इस स्पर्श से वह भली भांति परिचित है। यह स्पर्श राजीव की उंगलियों का स्पर्श है। इतना अपनत्व, इतना स्नेह और इतनी शान्ति और किसकी उंगलियों के स्पर्श में हो सकती थी। और कौन था जो उसे इतने स्नेह से चैन पहुंचा सकता था।

लेकिन इस स्नेह को पाते ही गीता की सिसकियां तेज हो गईं। उसे स्वयं पता नहीं था कि ये सिसकियां क्यों उभरती चली आ रही हैं। आज आंसुओं की बाढ़ पलकों का बांध तोड़कर बह उठने के लिए क्यों मचल उठी है।

और कुछ देर के वाद उसकी सिसकियां कुछ धीमी पड़ीं तो राजीव की आवाज़ उसके कानों से टकराई—

"तीन वज चुके हैं गीता।"

गीता ने कोई उत्तर नहीं दिया।

राजीव ने कहा—

"कई रातें कांटों के बिस्तर पर वीती हैं। लेकिन आज की बेचैनी और दिनों की अपेक्षा कहीं अधिक है।"

गीता फिर भी कुछ न वोली।

राजीव ने फिर कहा—

"तुम भी जाग रही हो। शायद वही कांटे तुम्हारे दिल में भी चुभ रहे हैं जिनकी चुभन मुझे सोने नहीं देती। जो दर्द मेरे दिल से उठता है उसकी कराह तुम्हारे होंठों से निकलती है। जो जलन तुम्हारे दिल में मचलती है उसकी सिसकी मेरे होंठों पर जाग उठती है। हम दोनों के बीच एक मजवूत और कभी न टूटने वाली दीवार खड़ी है। लेकिन वह कौन-सा अनदेखा और दिखाई न देने वाला पुल है जो इस दीवार को पार कर जाता है। और तुम्हारा दुख मुझ तक पहुंचा देता है। और मेरी तड़पनें तुम्हें दे आता है।"

"........."

"बोलो न गीता।"

लेकिन गीता चुपचाप खड़ी रही।

राजीव ने धीरे से उसकी बांह पकड़कर उसका मुंह अपनी ओर कर लिया।

"तुमने अपनी ज़बान पर ताले क्यों डाल रखे हैं? इस धधकते

हुए ज्वालामुखी को अपने सीने में छिपाए तुम कब तक अपने आप को झुलसाती रहोगी ? अपने आपको यह धोखा कब तक देती रहोगी। तुम उस दिन मेरी सौगन्ध की रेखा पार करके चली गई थीं। यह इस बात का प्रमाण था कि तुम्हें मुझसे प्रेम नहीं है।"

"राजीव बाबू —!" गीता की आवाज़ भर्रा गई।

"तुम मुझे धोखा दे सकती हो गीता। लेकिन तुम अपने आप को धोखा नहीं दे सकतीं। तुम्हारा मन कहता है कि तुमने मेरी सौगन्ध की जो रेखा पार की थी उस पर तुमने अपने इसी कर्तव्य का पुल बना लिया था जिस पर चलकर तुम अनु के भविष्य के रास्ते का निर्माण कर रही हो। बोलो गीता—क्या यह गलत है ?"

"भगवान के लिए मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिए राजीव बाबू।" गीता ने कराहते हुए कहा।

"कैसे छोड़ दूं तुम्हें तुम्हारे हाल पर। तुम अब केवल अपनी ही नहीं रहीं मेरी भी हो गई हो। और कोई भी अपनी चीज़ को शोलों में नहीं छोड़ सकता। गीता, ज़िन्दगी के रास्ते बहुत लम्बे हैं। तुम अकेली कहां तक इन पर चलती रहोगी ? हर कदम पर मेरी आत्मा तुम्हें पुकारती रहेगी। हर कदम पर मेरा प्यार तुम्हारे पैरों के लिए फूलों की ज़ंजीरें लेकर बढ़ेगा। गीता मैं तुम्हें नहीं भुला सकता। किसी हाल में नहीं छोड़ सकता। किसी हाल में नहीं ।"

राजीव ने गीता के बालों में मुंह छिपा लिया। गीता चुपचाप खड़ी रही। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे ?

राजीव ने धीरे से कहा—

"तुमने उसी दिन मेरी सौगन्ध की लकीर फलांगी थी। लेकिन मैं निराश नहीं हुआ था। मैं जानता था कि तुमने एक विवशता का बोझ कंधों पर लाद रखा है। लेकिन अगर मेरा प्यार सच्चा है तो एक दिन तुम मेरे प्यार के फूलों को ज़रूर चुन लोगी। जानती हो मैंने मां को तुम्हारे बारे में क्या लिखा था ? और गीता, मां मुझे हर चिट्ठी में यही लिखती हैं, बेटा, तू जल्दी से लड़की तलाश कर ले। मैं जल्द से जल्द तेरी शादी कर देना चाहती हूं।"

राजीव ने गीता के बालों से सिर उठाया और मुस्कराकर बोला—

"जानती हो मैंने मां को क्या लिखा है? मैंने मां को लिखा है, मैंने एक लड़की खोज ली है। बिल्कुल तुम्हारी ही तरह है। हठी, स्वाभिमानी। अभी वह अपनी ज़िद पर अड़ी हुई है। लेकिन मैं निराश नहीं हूं। एक न एक दिन उसे मेरे प्यार के सामने हार माननी पड़ेगी। और तब मैं तुम्हें बुलाकर उसे दिखा दूंगा।"

गीता चुपचाप खड़ी सुनती रही।

राजीव ने कहा—

"जानती हो मां ने क्या उत्तर दिया है?—उन्होंने लिखा है अगर मेरी होने वाली बहू ज़िद्दी है तो मैं उससे दस गुनी ज़िद्दी हूं। मुझे जल्द आकर ले जाओ। मैं उसके कान पकड़कर राज़ी कर लूंगी।"

गीता कुछ न बोली।

राजीव ने कहा—

"मेरी मां बहुत ही सहनशील और धैर्यवान हैं। उन्होंने मेरे पालन-पोषण के लिए अपनी सारी जवानी विधवा के रूप में बिता दी है। अब वह बहुत थक गई हैं। जब से मैंने ज़िन्दगी का बोझ अपने कन्धों पर उठाया है। मां थककर बैठ गई हैं। और दिन रात वह अपने कानों में बहू की पायलों की छनक सुनती रहती हैं। बहू उनके जीवन का एकमात्र सपना बनकर रह गई है। उनकी ज़िन्दगी के जो थोड़े-से वर्ष रह गए हैं उसके लिए उनके बूढ़े हाथों को एक बहू के कन्धे की ज़रूरत है। तुम्हें देखकर तो वह खुशी से पागल हो उठेंगी।"

"........."

"तो कब बुला लूं उन्हें?"

"........."

"बोलो ना गीता, उन्हें कब बुलाऊं?"

अचानक उन दोनों ने गीता के फ्लैट की ओर से हल्की-सी सुबकी की आवाज़ सुनी। दोनों चौंक उठे। उन्होंने पलटकर देखा। अनु दरवाज़े में सहमी हुई खड़ी थी और चुपके-चुपके सिसकियां भर रही थी।

राजीव ने कहा—

"अरे अनु बेटी—तुम कब उठ गईं?"

"डर—डर लग रहा है अकेले में।" अनु सिसककर बोली।

गीता ने झपटकर अनु को गोद में उठा लिया और फिर पलट-कर दरवाज़ा बंद कर लिया।

राजीव दरवाज़े के पास ही रुक गया। उसके चेहरे पर गहरी उलझन के चिन्ह थे। धीरे से कहा —

"मैं तुम्हारी-प्रतीक्षा करूंगा गीता। भले ही सारी उम्र ही क्यों न बीत जाए।"

वह थोड़ी देर रुककर बोला—

"तुम्हें जब यह विश्वास हो जाए कि मेरे प्यार की छांव में तुम्हें ही नहीं अनु को भी सुख मिलेगा तो तुम मेरे पास चली आना।"

फिर वह धीरे-धीरे अपने फ्लैट की ओर चला गया।

आठ

बसन्ती सिन्हा के बच्चे को बहलाने की कोशिश कर रही थी। लेकिन बच्चा बुरी तरह बिलख रहा था। कभी वह उसे प्यार करती, कभी कन्धे से लगाती। कभी जांघ पर लिटाकर दूध की बोतल उसके मुंह में देने की कोशिश करती। लेकिन बच्चा चुप होने का नाम ही नहीं ले रहा था।

"ओ लड़के — तुम सिन्हा का बेटा है या मेरा बाप है। तुमने तो रो-रोकर हमें दुखी कर दिया। तुम्हें कैसे चुप कराऊं।"

फिर उसने बच्चों के पालन-पोषण से सम्बंधित एक किताब उठा ली और जल्दी-जल्दी उसके पन्ने पलटने लगी।

फिर परेशान होकर बोली—

"पता नहीं उसमें किधर तरकीब लिखी है बच्चों को चुप करने की।"

तभी बाहर से आवाज़ सुनाई दी —

"बसन्ती, अरी क्यों रुला रही है बच्चे को?

डायमंड पाकेट बुक्स में

आन
कसक
आराधना
दाग़

समीर

का
एक और
नया उपन्यास

पायल

मूल्य 4/-

डायमंड पाकेट बुक्स
२७१५, दरिया गंज, नई दिल्ली-११०००२

डायमंड पाकेट बुक्स में
घराना
माँ, दो भाई, पतिव्रता
के बाद

लोकप्रिय
उपन्यासकार
राहुल
का दिल को छू लेने वाला उपन्यास
रिश्ते नाते
4/-

डायमंड पाकेट बुक्स
2715 दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

"मैडम, यह तो चुप ही नहीं होता।"

"ला इधर ला। मैं देखूं।"

सावित्री देवी ने कहा और पहिएदार कुर्सी लुड़काती हुईं अंदर आ गईं। उन्होने हाथ बढ़ाकर कहा—

"ला मुझे दे। देखूं क्यों रो रहा है।"

बसन्ती ने बच्चा सावित्री देवी को दे दिया। उन्होंने इसे उलट-पुलटकर देखा और फिर बसन्ती को घूरकर बोलीं—

"अरी, एकदम अन्धी है अन्धी। इतने से बच्चे का पेट कहीं इतना कसकर बांधा जाता है।"

सावित्री देवी ने जल्दी-जल्दी उसका कच्छा ढीला कर दिया। बच्चा फौरन चुप हो गया और अंगूठा चूसने लगा।

बसन्ती ने आश्चर्य से कहा—

"ओह मैडम, आपने तो एकदम जादू कर दिया।"

"जादू की बच्ची, तूने यह ज़िम्मेदारी तो ले ली है। लेकिन अगर तू इसे खिलाती रहेगी तो मेरा काम कैसे करेगी?"

"बताऊं मैडम, बेचारे सिन्हा साहब इस बच्चे को कैसे संभाल सकते हैं?"

"बड़ी हमदर्दी है तूझे सिन्हा से?"

बसन्ती ने कोई उत्तर न देकर आंखें झुका लीं।

"मैं सब समझती हूं," सावित्री देवी ने घूरकर कहा, "पूरी बिल्डिंग में अकेली तुझे ही सिन्हा पर रहम आया—और किसी को नहीं। आखिर तुझे ही सिन्हा पर इतनी दया क्यों आई?"

बसन्ती घबरा उठी।

"मैं सब समझती हूं। पड़ौसियों ने तुम दोनों के बारे में मुझसे जो कुछ कहा था मैं उसे गलत समझती थी। सोचती थी इस बिल्डिंग में रहने वालों को तो एक-दूसरे की बुराई-बदनामी करने की आदत पड़ गई है। लेकिन अब मुझे विश्वास हो गया है कि वे लोग जो कुछ कहते थे सच था। तुम दोनों रात के अंधेरे में एक-दूसरे से मिला करते थे। उस समय भी जब सिन्हा की घर वाली ज़िन्दा थी?"

"म – म – मुझे माफ कर दीजिए।"

"माफ कर दूं ?"

सावित्री देवी ने आंखें निकालकर कहा –

"मैंने तुझे बचपन से इसलिए पाला था कि तू जवान होकर लोगों से आंखें लड़ाती फिरे ?"

"ओह मैडम –यह झूठ है।" बसन्ती ने हकलाते हुए कहा।

"क्या तू सिन्हा से प्यार करती है ?" सावित्री देवी ने बसन्ती के चेहरे पर नजरें गढ़ाते हुए पूछा।

"जी – ," बसन्ती कुछ कह न पाई।

"तो क्या सिन्हा भी तुझे प्यार करता है ?" सावित्री देवी ने पूछा।

तभी दरवाज़े पर कदमों की आहट सुनाई दी। सावित्री देवी और बसन्ती चौंककर दरवाज़े की ओर देखने लगीं।

सिन्हा बच्चे के लिए दूध के डिब्बे लिए अंदर आ रहा था।

"यह क्या लाए हो सिन्हा ?" सावित्री देवी ने पूछा।

"जी, दूध के डिब्बे हैं और कुछ कपड़े हैं मैडम, बच्चे के लिए," सिन्हा ने दूध के डिब्बे और पेकेट मेज़ पर रखते हुए कहा।

सावित्री देवी ने सिन्हा पर ऊपर से नीचे तक एक नज़र डाली और फिर बोलीं—

"बैठ जाओ सिन्हा, मुझे तुमसे कुछ ज़रूरी बातें करनी हैं।"

सिन्हा सावित्री देवी की आवाज़ सुनकर कुछ सहम गया। और चुपचाप एक कुर्सी खींचकर उनके पास बैठ गया।

सावित्री देवी उसके चेहरे को एक पल घूरती रहीं और फिर बोलीं—

"सिन्हा, तुम बसन्ती से प्रेम करते हो ?"

सिन्हा के चेहरे का रंग उड़ गया।

"बोलो, इसमें डरने या घबराने की कोई बात नहीं है," सावित्री देवी ने कहा, "और फिर तुम तो मेरे बेटे जैसे हो। भला मां से क्या छिपाना। जो भी बात हो साफ-साफ बता दो।"

सिन्हा एक पल फर्श की ओर देखता रहा फिर बोला—

"मैडम, मैं दरअसल बहुत ही अभागा हूं। आपने कहा है कि आप मेरी मां के समान हैं। मैं भी आपको मां के समान ही समझता हूं। शुरू से ही समझता हूं। और इसीलिए आपको सब कुछ साफ-साफ बताए देता हूं।"

सावित्री देवी बड़े ध्यान से सिन्हा की ओर देखने लगीं। बसन्ती बच्चे को लिए हुए दरवाज़े के पीछे जा खड़ी हुई।

"मैडम, मेरी मां की मृत्यु जब मैं बहुत छोटा था तभी हो गयी थी। मां की मृत्यु के कुछ दिनों बाद ही मेरे पिता ने दूसरी शादी कर ली। और मुझे जैसे भूल ही गए। ठीक ढंग से पालन-पोषण न हो पाने के कारण मेरा शारीरिक विकास ठीक तरह से नहीं हो सका। सौतेली मां की बातों में आकर उन्होंने मुझे ढंग से शिक्षा भी नहीं दी। इसलिए मैं अधिक नहीं पढ़ पाया। और फिर मेरे पिता और मेरी मां ने धन के लालच में मेरी शादी एक ऐसी लड़की से कर दी जो किसी भी दशा में मेरे उपयुक्त नहीं थी। वह उम्र में मुझसे लगभग पांच वर्ष बड़ी थी और डील डौल में मुझसे पांच गुनी थी। मैं उसके सामने बिल्कुल बच्चा जैसा लगता था।"

"हां, वह तो सभी को दिखाई देता था," सावित्री देवी ने कहा।

"शादी के बाद मेरे पिता और सौतेली मां ने मेरे ससुर का दिया हुआ सारा रुपया और दहेज़ अपने पास रख लिया और मेरी पत्नी पर दबाव डालने लगे कि वह अपने बाप के पास जाकर और रुपया लाए। एक-दो बार तो मेरे ससुर ने मेरे पिता की मांग पूरी कर दी लेकिन फिर हम दोनों की हालत देखकर उन्होंने इस शहर में मेरे लिए एक स्टोर खुलवा दिया और आपकी बिल्डिंग में एक फ्लैट दिलवा दिया। मैंने यहां आकर सोचा था कि अब आराम से ज़िन्दगी गुज़र जाएगी लेकिन वही कहावत हुई कि आसमान से गिरे और खजूर में अटक गए। वहां घर पर सौतेली मां के सामने हर वक्त हाथ बांधे खड़ा रहना पड़ता था और यहां आकर घर वाली की गुलामी करनी पड़ी। अच्छा हुआ सुमन मर गई। अगर न मरती तो मुझे आत्महत्या करनी पड़ती।"

"बड़ी दुख भरी कहानी है तुम्हारी," सावित्री देवी ने एक लम्बी सांस लेकर कहा, "हमारे देश में आज भी। ऐसे मां-बाप की कमी नहीं है जो धन के लालच में यह तक नहीं देखते कि लड़का-लड़की एक-दूसरे के उपयुक्त हैं या नहीं।"

"यह सच है कि मैं और बसन्ती एक-दूसरे को प्यार करते हैं। मुझे अपनी पूरी ज़िन्दगी में प्यार मिला है तो सिर्फ बसन्ती से," सिन्हा ने कहा।

"तो क्या तुम बसन्ती के साथ शादी करने के लिए तैयार हो?" सावित्री देवी ने पूछा।

"जी हां।" सिन्हा ने शर्माते हुए कहा।

"लेकिन सिन्हा, शायद तुम्हें पता नहीं। बसन्ती के न मां है न बाप है। न भाई-बहिन और न कोई सगा-सम्बन्धी। तुम्हें दहेज भी नहीं मिलेगा।"

"मैडम, मुझे दहेज का लालच नहीं है। मुझे सिर्फ बसन्ती की ज़रूरत है।"

"क्या इसलिए कि वह तुम्हारे बच्चे को पाल लेगी?" सावित्री देवी बोलीं।

"नहीं मैडम। अगर सुमन बिना बच्चे के ही मर जाती तब भी मैं बसन्ती से ही शादी करता।"

सावित्री देवी ने दरवाज़े की ओर मुड़कर पुकारा—

"बसन्ती—इधर आ।"

बसन्ती बच्चे को गोद में लिए-लिए दरवाज़े में आ खड़ी हुई।

"क्या तू सिन्हा के साथ शादी करना चाहती है?" सावित्री देवी ने उसकी ओर देखते हुए पूछा।

बसन्ती ने लजाकर आंखें झुका लीं। लाज से उसका चेहरा लाल पड़ गया।

सावित्री देवी ने उसके सुर्ख चेहरे को देखते हुए कहा—

"तूने सिन्हा को प्यार करके बहुत बड़ा जुर्म किया है बसन्ती। मैं तुझे बहुत कड़ी सजा दूंगी। मैं एक हफ्ते के अंदर-अदर दूसरी नौकरानी का इंतज़ाम कर लेती हूं। उसके आने के बाद तुझे

निकाल दूंगी।"

बसन्ती के चेहरे का रंग उड़ गया—

"नहीं, नहीं मैडम। इतनी कड़ी सजा मत दीजिए। मैं अभागिन, अनाथ कहां जाऊंगी? इस भरी दुनिया में आपके सिवा और मेरा कौन है? मैं अपने दिल पर पत्थर रख लूंगी लेकिन आपको छोड़कर नहीं जाऊंगी।"

"मैंने बचपन से तुझे पाला-पोसा था, पढ़ाया-लिखाया था। लेकिन मैंने जनम भर का ठेका नहीं लिया था।" सावित्री देवी ने कहा और फिर सिन्हा की ओर देखते हुए बोलीं, "सिन्हा, मैं एक बार जो भी फैसला कर लेती हूं उसे कभी बदला नहीं करती। अब बसन्ती यहां नहीं तुम्हारे घर में रहेगी?"

"जी—!" सिन्हा एकदम घबराकर खड़ा हो गया, "माफ कीजिएगा मैडम। एक जवान आदमी और वह भी जिसकी घर-वाली मर चुकी हो—अगर उसके साथ कोई जवान लड़की रहने लगे तो ये दुनिया वाले उन दोनों को ज़िन्दा ही खा जायेंगे। और फिर इस बिल्डिग में तो कामिनी जैसी औरतें बहुत हैं जो दूसरों की बुराई और बदनामी करना अपना धर्म समझती हैं। नहीं, नहीं मैडम, मैं बसन्ती को अपने फ्लैट में नहीं रख सकता।"

"बैठ जाओ," सावित्री देवी ने डपटकर कहा।

सिन्हा फिर बैठ गया। लेकिन उसका समूचा बदन आंधी में पत्ते की तरह कांप रहा था।

"कुछ भी हो, इससे मुझे कोई सरोकार नहीं। बसन्ती तुम्हारे ही फ्लैट में रहेगी और बच्चे की देखभाल करेगी।"

सिन्हा को लगा जैसे उसे बिना किसी अपराध के फांसी पर लटकाया जा रहा हो। उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं।

"हां सिन्हा, बसन्ती तुम्हारे फ्लैट में ही रहेगी। सावित्री देवी ने दृढ़ता से कहा। और एक पल रुककर बोलीं, "और तुम्हारे इस नन्हें-मुन्ने बच्चे की मां बनकर !"

सिन्हा और बसन्ती आश्चर्य से सावित्री देवी के चेहरे को देखते रह गए।

सावित्री देवी कुछ देर चुपचाप बैठी रहीं। और फिर अचानक उनकी आंखें गीली हो उठीं। उन्होंने भरे गले से कहा—

"सिन्हा, वसन्ती को मैंने अपनी बेटी की तरह पाला है। मैंने इसे नौकरानी कभी नहीं समझा। अगर मैं इसे नौकरानी समझती तो इसे दसवें दर्जे तक स्कूल में न पढ़ाती। मैं इसकी धूमधाम से शादी करूंगी। तुम बिल्डिंग में रहने वालों को बुला लाओ। ठीक आज के दिन एक सप्ताह के बाद तुम दोनों की शादी कर दूंगी। तुम अपने रिश्तेदारों, मित्रों और घर वालों को निमन्त्रण भेज दो। और शादी की तैयारी करो।"

सिन्हा खुशी से जैसे पागल हो उठा। वह तेज़ी से उठा और फिर सावित्री देवी के अपाहिज पैरों से लिपटकर इस तरह फूट-फूटकर रोने लगा जैसे कोई बच्चा अपनी मां के सीने से लिपटकर रो रहा हो।

सावित्री देवी बड़े प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरने लगीं और उनकी आंखों से बहते हुए आंसू सिन्हा के सिर के बालों को भिगोने लगे।

बस के हॉर्न की आवाज़ सुनकर कामिनी ने नीचे झांककर देखा। बस से पहले अनु उतरी और फिर राजू उतरा। दोनों हंसते हुए सीढ़ियों की ओर बढ़ने लगे। कामिनी का सारा बदन क्रोध से जलने लगा। वह लपककर अपने फ्लैट की ओर गई और दिलीप से बोली—

"अजी सुनते हो—ज़रा बाहर आओ—अपने लाड़ले की करतूत तो देखो।"

"क्या हुआ?"

"ज़रा बाहर आकर देखो। क्या अनु के साथ हंस-हंसकर बातें करता हुआ आ रहा है।"

"अनु से ?" दिलीप के नथुने फूल गए।

"मैं कहती हूं लड़के का सत्यानाश होकर रहेगा। यह तो बच्चा है। ये जादूगरनियां तो बड़ों-बड़ों को उल्लू बनाकर रख देती हैं।"

दिलाप गुस्से से बाहर निकला।

तभी राजू और अनु गैलरी में आते दिखाई दिए। कामिनी और दिलीप को देखकर वे दोनों ठिठककर रुक गए। उन दोनों के चेहरे एकदम सफेद पड़ गए।

अचानक राजू के घबराए हुए चेहरे का रंग एकदम बदल गया। उसके चेहरे पर दृढ़ता मचल उठी। उसने झपटकर अनु का हाथ पकड़ लिया और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा।

दिलीप ने गुस्से से चीखकर कहा—

"राजू —!"

राजू ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह अनु का हाथ पकड़े उसी तरह बढ़ता रहा।

दिलीप की क्रोध से भरी आवाज़ सुनकर राजीव अपने फ्लैट से निकल आया।

अनु राजू से हाथ छुड़ाने की कोशिश कर रही थी लेकिन राजू बड़ी मजबूती से उसका हाथ पकड़े हुए था।

दिलीप ने दहाड़कर कहा—

"ओ राजू के बच्चे, छोड़ दे इस चुड़ैल का हाथ।"

"नहीं छोड़ूंगा डैडी - और सुन लीजिए— आज से अनु मेरे साथ खेलेगी— सब बच्चों के साथ खेला करेगी।"

"तेरी यह मजाल," कामिनी दांत किटकिटाकर बोली।

"हां मम्मी, हम सब बच्चे साथ-साथ खेला करेंगे। जब मैं दूसरे बच्चों के साथ खेल सकता हूं तो अनु के साथ क्यों नहीं खेल सकता। यह भी तो हमारी ही तरह है।"

कामिनी और दिलीप की आवाज़ें सुनकर और लोग भी अपने-अपने फ्लैटों से निकल आए।

कामिनी दांत किटकिटाकर बोली—

"अबे अन्धे —यह तुम्हारी तरह नहीं है —यह तो जहर की पुड़िया है। नागिन की कोख से संपोले ही पैदा होते हैं। यह हराम की बच्ची है —हराम की बच्ची।"

"मैं कुछ नहीं जानता मम्मी —हराम क्या होता है —हमने अब तक जो भा किताबें पढ़ी हैं उनमें से किसी में भी यह नहीं लिखा कि हराम के बच्चे कैसे होते हैं और उनके साथ नहीं खेलना चाहिए। हमने तो यही पढ़ा है कि सब बराबर होते हैं।"

"ओ कमीने, तेरी जबान बहुत खुल गई है।"

दिलीप ने झपटकर राजू को पकड़ लिया और उसे पीटने लगा।

अनु ने रोते हुए राजू की ओर बढ़कर कहा—

"नहीं, नहीं, राजू को मत मारिए— राजू को मत मारिए।"

दिलीप ने राजू को छोड़ दिया और झपटकर अनु के गाल पर एक जोरदार चांटा मारते हुए बोला—

"कमीनी, तूने ही मेरे बच्चे को बिगाड़ा है।"

और फिर वह दूसरा चांटा मारना ही चाहता था कि राजीव क्रोध में भरकर आगे बढ़ा। उसने दिलीप का उठा हुआ हाथ पकड़कर उसके मुंह पर इतने ज़ोर का चांटा मारा कि दिलीप लड़खड़ाता हुआ कई कदम पीछे हटता चला गया।

राजीव ने झपटकर रोती हुई अनु को उठा लिया और उसे गले से लगाकर ज़ोर से भींच लिया।

सिसकती हुई अनु राजीव के सीने से चिपक गई। राजीव कुछ देर खड़ा-खड़ा खूंखार नज़रों से दिलीप को घूरता रहा और फिर अनु को लिए हुए अपने फ्लैट में चला गया।

बाल्कनी के सिरे पर गीता खड़ी थी। वह अभी-अभी आई थी। उसने अनु को पिटते हुए देखा था और फिर राजीव को उसे उठाकर अपने सीने से लिपटाते हुए भी देखा था। वह बाल्कनी के सिरे पर ही गुमसुम सन्नाटे में डूबी खड़ी रही।

कामिनी चीख-चीखकर कहने लगी—

"देखा तुम लोगों ने ? इस जादूगरनी के लिए राजीव ने मेरे

हस्बैंड पर हाथ उठाया है। अरे यह जादूगरनी एक दिन किसी की हत्या कराके छोड़ेगी। मैंने तो पहले ही ताड़ लिया था कि अब वह राजीव पर डोरे डाल रही है। पहले भी राजीव ने ही गीता को पिटने से बचाया था। और अब तो वह राजीव की कार में बैठकर आने-जाने लगी है।"

धीरे-धीरे गीता बाल्कनी में बढ़ने लगी। और जैसे ही कामिनी की नज़र उस पर पड़ी वह और भी ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ने लगी। लेकिन गीता के चेहरे पर कोई परिवर्तन दिखाई नहीं दिया। वह बड़ी शान्ति और इत्मीनान से चलती हुई राजीव के फ्लैट के दरवाज़े के सामने जा खड़ी हुई।

दिलीप राजू को पकड़कर खींचते हुए अपने फ्लैट में चला गया।

गीता ने फ्लैट के दरवाज़े में रुककर देखा। राजीव अनु को लिटाकर उसके चोट वाले गाल पर भीगा हुआ रूमाल फेर रहा था। और अनु धीरे-धीरे सिसकियां भर रही थी।

राजीव कह रहा था –

"मत रोओ अनु—मेरी बच्ची।"

फिर राजीव ने झुककर अनु को गले से लगाकर भींच लिया। गीता ने देखा राजीव भी चुपके-चुपके सिसकियां भर रहा था और अनु को प्यार कर रहा था। वह कौन-सी लहर थी जो अचानक ठंडक बनकर गीता के मन: प्राण और पूरे बदन में तैर गई। उसके रोंगटे खड़े हो गए। उसका रोम-रोम सिहर उठा। और आंखों में आंसू भर आए।

गीता बढ़ते-बढ़ते उन दोनों के पास पहुंच गई।

राजीव ने आहट सुनकर पलटकर देखा। गीता उसके सामने खड़ी थी।

राजीव ने धीरे से कहा—

"लो बेटी, तुम्हारी मम्मी आ गईं।"

अनु ने पलटकर गीता की ओर देखा और बिलबिलाकर बोली—

"मम्मी —!"

और गीता की गोद में जाकर ज़ोर से उसके कलेजे से लिपट कर सिसकियां भरने लगी। गीता ने उसे प्यार करते हुए भरोंई हुई आवाज़ में कहा—

"मत रो मेरी बच्ची— मत रो।"

"मम्मी!" अनु ने सिसकियां लेते हुए कहा, "आप कहां रह गई थीं मम्मी। राजू के डैडी ने मुझे मारा मम्मी, राजू के डैडी ने मुझे मारा।"

अनु फिर सिसकियां लेकर रो पड़ी।

गीता ने उसे और ज़ोर से भींच लिया। अनु ने गीता के सीने से हटकर उसका चेहरा अपने दोनों नन्हें-नन्हें हाथों में ले लिया और हल्की-सी सुबकी लेकर बोली—

"मम्मी, वे राजू को मेरे साथ क्यों नहीं खेलने देते? क्यों रोकते हैं उसे? मैं तो कभी राजू से झगड़ा नहीं करती। और मम्मी, राजू की मम्मी ने मुझे ज़हर की पुड़िया कहा मुझे संपोलिया कहा—और हराम की बच्ची कहा ये लोग मुझे हराम की बच्ची क्यों कहते हैं मम्मी—? क्या मेरे जैसी बच्चियां हराम की होती हैं? हमारे स्कूल में मेरी जैसी और भी तो बहुत-सी लड़कियां पढ़ती हैं—क्या वे सभी हराम की बच्ची हैं मम्मी?"

"अनु, मेरी बच्ची," गीता ने अनु को फिर ज़ोर से चिपटा लिया।

अनु सिसकियां भरती रही।

राजीव ने अपने आंसू पोंछे और धीरे से बोला—

"आज तुम्हारे लिए खुशी का दिन है गीता—बहुत खुशी का—!"

गीता चौंककर राजीव की ओर देखने लगी।

"हां गीता— तुम्हें खुशी मनानी चाहिए कि आज एक आदमी ने अनु के गाल पर तमाचा मारा है।"

"राजीव बाबू—!"

"घबराने की क्या बात है गीता? आज एक ही चांटा मारा

है। अनु थोड़ी देर रोकर चुप हो जाएगी लेकिन मुझे डर है कि कहीं उस आदमी के हाथ की पांचों उंगलियां इसके दिल पर अपने स्थायी निशान न छोड़ गई हों। आज एक चांटा पड़ा है। कल दो पड़ेंगे—परसों तीन। और फिर अनु चांटों की अभ्यस्त होती चली जाएगी। फिर इसे कोई दुख न होगा कोई दर्द न होगा।"

"नहीं, ऐसा नहीं होगा," गीता कराहकर बोली।

"ऐसा ही होगा और ज़रूर होगा," राजीव ने गीता की ओर देखते हुए कहा, "तुम एक कमज़ोर औरत हो। तुम अनु के अधिकारों के लिए दुनिया से लड़ सकती हो। धूप में अपने आंचल की छाया में इसे ढप सकती हों। वरसात में अपने आंचल में छिपा सकती हो। लेकिन तुम्हारे हाथों में इतनी शक्ति नहीं है कि तुम अनु पर उठने वाले हाथ का यथोचित उत्तर दे सको। इसके वाद तुम केवल पीड़ित व्यक्तियों की तरह आंसू बहा सकती हो। और कुछ नहीं कर सकतीं। तुम अनु को एक स्थायी राह पर ले जा रही हो। लेकिन इसी सीमित जीवन में तुम कब तक घुटता रहोगी। बहुत जल्द तुम्हारी सांस घुट जाएगी और तब अनु तुमसे चीख-चीखकर कहेगी—बुलाओ मेरे बाप को? कहां है मेरा बाप? जो मुझे सहारा दे सके। तब तुम इसे क्या उत्तर दोगी?"

गीता कुछ न बोली।

राजीव ने कहा—

"भगवान ने प्रकृति की यह व्यवस्था विना सोचे-समझे नहीं की। जिस तरह एक छप्पर को खड़ा करने के लिए कम से कम दो खम्भों की आवश्यकता होती है उसी तरह मां और बाप बच्चों के लिए दो पैरों के समान होते हैं। और जिस बच्चे का एक पैर न रहे वह एक पैर से लंगड़ाता हुआ ज़िन्दगी का साथ कहां तक निभा सकता है। मां अगर बच्चे का दायां पांव है तो बाप उसका बायां पांव हैं। मां बच्चे का पालन करती है और बाप उसकी सुरक्षा करता है।"

"राजीव बाबू—!"

"कह दो गीता," तुम्हें अनु से नहीं अपनी हठ से प्यार है।

तुम अनु की ज़िन्दगी को लंगड़ा-लंगड़ाकर घिसटने पर विवश कर रही हो तो केवल अपनी हठ के लिए।"

गीता चुपचाप खड़ी सुनती रही। उसे राजीव का एक-एक शब्द हज़ार-हज़ार मन भारी मालूम हो रहा था। राजीव, जिसे वह केवल एक प्रेमी समझती रही थी आज उसने उसी को अनु के गाल पर पड़ने वाले चांटे का करारा उत्तर देते हुए देखा था। और वह अब अनु को चिपटाकर रो रहा था। राजीव केवल उसी से नहीं अनु से भी प्यार करता था।

उसने राजीव की ओर ध्यान से देखा। धीरे-धीरे राजीव के चेहरे का तनाव कम होने लगा।

उसने धीरे से कहा—

"मान जाओ गीता—अपने लिए न सही अनु के लिए मान जाओ। आज इस मासूम बच्ची के मन में यह प्रश्न जाग उठा है कि हराम की बच्ची क्या होती है? कल वह समझदार होगी और इस शब्द का अर्थ समझने लगेगी तो इसके दिल पर क्या बीतेगी? लेकिन मैं इसे एक बाप दूंगा। जो इसके मन में इस प्रश्न को कभी भी उठने न देगा कि इसका बाप कौन है।"

गीता कुछ देर चुपचाप खड़ी रही। फिर धीरे से बोली—

"आपकी मां जी—!"

"मैं उन्हें मना लूंगा। वह देवी हैं गीता। तुम उन्हें तभी समझ लोगी जब तुम उन्हें देखोगी।"

"तो फिर मां जी को बुला लीजिए।"

"गीता—!" राजीव ने गाता का हाथ कसकर पकड़ लिया।

उसकी आंखों में खुशी के आंसू झलक रहे थे।

गीता ने धीरे से उससे हाथ छुड़ाया और भारी-भारी कदम उठाती हुई फ्लैट से निकल गई।

राजीव आंखों में आंसू लिए उस दरवाज़े की ओर देखता रह गया जिससे गीता निकलकर गई थी।

नौ

सावित्री देवी ने पूजा समाप्त करने के बाद भगवान की मूर्ति को प्रणाम किया और अपनी पहियों वाली कुर्सी पर दूसरी ओर मुड़ गईं। उनके चेहरे पर गहरी पीड़ा के चिन्ह थे।

तभी उनकी नज़र बसन्ती पर पड़ी।

सावित्री देवी ने कराहकर कहा —

"बसन्ती— जल्दी— मुझे बिस्तर की ओर ले चल।"

"क्या हुआ मैडम —? आपकी तबियत कैसी है?" बसन्ती घबराकर उनकी ओर लपकी।

"कुछ नहीं। आज बहुत दर्द है। दिल के पास ऐसा लगता है जैसे कोई नुकीली कील से खुरच रहा हो। उफ्फोह— !"

और उन्होंने ज़ोर से सीना थाम लिया।

बसन्ती उनकी व्हील चेयर चलाती हुई बिस्तर तक ले आई। उसने बड़ी कठिनाई से उन्हें बिस्तर पर लिटा दिया।

सावित्री देवी ने कराहते हुए कहा-

"जब मैं पूजा कर रही थी, तू तभी मेरे पीछे आकर खड़ी हो गई थी न?"

"जी हां।"

"हालांकि तू पूजा के समय इस तरह कभी नहीं आती। तू कुछ कहना चाहती है?"

"नहीं, नहीं—मैं कुछ नहीं कहना चाहती," बसन्ती ने नज़रें बचाने की कोशिश की।

"नहीं, कोई बात ज़रूर है—इधर देख—मुझे बता।"

"जी बातें तो कुछ नहीं—आज दिलीप और कामिनी ने फिर झगड़ा किया।"

"गीता से?" सावित्री देवी ने कराहकर पूछा।

"नहीं मैडम, आज तो उन्होंने अनु को चांटा मारा।"

"क्या—?" सावित्री देवी ने चौंककर उठने की कोशिश की।

बसन्ती उन्हें झगड़े के बारे में बताने लगी।

"अब वे लोग राजीव बाबू और गीता दीदी के बारे में भी उलटी-सीधी बातें करने लगे हैं।"

"अनु को मारा उन लोगों ने—? अनु को मारा?" सावित्री देवी तड़पकर बोलीं। और फिर ज़ोर-ज़ोर से अपना सीना दबाने लगीं, "हे भगवान, मैं क्या करूं?"

"उन लोगों ने साजिश बनाई है। वे पुलिस में रिपोर्ट करेंगे कि यहां शरीफ लोग रहते हैं। उनके बीच एक आवारा औरत आकर बस गई है जो धन्धा करती है। और शरीफ मर्दों को जाल में फंसाकर उन्हें बिगाड़ती है। उन्होंने इस तरह गीता देवी को निकालने का प्रोग्राम बना लिया है।"

"हे भगवान, गीता को निकालले का प्रोग्राम—गीता को—ये लोग उसे चैन ने नहीं रहने देंगे। अच्छा ठहरो—मैं देखती हूं कैसे निकालते हैं ये गीता को।"

सावित्री देवी ने उठने की कोशिश की। बसन्ती ने उन्हें सहारा देकर उठा दिया।

सावित्री देवी ने कहा—

"ला, ज़रा टेलीफोन उठा—जल्दी से—उफ—मेरा दिल—मेरा दिल क्यों बैठा जा रहा है?"

बसन्ती ने जल्दी से रिसीवर उठाकर उनके हाथ में थमा दिया। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे थे।

सावित्री देवी ने जल्दी-जल्दी नम्बर डायल करके रिसीवर कान से लगा लिया।

कुछ देर के बाद उन्होंने कहा—

"हैलो—मैं सावित्री बोल रही हूं—आप फौरन मुझसे मिलिए मिस्टर देसाई—नहीं—अभी और इसी समय—धन्यवाद।"

फिर उन्होंने रिसीवर बसन्ती की ओर बढ़ा दिया और बिस्तर पर लेटकर आंखें मूंद लीं।

मिस्टर सिन्हा का फ्लैट आज खूब सजा हुआ था। सिन्हा और बसन्ती दूल्हा-दुल्हन के वेश में फ्लैट के दरवाज़े पर खड़े आने वाले मेहमानों की बधाइयां स्वीकार कर रहे थे। आज उनकी कोर्ट मेरिज हो चुकी थी और खुशी में उन्होंने शाम को पार्टी की व्यवस्था की थी।

बसन्ती तो बहुत खुश दिखाई दे रही थी लेकिन सिन्हा के चेहरे पर कभी-कभी उदासी छा जाती थी।

बसन्ती ने उससे धीरे से पूछा—

"आप बार-बार इस तरह उदास क्यों हो जाते हैं? अगर आपको मेरे साथ शादी करके खुशी नहीं हुई तो कोई बात नहीं। अभी तो कुछ नहीं बिगड़ा है—हम अभी कोर्ट में चलकर डाईवोर्स ले लेते हैं।"

"नहीं बसन्ती कुछ नहीं—तुमसे शादी करके मैं जितना खुश हूं तुम्हें बता नहीं सकता। लेकिन न जाने क्यों मुझे रह-रहकर सुमन की याद आ जाती है।"

"ओह, आप उस सुमन को याद कर रहे हैं जिसके साथ आपका शादी-जबर्दस्ती की गई थी। जिसके साथ आप कभी खुश नहीं रहते थे—और आज आप उसी सुमन को याद कर रहे हैं?"

"कुछ भी हो बसन्ती—मैंने सुमन के साथ सात साल बिताये थे।"

तभी दिलीप और कामिनी ने आकर उन्हें वधाई दी—

"आपका विवाहित जीवन सुखी हो।"

"धन्यवाद," सिन्हा और वसन्ती ने हल्की-सी हिचक के साथ कहा।

दिलीप और कामिनी राजू के साथ अन्दर चले गए।

तभी उन्हें राजीव दिखाई दिया। उसे देखते ही बसन्ती का चेहरा खिल उठा।

राजीव ने उन दोनों को फूलों का गुलदस्ता देते कहा—

"कांग्रेचुलेशन मिस्टर सिन्हा और मिसेज़ सिन्हा।"

"धन्यवाद राजीव बाबू बहुत-बहुत धन्यवाद।"

राजीव अंदर चला गया तो बसन्ती ने जल्दी से कहा—

"उधर देखो मिस्टर सिन्हा—गीता दीदी और अनु आ रही हैं।"

गीता ने मुस्कराते हुए उन दोनों को बधाई दी।

"दीदी—," बसन्ती गीता के कन्धे से लग गई। न जाने क्यों उसकी आंखें भीग उठीं।

"पगली," गीता ने उसकी पीठ पर बड़े प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, "खुशी की इस बेला में रोना अच्छा नहीं है बसन्ती—तुम दोनों के विवाह पर मुझे कितनी खुशी हुई है मैं बता नहीं सकती।"

"आइए गीता जी, अंदर चलिए।" सिन्हा ने कहा और फिर गीता, बसन्ती और अनु को लेकर अंदर आ गया।

सिन्हा ने जिन लोगों को आमंत्रित किया था वे सभी लोग आ चुके थे। कमरे के बीचोबीच एक लम्बी मेज़ थी जिस पर खाने की चीज़ें रखी हुई थीं।

राजीव एक कोने में अलग खड़ा सिगरेट के कश ले रहा था। उससे थोड़ी ही दूर कामिनी और दिलीप खड़े थे।

राजू रह-रहकर दरवाज़े की ओर देखने लगता था।

जब गीता और अनु ने फ्लैट में कदम रखा तो सबकी नज़रें उनकी ओर उठ गईं। कमरे में एकदम सन्नाटा छा गया। गीता ने

इस सन्नाटे को महसूस किया लेकिन उसके चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया दिखाई न दी। वह बड़े इत्मीनान से आगे बढ़ती रही।

उसे देखकर दिलीप और कामिनी की आंखों में खून उतर आया।

गीता बड़े इत्मीनान से चलती हुई मेज के पास पहुंच गई। फिर उसकी नज़रें राजीव पर पड़ीं। दोनों एक-दूसरे को देखकर मुस्कराए। और फिर गीता ने राजीव की ओर बढ़ते हुए कहा—

"आप पहले से ही मौजूद हैं राजीव बाबू।"

"हां गीता जी, बस इस महफिल में आपकी ही कमी रह गई थी—सब कुछ फीका-फीका-सा लग रहा था— देखा, आपके आते ही कैसी शान्ति छा गई है।"

मिस्टर सिन्हा और बसन्ती मेज के पास जा खड़े हुए। उन्होंने देखा सारे मेहमान गीता को बुरी नज़रों से घूर रहे थे।

सिन्हा ने आश्चर्य से कहा—

"अरे—महफिल में यह सन्नाटा-सा क्यों छा गया?"

"मिस्टर सिन्हा—," कामिनी ने आगे बढ़कर पूछा, "क्या आपने हम लोगों के साथ इस गीता को भी आमन्त्रित किया था?"

"अगर मैं इन्हें आमन्त्रित न करता तो दीदी यहां कैसे आतीं?" सिन्हा ने मुस्कराते हुए कहा।

"जब आप अपनी दीदी को आमन्त्रित कर चुके थे तो हमें बुलाने की क्या ज़रूरत थी?",

कामिनी ने बुरा-सा मुंह बनाकर कहा।

"अरे जैसे आप लोग पड़ौसी हैं वैसे ही गीता दीदी भी हमारी पड़ौसी हैं। जिस तरह आप लोगों को बुलाया है उसी तरह इन्हें भी बुलाया है।" सिन्हा ने कामिनी की ओर देखते हुए मुस्कराकर कहा।

"क्या आप हम सब को गीता के बराबर समझते हैं?" दिलीप ने कटुता भरे स्वर में पूछा।

"नहीं," सिन्हा ने चश्मे की ओट से दिलीप को देखकर

मुस्कराते हुए कहा, "आप गीता दीदी से दो-तीन इंच लम्बे हो सकते हैं।"

"व्हाट नॉनसेन्स," कामिनी पैर पटककर बोली, "आपको शरीफों और नीच लोगों के बीच अंतर देख पाने की भी समझ नहीं है मिस्टर सिन्हा। जिस पार्टी में इस बदचलन औरत और इसकी नाजाइज़ बच्ची की गन्दी सांसें ज़हर फैला रही हैं उस पार्टी में हम जैसे शरीफ आदमियों का होना बिल्कुल ज़रूरी नहीं है।"

फिर वह पैर पटकती हुई अन्य लोगों की ओर देखती हुई बोली—

"इस पार्टी में या तो गीता शामिल होगी या हम लोग शामिल होंगे।"

"तो कान खोलकर सुन लीजिए मिसेज़ कामिनी," सिन्हा ने बड़े इत्मीनान से कहा, "गीता दीदी इस पार्टी में ज़रूर शामिल होगी। मैं और बसन्ती गीता देवी को अपनी बहिन के समान मानते हैं। और आज हमारी शादी की खुशी में दी जाने वाली पार्टी में हमारी बहिन ही शामिल न हो यह कैसे हो सकता है।"

"तो हम लोग जाते हैं।"

"मैंने आप लोगों को आमन्त्रित किया है। मैं आपसे जाने के लिए कैसे कह सकता हूं।"

फिर वे लोग एक-एक करके बाहर जाने लगे। सिन्हा और बसन्ती बड़े इत्मीनान से खड़े उन्हें जाते हुए देखते रहे।

थोड़ी देर बाद कमरे में राजीव, गीता, अनु, बसन्ती और सिन्हा ही रह गए।

गीता ने सिन्हा और बसन्ती की ओर देखते हुए कहा—

"आप लोगों ने बेकार ही मेरी बजह से अपनी पार्टी का रंग खराब किया।"

"वाह दीदी, रंग तो तब खराब होता है जब उसमें कूड़ा-करकट मिल जाता है। कूड़ा-करकट निकल जाने के बाद तो रंग और साफ-सुथरा हो जाता है।"

तभी मिसेज़ सावित्री देवी की व्हील चेयर दरवाज़े में दिखाई

दी। वह खांसती हुई धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थीं।

बसन्ती उनकी ओर झपटती हुई चीखी—

"अरे, आपने क्यों कष्ट किया। आपकी तबियत खराब है। डाक्टर ने कहा है कि आपको बिस्तर से नहीं हिलना चाहिए। लेकिन आप यहां चली आईं।"

फिर वह उनकी व्हील चेयर लुढ़काकर अंदर ले आई।

सावित्री देवी ने कमरे पर एक नज़र डाली और फिर बोलीं

"चले गए—? सब चले गए —!"

"हां, मैडम, वे लोग कहते थे कि गीता दीदी को पार्टी में क्यों बुलाया," बसन्ती बोली।

"जाने दो—जाने दो—रौनक तो उसी महफिल में होती है जहां खुशबूदार फूल होते हैं। कागज के फूलों से तो महफिल की रौनक और भी विगड़ जाती है। तुम लोग खुशियां मनाओ—लाओ, पहले मुझे कुछ फल दो—वह केला उठाकर दे दो—!"

"लेकिन डाक्टर ने आपको केला खाने को मना किया है।"

"करने दो मना—आज मैं केला ही खाऊंगी—आज मैं बहुत खुश हूं—बहुत खुश—!"

फिर वह मेज़ पर से केला उठाकर खाने लगीं।

राजीव और गीता उन्हें आश्चर्य से देख रहे थे।

सावित्री देवी ने बड़े प्यार से अनु को अपने पास बुलाया और उसे अपने हाथ से फल खिलाने लगीं।

कामिनी ने अपने गले का हार उतारकर रखा ही था कि दिलीप ने अंदर कदम रखा।

कामिनी ने झल्लाकर पूछा—

"कहां चले गए थे सिन्हा के फ्लैट से निकलते ही ?—देख"

तुमने आज कितना अपमान हुआ है हम सब शरीफ लोगों का।— अगर हम लोग इसी तरह हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे तो एक दिन न जाने क्या हो। अभी तो बिल्डिंग में ही अपमान हुआ है अब खुलेआम होगा।— आज वह छिपकर धन्धा करती है कल वह तबला और सारंगी भी मंगा लेगी और फिर खुलकर धंधा शुरू कर देगी। और फ़िर अपने राजू को देखो— कहता है अगर उसे अनु के साथ खेलने नहीं दिया गया तो वह भूख हड़ताल कर देगा।"

"मरने दो भूखा। अपने आप खा लेगा। शायद तुम्हें मालूम नहीं राजू ने बिल्डिंग के दूसरे बच्चों को भी भड़का दिया है। कोई भी बच्चा खाना नहीं खा रहा। सब यही कह रहे हैं कि अगर उन्हें अनु के साथ खेलने की इजाज़त मिलेगी तो खायेंगे वरना भूखे ही रहेंगे।"

"राय राम, यह कम्बख्त अनु न हुई आफत की पुड़िया हो गई।"

"कल तक सब ठीक हो जाएगा," दिलीप ने टाई बांधते हुए कहा, "मैंने बिल्डिंग के सब लोगों से बात कर ली है। हम दो-तीन आदमी मिलकर पुलिस स्टेशन रिपोर्ट करने जा रहे हैं। ज़्यादा से ज़्यादा कल दोपहर तक इन्क्वायरी आ जाएगी और गीता को फ्लैट से निकाल दिया जाएगा। पुलिस को गीता क्या जवाब देगी कि अनु की बच्ची का बाप कौन है? सब लोग मिलकर उसके खिलाफ गवाही देंगे।"

"मुझे तो तभी चैन पड़ेगा जब वह कम्बख्त इस फ्लैट से निकलेगी। उसने तो तुम पर भी जादू कर दिया था। मेरा घर ही बर्बाद करने पर तुल गई थी।"

"अरे कामिनी, तुम नहीं जानतीं कि आवारा औरत में मर्द के लिए कितना आकर्षण होता है। लेकिन वह थोड़ी देर के लिए ही होता है। कहां तुम और कहां गीता।"

"अच्छा बस जाओ, बातें मत बनाओ। देख लिया है तुम्हारा प्यार— उसने गोरी-गोरी बाहें फैला दी थीं तो खिचे चले जा रहे थे।"

"तुम ही कहती हो कि वह जादूगरनी है," दिलीप ने उसका गाल थपथपाया और फिर फ्लैट से निकल गया।

कामिनी ने राजू से कहा—

"अरे खाना खाता है या नहीं?"

"नहीं खाऊंगा। नहीं खाऊंगा। नहीं खाऊंगा—कितनी बार कह दिया कि नहीं खाऊंगा।"

"देखती हूं कब तक नहीं खाता," कामिनी ने गर्दन झटककर कहा, "जब भूख लगेगी अपने आप मांगेगा। चला है भूख हड़ताल करने।"

राजू ने कामिनी की ओर से मुंह फेर लिया। कामिनी ने ध्यान से राजू को देखा। उसे ऐसा लगा जैसे राजू एकदम पत्थर बन गया हो। उसने जल्दी से गर्दन झटकी और धीरे से बड़बड़ाई—

"भगवान न करे।"

दस

दस्तक सुनकर दिलीप ज़ल्दी से दरवाज़े पर पहुंच गया। उसने दरवाज़ा खोला तो सामने एक पड़ौसी खड़ा था। उसने पूछा—

"क्यों भई, राजू ने खाना खाया या नहीं?"

"कहां खाया है कम्बख्त ने—गश पर गश आ रहे हैं लेकिन मानता ही नहीं है।"

"अरे जाने क्या फूंक दिया है इसने मेरे बच्चे के कान में। वह भी भूखा पड़ा है।"

दिलीप बाहर निकल आया।

बाल्कनी में कई लोग खड़े थे। वे सभी परेशान थे। उनके बच्चों ने भी कुछ नहीं खाया था। सब की एक ही मांग थी कि उन्हें अनु के साथ खेलने दिया जाए।

"क्या मुसीबत है। दोपहर का एक बजा है। अब तक पुलिस स्टेशन से भी कोई नहीं आया। एक बार यह जादूगरनी यहां से निकाल दी जाए फिर सब ठीक हो जाएगा।" दिलीप ने कहा।

फिर सिगरेट सुलगाकर बेचैनी से टहलते हुए कश लगाने लगा।

दूसरे लोगों के चेहरों पर भी चिंता की गहरी छाया थी।

गीता अनु को स्कूल का पाठ याद करा रही थी। अनु के सामने किताब खुली रखी थी और अनु अपनी नन्हीं-नन्हीं उंगली अक्षरों पर रखकर पढ़ रही थी।

किताब के एक पन्ने पर एक राजकुमार का चित्र था जो धनुष-बाण हाथ में लिए घोड़े पर सवार था।

पढ़ाते-पढ़ाते गीता की कल्पना ने उस राजकुमार को राजीव का रूप दे दिया। राजीव उसकी ओर देखकर मुस्कराया। गीता की आंखें शर्म से झुक गईं। फिर राजीव के होंठों से आवाज़ निकली—

"गीता, मैं आज मां जी को लेने जा रहा हूं। जानती हो क्यों?"

गीता की आंखों में जिज्ञासा जाग उठी।

राजीव के चेहरे की मुस्कराहट गहरी हो गई और उसके होंठों से आवाज निकलने लगी—

"इसलिए कि हम दोनों के बीच जो दीवार खड़ी है वह गिरा दी जाए। अब यह दीवार सहन नहीं होती। गीता मेरे रोम-रोम को तुम्हारी आवश्यकता है।"

और गीता की आंखों में लाल-लाल डोरे लहराने लगे।

होंठों में एक शर्मीली कंपकंपाहट पैदा हुई और चेहरे पर गुलाल-सा बिखर गया। दिल की धड़कनों में जैसे हज़ारों साज़ एक साथ बज उठे और होंठ गुनगुना उठे।

राजीव ने फिर कहा—

"मैं मां जी को लेकर बहुत जल्द लौट आऊंगा।"

"मम्मी—," राजीव की आवाज़ में से ही अनु की आवाज़ भी उभर उठी।

गीता ने चौंककर देखा।

तभी दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी।

और अनु ने कहा—

"मम्मी, क्या हो गया है आपको—मैंने कितनी आवाज़ें दी हैं।"

गीता फिर चौंक पड़ी। क्योंकि उसी समय किसी ने फिर दरवाज़े पर दस्तक दी थी।

अनु ने कहा—

"बहुत देर से कोई दरवाज़ा खटखटा रहा है।"

गीता उठी। उसके दिल की धड़कनें तेज़ थीं। और चेहरे पर तरह-तरह के रंग आ जा रहे थे। वह सोच रही थी कि वह अपने दिल में इतनी कमज़ोरी क्यों महसूस कर रही है।

दरवाज़े के पास पहुंचकर उसने चटकनी खोली। दरवाज़े के पट खुले और गीता के होंठ आश्चर्य से खुले रह गए। उसके सामने एक पुलिस इंस्पेक्टर खड़ा था।

पुलिस इंस्पेक्टर ने हाथ में दबा हुआ रूल अपनी दायीं हथेली पर मारते हुए गीता को अर्थपूर्ण नज़रों से ऊपर से नीचे तक देखा और फिर गम्भीर स्वर में बोला—

"गीता आप ही का नाम है?"

"जी हां," गीता ने बड़ी शिष्टता से कहा, "फर्माइए।"

उसके चेहरे पर कोई घबराहट या परेशानी नहीं थी। आंखों में भी गहरी शान्ति थी।

इंस्पेक्टर इस अंदाज़ में अंदर घुसने लगा कि गीता को उसे रास्ता देना ही पड़ा। और इंस्पेक्टर के सामने से हटते ही उसने बालकनी में सबसे पहले कामिनी और दिलीप को देखा। उन दोनों के पीछे और भी बहुत सारे लोग खड़े थे।

गीता ने इस तरह लम्बी सांस ली जैसे मामला उसकी समझ में आ गया हो।

इंस्पेक्टर ने गहरी नज़रों से पूरे फ्लैट का निरीक्षण किया और फिर उसकी नज़रें अनु पर पहुंचकर टिक गईं।

अनु किताब खोले अपनी मासूम आंखों में आश्चर्य लिए इंस्पेक्टर की ओर देख रही थी। इंस्पेक्टर को अपनी ओर देखते पाकर उसने बड़ी मासूमियत से दोनों हाथ जोड़े और मासूम लहजे में बोली—

"नमस्ते।"

इंस्पेक्टर एक पल के लिए गड़बड़ा गया। फिर उसने जल्दी से गर्दन हिलाकर उत्तर दिया—

"नमस्ते नमस्ते—!"

फिर उसने गीता की ओर मुड़ते हुए कहा—

"काफी शान-शौकत से रहती हो?"

"आपका मतलब क्या है?" गीता ने बड़े इत्मीनान से पूछा।

"कहीं नौकरी भी करती हो?"

"प्रभात इंटरप्राइजेज़ में स्टेनो टाइपिस्ट हूं।"

"चार-साढ़े चार सौ तनख्वाह मिलती होगी?"

"पहले आप अपना मतलब बताइए।"

इस बार गीता का लहज़ा कुछ खुश्क था।

"इस फ्लैट का किराया भी कम से कम डेढ़ सौ रुपए माहवार ज़रूर होगा।"

गीता के माथे पर बल पड़ गए। उसने चेहरे पर कठोरता लाकर दरवाज़े की ओर उंगली उठाकर कहा—

"क्या आप बाहर जाने की तकलीफ करेंगे?"

"व्हाट—!"

इंस्पेक्टर ने गीता को घूरते हुए कहा—

"मैं आपसे रिक्वेस्ट करूंगी कि आप बाहर तशरीफ ले जाइए।"

"तुम जानती हो, किससे बात कर रही हो?"

"एक ऐसे आदमी से जिसने कानून का गिलाफ बदन पर लपेट रखा है। लेकिन जिसे इस गिलाफ को इस्तेमाल करने का सलीका नहीं है।"

"तुम एक आफीसर का अपमान कर रही हो।"

"नहीं, कानून के एक रक्षक को कानून सिखा रही हूं कि बिना अनुमति के किसी के मकान में घुसना गैर कानूनी है।"

"खूब, मुझे कानून सिखा रही हो। मैं एन्टो करेप्शन पुलिस का इंस्पेक्टर हूं।"

"मैं इस यूनीफार्म का सम्मान करती हूं। वरना आपको धक्का मारकर बाहर निकाल देती," गीता ने होंठ भींचकर कहा, "आप जब तक बाहर तशरीफ नहीं ले जाएंगे मैं आपकी किसी भी बात का उत्तर नहीं दूंगी।"

गीता के स्वर में इत्मीनान था।

इंस्पेक्टर गीता को घूरता हुआ दरवाज़े से बाहर निकल गया।

गीता ने दरवाज़े पर पहुंचकर कहा—

"अब फरमाइए।"

"हमें सूचना मिली है कि तुम यहां रहकर नाजाइज़ धन्धा करती हो। और इस बिल्डिग में शरीफ लोग रहते हैं।"

"और कुछ?" गीता ने कड़वाहट भरी मुस्कराहट के साथ कहा।

"तुम्हें मालूम होना चाहिए कि कोई भी आवारा औरत इस तरह शरीफ लोगों के बीच नहीं रह सकती। सरकार ने धंधे पर रोक लगा दी है। इसलिए तुम जैसी औरतों ने शरीफों के मुहल्ले में डेरे जमा लिए हैं जिनके कारण इन शरीफ लोगों के मुहल्लों में न केवल गन्दगी फैलती है बल्कि इनके चरित्र पर भी बुरा असर पड़ता है।"

"और कुछ ?" गीता ने कड़वाहट भरी मुस्कराहट के साथ कहा।

"मैं इन शरीफ आदमियों की शिकायत पर ही यहां आया हूं। तुम शाम तक या ज़्यादा से ज़्यादा कल तक इस फ्लैट को खाली कर दो। वरना हमें मजबूर होकर तुम्हें यहां से निकालना पड़ेगा। हम चाहें तो तुम्हें इसलिए भी गिरफ्तार कर सकते हैं कि तुम्हारे पास गाने-बजाने का लायसेन्स नहीं है। और शरीर का धन्धा तो कानूनन जुर्म है ही। और अगर तुम गाने-बजाने का लायसेन्स ले भी लोगी तो तुम्हें यहीं रहने की इजाज़त नहीं मिलेगी।"

"और कुछ ?" गीता की मुस्कराहट और भी गहरी हो गई।

"और यह कि तुम्हें आज शाम तक ही फ्लैट खाली करना पड़ेगा। वरना हमें तुम्हारे साथ ज़बर्दस्ती करनी पड़ेगी और ज़बर्दस्ती फ्लैट खाली करा लिया जाएगा।"

"आपके कानून की किताब में कोई ऐसी धारा है जिसके द्वारा एक ऐसे किराएदार को ज़बर्दस्ती निकाला जा सके जो हर महीने नियमित रूप से किराया देता हो ?"

"ज़रूर निकाला जा सकता है अगर वह गैर कानूनी आमदनी से किराया चुकाता हो। और पड़ोस में शरीफ लोग रहते हों।"

"तो इन शरीफ आदमियों के पास क्या सबूत है कि मेरी आमदनी का ज़रिया नाजाइज़ है ?"

"शरीफ आदमियों की ज़बान ही सबसे बड़ा सबूत होती है। और अदालत भी शरीफ आदमियों की गवाही ही स्वीकार करती है।"

"और अदालत शराफत के सर्टिफिकेट भी बांटती है," गीता ने ज़हर भरी मुस्कराहट के साथ कहा।

"देखा, देखा," कामिनी जल्दी से बोली, "अब यह औरत हमारी शराफत को भी संदिग्ध घोषित कर रही है।"

"शराफत का सम्बन्ध अच्छे चाल-चलन और हार्दिक स्नेह से होता है।" गीता ने इत्मीनान से कहा, "मुझे बताइए कि आप लोग किस नीयत से मुझे आवारा सिद्ध करके यहां से निकालने पर

तुले हुए हैं ?"

"इस नीयत से कि हम अपने बीच एक ऐसी औरत का रहना बर्दाश्त नहीं कर सकते जो एक नाजाइज़ बच्ची की मां हो। यह हमारी शराफत का अपमान है।" दिलीप ने कहा।

"और इसलिए कि तुम्हारे यहां रहने पर लोगों के चरित्र पर बुरा प्रभाव पड़ने का डर है। तुमने मेरे पति पर भी डोरे डाले थे।" कामिनी बोली।

"इसके अलावा तुम्हारी नन्ही-सी बच्ची अभी से बिल्डिंग के बच्चों को गलत रास्ते पर डाल रही है। हमारे बच्चे कल रात से भूखे हैं। कहते हैं कि जब हमें अनु के साथ खेलने की इजाज़त मिलेगी तभी हम खाना खाएंगे। वरना भूखे मर जाएंगे।" एक औरत ने सुबककर कहा।

"सुना इंस्पेक्टर साहब," गीता ने इंस्पेक्टर से कहा, "इनके बच्चे इसलिए खाना नहीं खा रहे कि वे मेरी बच्ची के साथ खेलना चाहते हैं। और संकीर्ण मन के ये लोग मेरी बच्ची के साथ उन्हें इसलिए खेलने की अनुमति नहीं देते कि इनकी नज़र में मेरी बच्ची अवैध सन्तान है। अगर मैं इन लोगों से पूछूं कि इनमें से किसके माथे पर लिखा है कि इनकी सन्तान वैध है तो शायद इनमें से कोई भी उत्तर नहीं दे सकेगा।"

"देखा, देखा," कामिनी तड़पकर बोली, "यह कलंकिनी हमारे ऊपर भी बदचलनी का आरोप लगा रही है।"

"हां, हां, लगा रही हूं। क्या प्रमाण है तुम्हारे पास कि तुम्हारा राजू तुम्हारी बैध सन्तान है ?"

"मैं तेरा मुंह नोच डालूंगी कमीनी।"

कामिनी गीता को मारने के लिए दौड़ी लेकिन इंस्पेक्टर ने कामिनी को रोकते हुए कहा—

"नहीं श्रीमती जी, आप पुलिस की मौजूदगी में किसी पर हाथ नहीं उठा सकतीं।"

"अरे, यह पुलिस की मौजूदगी में शरीफ औरतों पर बदचलनी का आरोप लगा सकती है ?"

"लगाऊंगी, हज़ार बार लगाऊंगी," गीता ने दांत भींचकर कहा, "और कान खोलकर सुन लो। मुंह नोच लूंगी मैं हर उस शराफत के दावेदार का जिसने आज के बाद मेरी बच्ची को नाजाइज़ कहा। आज तुम लोग मुझे इसलिए फ्लैट से निकालने आए हो कि मैं एक नाजाइज़ बच्ची की मां हूं। और तुम्हारे कहने के अनुसार यहां आवारगी फैला रही हूं। आज यह दिलीप मुझे यहां से निकलवाने की दौड़ में सबसे आगे है। इसलिए कि मैंने इसकी मांग ठुकरा दी थी। जो रोज़-रोज़ मुझे अपनी घर वाली के अत्याचारों की कहानियां सुनाकर कहा करता था गीता, मैं इस ज़िन्दगी से तंग आ गया हूं। मुझे शान्ति चाहिए। और मुझे शान्ति तुम्हीं जैसी औरत दे सकती है कामिनी नहीं—और यह कामिनी भूल गई कि उस दिन मैंने इसे छोड़ दिया था। क्षमा कर दिया था। अगर उस दिन मैं दिलीप के साथ शादी कर लेती तो आज यह कहां होती।"

"हां, हां, मैं जानती हूं। तूने जादू कर दिया था मेरे पति पर! आवारा औरत तो चुटकियों में मर्दों को रिझा लेती है। क्या यह तेरे कमरे में नहीं जाते थे?"

"जाते थे लेकिन वहां से क्या लेकर आते थे पूछ अपने पति से," गीता ने गुस्से से कहा। और फिर इंस्पेक्टर की ओर मुड़कर बोली, "इंस्पेक्टर साहब आप कहते हैं कि शरीफ आदमी की ज़बान ही सबसे बड़ा सबूत होती है। अगर यह सच है तो पूछ लीजिए इस शरीफ आदमी से कि यह मेरे कमरे में क्यों आता था और वहां से क्या लेकर लौटता था।"

"तुम मुझे बुलाती थीं," दिलीप ने गीता से नज़रें बचाते हुए कहा।

"देखा," गीता हंस पड़ी, "यह है एक शरीफ आदमी की ज़बान जिस पर कानून विश्वास करता है। अब इस ज़बान की पोल खुलवाऊं। दिलीप ज़रा इधर देखो—अरे आंखें मिलाकर बात करो।"

"हां-हां लो—मैं कोई झूठ बोल रहा हूं," दिलीप ने मजबूत

बनने की कोशिश करते हुए कहा और गीता की ओर देखने लगा।

"अपने राजू की कसम खाओ कि मैंने तुम्हें कितनी बार बुलाया था और तुम मेरे फ्लैट से क्या लेकर लौटे थे?"

"क—क—कसम? ऐसी बातों में—ब—ब—बच्चों की कसम नहीं खाई जाती।"

"दिलीप, तुम्हें कसम तो खानी ही पड़ेगी," गीता ने कहा, "एक औरत के सिर पर गन्दगी उछालने के बाद तुम इसकी वजह बताए बिना अपनी जिम्मेदारियों से नहीं बच सकते। तुम कसम खा लो राजू की। मैं इसी समय फ्लैट छोड़ दूंगी। क्योंकि मैं ऐसे बेरहम लोगों के पड़ोस में नहीं रह सकती जो अपने मासूम बच्चों की झूठी कसम खायें।"

दिलीप सन्नाटे में खड़ा रह गया।

कामिनी ने उसका कन्धा हिलाकर कहा—

"अजी खा लो ना कसम—तुम ही तो कहते थे कि तुम्हें गीता बुलाती थी। और खर्च के लिए रुपए भी मांगती थी। जब यह सच है तो तुम कसम खाने से क्यों डरते हो?"

"ऐं हां-हां—काहे का डर—काहे का डर," दिलीप हकलाया।

"तो फिर कसम खाइए ना दिलीप बाबू," सिन्हा ने कहा।

दिलीप की आंखों में राजू का मासूम चेहरा घूम गया। राजू —जिसने कल शाम से कुछ नहीं खाया था। बिना खाए जिसका बुरा हाल हो गया था। उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। वह होंठों पर जीभ फेरने लगा। सारा बदन पसीने में डूब गया।

पुलिस इंस्पेक्टर ने कहा—

"बोलिए मिस्टर दिलीप—आप चुप क्यों हैं?"

"आं—हां—ब—ब—बोल—तो रहा हूं।"

सब लोग ध्यान से दिलीप को देख रहे थे। कामिनी भी उसे ध्यान से देख रही थी। उसने दिलीप का कंधा हिलाकर धड़कते हुए दिल के साथ कहा—

"ए जी—तुम चुप क्यों हो? मेरे राजू की झूठी कसम मत

खाना। वह कल से बिस्तर पर निढाल पड़ा है। अगर उसे कुछ हो गया तो मैं तुम्हें छोड़ूंगी नहीं।"

"राजू—हां राजू ," दिलीप हकलाया।

"कसम खाओ दिलीप—राजू की कसम खाओ।" गीता ने कठोरता से कहा।

दिलीप ने माथे का पसीना पोंछा और बोलने लगा—

"मैं—मैं—क क—कसम—खाता—!"

"बस—बस आगे कुछ मत कहना। तुम्हें अपने बच्चे से ज़्यादा अपनी झूठी शराफत से ज़्यादा प्यार है। राजू मेरा कुछ नहीं है। लेकिन मैं उसे अपनी बच्ची की तरह ही प्यार करती हूं। जिस तरह मां की एक भूल का दंड अनु को मिल रहा है उसी तरह बाप के झूठ का दंड राजू को नहीं मिलना चाहिए।"

"देखा-देखा," कामिनी चमककर बोली, "अब कैसे कसम की भी झूठ साबित करने की कोशिश कर रही है।"

"अगर मैं झूठा हूं तो तुम बता सकती हो कि जिस दिन तुम और अनु भीग गई थीं तुम किसकी कार से उतरी थीं?" दिलीप ने संभलकर कहा।

अचानक गीता को एक झटका-सा लगा और वह सन्नाटे में रह गई।

दिलीप ने कहा—"बताओ, चुप क्यों रह गईं।"

"नहीं, मैं नहीं बता सकती," गीता बड़बड़ाई।

"इसलिए कि तुम्हारी शराफत का भांडा फूट जाएगा।" दिलीप ने कटुता से कहा।

"बताओ तुम किसके साथ थीं कार में?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"इस सवाल को पूछने का आपको कोई अधिकार नहीं है।"

"खूब, तो हम इस सवाल का जवाब न पाने पर तुम्हें फ्लैट छोड़ने पर मजबूर तो कर सकते हैं।" इंस्पेक्टर बोला।

"मजबूर करने की जरूरत नहीं है। मैं खुद ऐसे लोगों के पड़ौस में रहना नहीं चाहती जहां लोग अपने बच्चों से प्यार न करें। मैं खुद ही फ्लैट छोड़ दूंगी।"

"और तुम शहर के उसी इलाके में रह सकती हो जहां गाने-बजाने वाली औरतें लायसेन्स लेकर रहती हैं।" इंस्पेक्टर ने कठोर लहज़े में कहा।

गीता सन्नाटे में खड़ी रह गई।

कामिनी खरखराते लहज़े में बोली—

"आज शाम तक यहां से चली जाओ।"

गीता कुछ न बोली।

तभी बसन्ती की आवाज़ सुनाई दी, "अब गीता दीदी को फ्लैट छोड़ने को कोई नहीं कह सकता।"

सब मुड़कर बसन्ती की ओर देखने लगे। बसन्ती के साथ एक वकील भी था।

इंस्पेक्टर पुलिस ने बसन्ती से पूछा—

"आप कौन हैं?"

"इस बिल्डिंग की मालकिन की नौकरानी हूं। मिसेज़ सावित्री देवी ने कहा है कि गीता देवी यहां से नहीं जायेंगी।"

"मिसेज़ सावित्री देवी इस बिल्डिंग की मालिक ज़रूर हैं लेकिन वह अपने शरीफ किराएदारों के विरुद्ध कोई कदम नहीं उठा सकतीं। ये लोग चाहेंगे तो गीता को फ्लैट छोड़ना पड़ेगा। भले ही बिल्डिंग की मालकिन इन्हें रखना ही क्यों न चाहें।"

"ऐ आफीसर, बिल्डिंग की मालिक अब मिसेज़ सावित्री देवी नहीं हैं गीता देवी ही हैं। और बिल्डिंग के मालिक को कोई कानून बिल्डिंग से बाहर नहीं निकाल सकता।"

वहां खड़े हुए लोगों में खलबली-सी मच गई। गीता की आंखों में आश्चर्य उभर आया।

बसन्ती ने वकील की ओर इशारा करते हुए कहा—

"देसाई साहब,—यह मिसेज़ सावित्री देवी के लीगल एडवाइज़र हैं।"

सब लोग आश्चर्य से वकील की ओर देखने लगे।

"जी हां, मैं मिसेज़ सावित्री का लीगल एडवाइज़र हूं प्रमोद देसाई, एम० ए० एल० एल० बी० एडवोकेट। उन्होंने अपनी

इच्छा से पूरे होशहवास में यह वसीयत लिखवाई है। इस पर उन्होंने दस्तखत कर दिए हैं। और इस वसीयत के अनुसार उनकी इस तीन मंज़िला बिल्डिंग की मालकिन अब एकमात्र गीता देवी हैं।"

सब लोगों में इस तरह कानाफूसी हो रही थी जैसे उन्हें वकील की बात पर विश्वास न हुआ हो। या फिर वे इसे गीता की साजिश समझ रहे हों।

गीता ने धीरे से कहा—

"वसन्ती, तुम यह क्या कह रही हो?"

"सच कह रही हूं दीदी," बसन्ती गीता के पास आ गई, "मैं तुम्हें बुलाने ही आई हूं मालकिन की तबियत बहुत खराब है।"

"क्या हुआ उन्हें?" गीता ने चौंककर पूछा।

"भगवान ही जाने।"

गीता उन लोगों के बीच से निकलकर तेज़ी से चलती हुई मिसेज़ सावित्री देवी के फ्लैट की ओर चली गई।

सब लोग एक-दूसरे का मुंह देखने लगे।

दिलीप ने कहा—"हमें पता करना चाहिए कि इस सूचना में कहां तक सचाई है।"

सब लोग मिसेज़ सावित्री के फ्लैट की ओर चल दिए।

इंस्पेक्टर वहीं खड़ा रह गया।

सब लोगों के जाने के बाद उसने फिर गीता के फ्लैट की ओर देखा। दरवाज़े के पास ही किताब लिए अनु खड़ी हुई थी।

इंस्पेक्टर को अपनी ओर देखते पाकर अनु ने बड़ी मासूमियत से कहा

"आप अंदर आकर बैठ जाइए।"

"आं—!" इंस्पेक्टर ने चौंककर अनु की ओर देखा।

"मम्मी कहती हैं—मेहमान को खड़ा नहीं रखना चाहिए। बुरी बात होती है—आप चाय पियेंगे?"

इंस्पेक्टर आश्चर्य से अनु की ओर देखता रहा। फिर

बोला—

"नहीं बेटी, धन्यवाद। तुम तो बहुत अच्छी बच्ची हो। कौन-सी किताब पढ़ रही हो?"

"हमारे स्कूल की किताब है। मम्मी घर पर सबक याद कराती हैं।"

"तुम स्कूल में पढ़ती हो? किस क्लास में?"

"तीसरी क्लास में।"

इंस्पेक्टर को अनु पर बहुत प्यार आया। उसने झुककर अनु को चूमते हुए कहा—

"अच्छा बेटी, हम चलते हैं। फिर कभी आकर चाय पियेंगे।"

जब वह जाने लगा तो अनु ने फिर हाथ जोड़कर उसे नमस्ते की। और अनु के इस अंदाज़ पर इंस्पेक्टर को इतना प्यार आया कि उसने फिर अनु को उठाकर चूम लिया।

मिसेज़ सावित्री गहरी-गहरी सांसें ले रही थीं। उनके अंदाज़ से ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उनकी सांस उखड़ रही हो।

गीता ने उन्हें पुकारा तो वह आंखें खोलकर उसकी ओर देखने लगीं।

गीता ने पूछा—

"क्या बात है सावित्री जी—आपको यह क्या हो गया?"

"आखिरी समय आ गया बेटी—अच्छा हुआ तुम आ गईं।" सावित्री देवी ने उखड़ी-उखड़ी सांसों के बीच कहा।

"ऐसा न कहिए। आप अभी बहुत दिन जियेंगी—अरे वसन्ती तुमने डाक्टर को नहीं बुलाया!"

"नहीं गीता बेटी, अब डाक्टर की ज़रूरत नहीं है।"

तभी फ्लैट के सामने दिलीप और कामिनी के साथ अन्य किराएदार आ खड़े हुए। एक पल वे दरवाज़े पर खड़े रहे और फिर झिझकते हुए अन्दर आ गए।

कामिनी के चेहरे पर कठोरता के स्थान पर चिन्ता दिखाई दे रही थी।

मिसेज़ सावित्री देवी की हालत देखकर सब लोग ठिठक कर रुक गए।

मिसेज़ सावित्री कह रही थीं—

"गीता बेटी—मैं जा रही हूं—वहां जहां से फिर—कभी नहीं—लौटूंगी ,मैं जानती हूं मेरे किरायेदारों ने तुम्हें—बहुत अपमानित किया है इसलिए कि उन्होंने तुम्हें—अपने से अलग रखकर सोचा है—उन्होंने तुम्हारी मुश्किलों को अपनी मुश्किल नहीं समझा- मैं तुम्हारी मुश्किलों को—समझती हूं मैं जानती हूं—मेरे बाद ये लोग तुझे चैन से—न रहने देंगे ?—हो सकता है—तुम्हें—यहां से—निकाल दें—इसलिए—मैंने यह बिल्डिंग तुम्हारे नाम कर दी है।"

"नहीं सावित्री जी, आपको कुछ नहीं हुआ। आप ठीक हो जायेंगी और सालों ज़िन्दा रहेंगी।" गीता ने भर्राई आवाज़ में कहा।

"नहीं गीता बेटी—वहां—मेरा कोई इन्तज़ार कर रहा है -वहां—ऊपर—जिसे मैं अपने—दूध की—एक बूंद भी—नहीं—पिला सकी—वह देखो—वह मुस्करा रहा है अपने नन्हें-नन्हें हाथ—हिलाकर—मुझे बुला रहा है—मैं आ रही हूं—मैं आ रही हूं—।"

मिसेज़ सावित्री देवी ने अपने दोनों हाथ इस तरह उठाए जैसे वे किसी बच्चे को गोद में लेने जा रही हों।

और फिर अचानक उनके दोनों हाथ बेसुध होकर गिर पड़े।

उनके प्राण पखेरू उड़ चुके थे।

"सावित्री जी—!" गीता ने कांपती आवाज़ में पुकारा।

"मालकिन—!" वसन्ती चीख उठी। और फिर उनके पलंग के पास बैठकर फूट-फूटकर रोने लगी। गीता ने दोनों हाथों में मुंह छिपा लिया और बिलख-बिलखकर रोने लगी।

ग्यारह

कामिनी ने घबराकर राजू को टटोला। राजू के हाथ-पांव ठंडे पड़ रहे थे और वह बहुत धीरे-धीरे सांसें ले रहा था। कामिनी जल्दी-जल्दी उसकी हथेलियां मलती हुई भर्राई आवाज़ में बोली—

"हे भगवान, यह क्या हो गया मेरे राजू को—राजू – राजू बेटे आंखें खोल– मेरे लाल।"

लेकिन राजू उसी तरह पड़ा रहा।

कामिनी ने डबडबाई आंखों से खाने की वह थाली देखी जो मेज़ पर रखी थी। और फिर राजू की ओर देखकर बोली—

"खाना खा ले बेटे- क्यों अपनी जान दे रहा है।"

राजू ने गर्दन हिलाकर इनकार कर दिया।

कामिनी भर्राई हुई आवाज़ में बड़बड़ाई—

"हे भगवान, मैं क्या करूं? राजू के डैडी भी तो अभी नहीं लौटे सावित्री देवी का अन्तिम संस्कार करके।"

ठीक उसी समय दरवाज़े पर दस्तक हुई। कामिनी ने उठकर दरवाज़ा खोल दिया।

सामने ही दिलीप खड़ा था। उसके चेहरे पर थकन के चिह्न थे।

कामिनी ने कहा—

"ज़रा देखो तो—राजू को क्या हो रहा है।"

दिलीप घबराकर अन्दर आया और आश्चर्य से बोला—

"खाना नहीं खाया इसने?"

"नहीं। जब कहती हूं ना कर देता है। मेरी समझ में नहीं आता कि क्या करूं। पल-पल हालत खराब होती जा रही है। भगवान न करे, राजू को कुछ हो गया तो मैं क्या करूंगी।"

उसने राजू को देखा और फिर दिलीप की ओर देखकर बोली—

"सुनते हो—!"

"आं हां—क्या है?" दिलीप चौंक पड़ा।

"एक बात सच-सच बताओगे?"

"क्या—?"

"तुम्हें मेरी कसम, झूठ मत बोलना। क्या तुमनें आज राजू की झूठी कसम खाई थी?"

"म—म—मैं—।"

"देखो झूठ मत बोलना। तुमने पूरी कसम नहीं खाई थी। फिर भी राजू की हालत इतनी खराब हो गई है।"

दिलीप राजू का चेहरा देखता रहा। और फिर उसकी आंखें भर आईं। वह बड़बड़ाकर बोला—

"हां कामिनी—मैंने झूठ बोला था।"

"हाय राम," कामिनी ने कलेजे पर हाथ रखकर कहा, "तो यह झूठ था कि तुम गीता के कमरे में गए थे?"

"यह तो झूठ नहीं था। लेकिन यह झूठ था कि गीता ने मुझे बुलाया था। मैं सिर्फ दो बार कमरे में गया था। एक बार उस दिन जब तुमने उसे पीटा था तो मैं तुम्हारी ओर से माफी मांगने के बहाने गया था। दूसरी बार उस रात जब अनु बारिश में भीग गई थी तो विक्स देने के बहाने गया था।"

"और यों ही चले आए थे?"

"गीता ने मुझे दोनों बार निकाल दिया था।"

"और तुम उस पर आरोप लगाते रहे?" कामिनी ने आश्चर्य से कहा।

"मैं तुम्हें क्या बताऊं कामिनी। यह सब तुम्हारी वजह से ही हुआ था। तुम हर समय मुझे शक की नज़रों से देखती थीं। तुमने हर औरत से मिलने पर पाबन्दी लगा दी थी। खुद हर घड़ी मेक-अप किए होटलों और क्लबों में घूमती थीं। मुझे भी तुम पर सन्देह होने लगा था। मैं मानसिक रूप से बहुत परेशान रहता था। मुझे शान्ति की खोज थी। मैंने गीता को देखा तो मैं उसकी ओर खिचने लगा। मैंने सोचा था कि अगर वह ऐसी-वैसी होगी तो दिल बहलाने में क्या हर्ज़ है। और अगर ऐसी-वैसी नहीं है तो एक अच्छी पत्नी बन सकती है।

"लेकिन जब इतने लोगों के सामने उसने मेरे सपनों को एक ज़बर्दस्त ठोकर मार दी और शादी की बात कहकर इतने लोगों के सामने मुझे अपमानित किया तो मैं प्रतिशोध की आग में जल उठा। और मैंने पड़ोसियों के दिमाग में भी गीता के विरुद्ध गलत-फहमी पैदा कर दी।"

"बहुत अच्छा किया आपने दिलीप बाबू," अचानक दरवाज़े पर से एक पड़ोसी की आवाज़ आई।

दिलीप और कामिनी चौंककर दरवाज़े की ओर देखने लगे। दरवाज़े के बाहर बहुत से पड़ोसी खड़े थे। कुछ अन्दर भी आ

गए थे।

आगे वाले पड़ौसी नें कहा—

शायद यह सब उस निर्दोष औरत पर लगाए गए आरोपों का ही परिणाम है। जिसे हमारे फूल-से बच्चे भुगते रहे हैं। भूखे रह-कर मरने पर तैयार हैं लेकिन अपनी ज़िद नहीं छोड़ते। कितना प्यार होता है बच्चों को सचाई से। वे नहीं जानते कि हराम और हलाल क्या है। किस तरह किसी पर झूठे आरोप लगाए जाते हैं और दुश्मनी और नफरत क्या होती है।"

अचानक राजू ने एक हिचकी-सी ली। कामिनी उछल पड़ी।

"राजू—मेरे लाल—!"

उसने राजू की गर्दन इधर-उधर हिलाई—

"नहीं, नहीं यह नहीं हो सकता- मेरा लाल ऐसे नहीं जा सकता। मैं अनु को बुलाकर लाती हूं— मेरे लाल—मैं अनु को बुलाकर लाती हूं।"

और फिर वह पागलों की तरह भागती हुई फ्लैट से निकल गई।

गीता के फ्लैट का दरवाज़ा खुला हुआ था। कामिनी भागती हुई अन्दर चली गई। अनु सामने ही बैठी किताब पढ़ रही थी। और गीता सावित्री देवी का एक फोटो दीवार पर टांग रही थी।

कामिनी ने अनु के पास पहुंचकर कहा—

"अनु— अनु बेटी— मेरे राजू को बचा ले बेटी— मेरे बेटे को बचा ले।"

अनु सहमकर पीछे सरक गई।

गीता ने जल्दी से फोटो टांग दिया और कामिनी की ओर देखने लगी।

कामिनी घुटनों के बल अनु के सामने जा बैठी और उसके आगे अपना आंचल फैलाकर बोली—

"मेरे राजू को बचा ले बेटी—नहीं तो वह सिसक-सिसककर मर जाएगा।"

"क्या कह रही हो कामिनी क्या हो गया राजू को?"

"उसने कल रात से कुछ नहीं खाया। कहता है अनु के साथ खेलने की इजाज़त मिलेगी तो खाऊंगा। गीता बहिन—भगवान के लिए अनु को भेजकर मेरे बच्चे को बचा लो।"

"कामिनी बहिन, तुम राजू को सिर्फ अपना ही बच्चा क्यों कहती हो बच्चे तो सभी के होते हैं। क्योंकि उनमें भगवान की झलक होती है और भगवान न कभी धोखा देते हैं न धोखा खाते हैं।"

थोड़ी देर के बाद अनु रो-रोकर राजू को पुकार रही थी।

अनु की आवाज़ सुनकर राजू ने आंखें खोल दीं और अनु ने छोटे-छोटे हाथों में पकड़ा हुआ दूध का गिलास राजू के होंठों से लगा दिया। राजू के होंठों पर एक पवित्र मुस्कराहट जाग उठी। और वह धीरे धीरे दूध पीने लगा।

थोड़ी देर के बाद बिल्डिग के सारे बच्चे कामिनी के फ्लैट में एक मेज़ पर बैठे खाना खा रहे थे। अनु अपने नन्हें-नन्हें हाथों से खाना ला-लाकर उन्हें खिला रही थी।

बसन्ती ने सावित्री देवी के बड़े-से फोटो के आगे अगरबत्ती सुलगाई और फिर उस पर फूलों की एक बड़ी-सी माला पहना दी।

अचानक उसकी सिसकियां निकल पड़ीं। वह दोनों हाथों में मुंह छिपाकर रोने लगी।

गीता ने धीरे से उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा—

"रोते नहीं हैं बसन्ती—मरने वाले को याद करने पर उसकी आत्मा बेचैन हो जाती है। और फिर सावित्री देवी वास्तव में मरी नहीं हैं। उनका बदन मर गया है लेकिन उनकी महान आत्मा ज़िन्दा है। आज भी वह हमारे दिलों में पहले की तरह ही ज़िन्दा हैं और हमेशा रहेंगी।"

अचानक सुमन के बच्चे के रोने की आवाज़ आई।

गीता ने चौंककर कहा—

"जाओ—देखो बेबी रो रहा है।"

बसन्ती और गीता उस कमरे से निकल आईं।

गीता सावित्री देवी के फ्लैट से निकलकर अपने फ्लैट की ओर जा रही थी तो उसकी नज़र कामिनी के फ्लैट के दरवाज़े पर पड़ी। दरवाज़ा खुला हुआ था। गीता की नज़र जैसे ही अंदर गई उसे फ्लैट कुछ उजड़ा-उजड़ा-सा दिखाई किया। इधर-उधर

बंधा हुआ सामान पड़ा था।

गीता ने बढ़कर दरवाज़े पर दस्तक देने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि उसके कान में कामिनी की आवाज़ पड़ी। वह दिलीप से कह रही थी।

"लेकिन हमें इतनी जल्दी रहने के लिए जगह मिल कहां जाएगी?"

"न सही। मैं कुछ दिनों में ही कोई प्लाट खरीदकर कोठी बनवाना शुरू कर दूंगा। तब तक के लिए मैंने एक दोस्त के बंगले में दो कमरे मांग लिए हैं। कुछ भी हो हमें अब इस बिल्डिंग में नहीं रहना चाहिए। अपनी इज़्ज़त अपने हाथ में होती है। तुम जानती ही हो इस बिल्डिंग से गीता को निकालने के लिए सबसे ज़्यादा जोर हम दोनों ने ही लगाया था। अब गीता इस पूरी बिल्डिंग की मालिक है। फिर हमारे पास कोई मजबूती भी नहीं। मिसेज़ सावित्री देवी अपने किसी किराएदार से दस-पांच हज़ार पगड़ी तो लेती नहीं थीं। लेकिन उनका हर एक किराएदार ग्यारह महीने के किरायानामे पर रहता था। और ग्यारह महीने के बाद वह किरायानामा रद्द करके नया किरायानामा लिखवा लेती थीं। वह न तो किसी किराएदार पर पगड़ी का बोझ डालती थीं और न अपनी बिल्डिंग पर किराएदारों का अधिकार ही पसन्द करती थीं। अब उस किराएनामा की मियाद में कुछ हफ्ते रह गए हैं। तुम समझती हो कि अपनी इतनी बेइज़्ज़ती कराने के बाद गीता हमें यहां देखना पसन्द करेगी?"

गीता फ्लैट के अंदर चली गई। दिलीप और कामिनी चौंककर गीता की ओर देखने लगे।

गीता कुछ देर तक उन दोनों को देखती रही। फिर बोली—

"क्या हो गया है आप लोगों को? आप लोग मुझे समझने की कोशिश क्यों नहीं करते। मैंने कब चाहा है कि इस बिल्डिंग से

कोई किराएदार निकलकर जाए। अगर मैं इस बिल्डिंग की मालिक हूं तो क्या यहां अकेली रहूंगी। इस बिल्डिंग पर जितना अधिकार मेरा है उतना ही आप सब लोगों का भी है।"

"गीता !" दिलीप ने आश्चर्य से कहा।

"बस चुपचाप सामान खोलिए और इस फ्लैट को दोबारा सजा लीजिए।"

और फिर वह तेज़ी से फ्लैट से निकल आई।

बारह

कार 'सावित्री सदन' के सामने पहुंचकर रुक गई। राजीव ने उतरकर खिड़की खोली और मां जी को सहारा देकर उतार लिया। और फिर बोला—

"मां जी, आपको तीन मंज़िल सीढ़ियां चढ़नी पड़ेंगी।"

"ज़रूर चढ़ूंगी बेटा," मां जी ने मुस्कराते हुए कहा, "अभी तो मेरे पैरों में इतना दम है कि बीस-तीस मंज़िल की सीढ़ियां भी चढ़ सकती हूं— यह दम तो तेरे कन्धों पर तभी पड़ेगा जब बहू घर में आ जाएगी।"

मां जी राजीव के साथ धीरे-धीरे सीढ़ियों की ओर बढ़ने लगीं। उनके चेहरे पर गहरी थकन और अस्वस्थता के निशान झलक रहे थे। लेकिन उनकी खामोश आंखों में एक दृढ़ता और संकल्प की झलक थी।

राजीव मां जी को लेकर सीढ़ियों के पास पहुंचा तो अचानक उसकी नज़र सीढ़ियों के बराबर ही लिफ्ट के दरवाज़े पर पड़ी। उसकी आंखें आश्चर्य से फैली रह गईं। लिफ्ट के दरवाज़े पर छोटा-सा बोर्ड लगा था। जिस पर लिखा था—"लिफ्ट चालू है। खुद इस्तेमाल कीजिए।"

राजीव की आंखें आश्चर्य से फैली रह गईं, "यह कैसे हो गया। मिसेज़ सावित्री देवी तो इस लिफ्ट को कभी ठीक नहीं करा सकतीं। उसे बसन्ती की बात याद आ गई। बसन्ती से उसने एक बार पूछा था कि यह लिफ्ट हमेशा खराब क्यों रहती है? इसकी मरम्मत क्यों नहीं कराई जाती?"

बसन्ती ने ठंडी सांस लेकर कहा था, "इस लिफ्ट को मालकिन कभी ठीक नहीं करायेंगी।"

राजीव के आश्चर्य प्रगट करने पर उसने बताया था कि इस लिफ्ट से मिसेज़ सावित्री देवी के जीवन की एक दुखद घटना जुड़ी हुई है। उसने बताया था कि मिसेज़ सावित्री देवी अपाहिज होने के बाद संसार से घृणा करने लगी थीं। लेकिन उनकी सास ने धीरे-धीरे उनके सारे घाव धो दिए थे। सास को वह भगवान का अवतार मानती थीं। उनके प्रति सावित्री देवी के मन में अपार श्रद्धा सम्मान और स्नेह था। सास की ज़रा-सी तकलीफ पर वह पागल हो उठती थीं। बेटे के गम में उनकी सास दिन पर दिन सूखती चली गईं। उनकी सेहत दिन पर दिन गिरती चली गई। आखिरी दिनों में उन पर हार्ट अटैक के दौरे पड़ने लगे थे। लेकिन समय पर डाक्टरी सहायता मिल जाने के कारण वह ज़िन्दा थीं।

एक दिन उनकी सास डाक्टर के पास जा रही थीं। जब वह लिफ्ट के द्वारा नीचे जाने लगीं तो अचानक बीच में ही बिजली चली गई। वह चिल्लाईं और उन पर दिल का दौरा पड़ गया। लगभग पन्द्रह मिनट तक बिजली नहीं आई। और इसी बीच

उनकी मृत्यु हो गई। बस उसी दिन से सावित्री देवी ने लिफ्ट को मनहूस समझकर बंद करा दिया।

लेकिन वही लिफ्ट आज चालू हालत में थी। न जाने क्यों राजीव के दिल की धड़कनों की हालत कुछ विचित्र-सी हो गई।

अचानक मां जी ने कहा—

"अरे चल न। क्या खड़े-खड़े सपना देखने लगा।"

राजीव चौंककर मां जी को लिफ्ट के पास ले आया।

मां जी ने आश्चर्य से कहा—

"अरे, तू तो कहता था कि लिफ्ट बंद है।"

"मेरे पीछे ही खुली है मां जी," राजीव ने आश्चर्य से कहा, "बस चार दिन में ही इतना बड़ा परिवर्तन कैसे हो गया।"

राजीव मां को ऊपर ले गया। ऊपर बालकनी में एक विचित्र-सा सन्नाटा छाया हुआ था। राजीव की आंखें इधर-उधर भटक रही थीं। फ्लैट के पास पहुंचकर वह रुक गया। उसने फ्लैट का ताला खोलकर मां जी से कहा—

"आइए मां जी।"

मां जी अन्दर चली गईं।

राजीव ने पलंग पर बिस्तर बिछा दिया और बोला—

"आप आराम कीजिए, मैं अभी आता हूं।"

वह फ्लैट से निकलकर बालकनी में आ गया। वह बालकनी के किनारे पर पहुंचा तो उसके दिल की धड़कनें और तेज़ हो गईं। उसने सावित्री देवी के फ्लैट के दरवाज़े पर हाथ रखा। दरवाज़ा खुल गया। एक विचित्र-सी खुशबू उसकी नाक से टकराई। उसने हल्की-सी झुरझुरी ली और धीरे-धीरे अंदर की ओर बढ़ने लगा। सावित्री देवी का बिस्तर खाली पड़ा था।

वह मुड़कर उस कमरे की ओर चल दिया जिसमें सावित्री देवी पूजा किया करती थीं। उनकी व्हील चेयर सामने ही रखी थी

और उस पर सावित्री देवी बैठी हुई थीं। राजीव ने इत्मीनान की सांस ली और धीरे-धीरे बढ़ता हुआ व्हील चेयर के पास पहुंच गया।

अचानक उसकी नज़र सामने दीवार पर लगे फोटो पर पड़ी। वह तो सावित्री देवी का फोटो था। फोटो के नीचे लोबान सुलग रहा था।

राजीव ने आश्चर्य से कुर्सी की ओर देखा। कुर्सी पर सावित्री देवी नहीं वसन्ती बैठी थी। आंखें बंद किए वह होंटों में पाठ कर रही थी। उसकी बंद आंखों से आंसू बह रहे थे।

राजीव को एक ज़ोरदार धक्का लगा। वह सन्नाटे में खड़ा रह गया। उसकी नज़रें सावित्री देवी के फोटो पर जमी हुई थीं।

कुछ देर बाद अचानक वसन्ती ने दोनों हाथों में मुंह छिपा लिया और सिसकियां भरने लगी।

राजीव का हाथ धीरे से उठा और वसन्ती के बालों पर रेंगने लगा।

वसन्ती ने चौंककर राजीव की ओर देखा। वह कुछ देर आश्चर्य से उसे देखती रही और फिर हाथों में मुह छिपाकर फूट-फूटकर रोने लगी।

मां जी ने थके-थके अंदाज़ में फ्लैट पर एक गहरी नज़र डाली और फिर इत्मीनान से एक आराम कुर्सी पर बैठ गईं। उन्होंने आंखें मूंद लीं और गहरी-गहरी सांसें लेने लगीं।

कुछ देर बाद उन्होंने ज़ोर से दरवाज़ा खुलने की आहट सुनी। दरवाज़े का एक किवाड़ दीवार से टकराया था। उन्होंने आंखें

खोल दीं और दरवाज़े की ओर देखने लगीं। दरवाज़े में एक सुन्दर और भोली-भाली बच्ची खड़ी थी। वह स्कूल के यूनीफार्म में थी। उसके गले में बस्ता लटका हुआ था। और वह पुकार रही थी—

"अंकल—अंकल—आप कहां हैं अंकल ?"

उसने मां जी को नहीं देखा था। मां जी उसे बड़े ध्यान से देखने लगीं। उन्हें अनायास ही उस पर प्यार आ गया। उन्होंने पूछा—

"क्यों बेटी, किसे पुकार रही हो ?"

बच्ची ने चौंककर मां जी की ओर देखा और फिर अचानक उसके दोनों हाथ मासूम-से अंदाज़ में जुड़ गए। और फिर धीरे से बड़े अदब से बोली—

"नमस्ते।"

"जीती रहो बेटी—जीती रहो," मां जी के मन में गुदगुदी-सी होने लगी।

"मैं अंदर आ जाऊं ?" बच्ची ने बड़ी मासूमियत से पूछा।

"आ जाओ बेटी, इसमें भला पूछने की क्या बात है ?"

"मम्मी कहती हैं कि किसी के घर में जाने से पहले घर वालों से पूछ लेना चाहिए।"

बच्ची अंदर आ गई।

मां जी ने उसे अपने पास बुलाया और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बड़े ध्यान से देखने लगीं। उनके मन में एक अज्ञात-सी स्नेह की भावना जाग उठी। उन्होंने बड़े प्यार से पूछा—

"क्यों बेटी, तुम राजीव की तलाश में थीं ?"

"जी हां दादी मां।"

"दादी मां—!" मां जी का दिल बहुत ज़ोर से धड़क उठा।

"आप मम्मी से बड़ी हैं न—मम्मी कहती हैं, बड़ों के साथ अदब से बात करनी चाहिए।"

डायमंड पाकेट बुक्स में वैश्या का खून की अपार सफलता के बाद

जनप्रिय लेखक

ओम प्रकाश शर्मा

का एक और जासूसी उपन्यास

रूपमहल का कैदी

(रूपमहल का कैदी और माधवपुर हत्याकाण्ड दो उपन्यासों का सयुंक्त प्रकाशन)

मूल्य 4/-

दो ऐसे रोचक, रोमांचक उपन्यास जो आपको जनप्रिय लेखक की रचनाओं का नियमित पाठक बना देंगे!

डायमंड पाकेट बुक्स को जनप्रिय लेखक ओमप्रकाश शर्मा की रचना के प्रकाशन पर गर्व है!

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करवालें!

डायमंड पाकेट बुक्स

2715 दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

डायमंड पाकेट बुक्स में

जासूसी उपन्यासकारों में एक लोकप्रिय नाम

इंस्पेक्टर गिरीश

जिसके उपन्यासों में रहस्य, रोमांच और थ्रिल का एक बेजोड़ मेल होता है।

इंस्पेक्टर गिरीश का

'खून के सौदागर'

के बाद एक और सनसनीखेज उपन्यास -

ज़हरीली अंगूठी

मूल्य 4/-

इंस्पेक्टर गिरीश के उपन्यास केवल 'डायमंड पाकेट बुक्स' में ही प्रकाशित होते हैं।

"दादी मां—!" मां जी फिर बड़बड़ाईं।

और बच्ची के सिर पर धीरे-धीरे हाथ फेरने लगीं। उनके दिल में एक विचित्र-सी तड़प जाग उठी थी। एक अजीब-सी चाहत। कितनी मिठास भरी थी इस शब्द में—कितना सुख और चैन भरा था—इस एक शब्द को सुनने के लिए वह न जाने कब से तड़प रही थीं—दादी मां—दादी मां—।

उन्होंने बच्ची को देखा—बड़े प्यार से।

बच्ची ने पूछा—

"अंकल कहां हैं दादी मां?"

"दादी मां—! एक बार फिर कह बेटी—!"

"दादी मां—!" बच्ची ने बड़ी मासूमियत से कहा।

"फिर कहो बेटी।"

"दादी मां—!"

बेचैन होकर मां जी ने बच्चे को कलेजे से लगाकर भींच लिया और उसे बार-बार चूमकर बोलीं—

"क्या नाम है तुम्हारा बेटी?"

"अनु—सब लोग अनु कहते हैं दादी मां—लेकिन मम्मी कहती हैं कि मेरा आम अनुराग है।" बच्ची ने कहा और फिर मां जी का हाथ थामकर बोली, "लेकिन दादी मां, अनुराग तो लड़कों का नाम होता है न। मैं मम्मी से कहती हूं तो वह कहता हैं अनु तू मेरी बेटी भी है और बेटा भी है। जब मैं तुझे बेटी समझती हूं तो अनु कहकर पुकारती हूं और जब बेटा समझती हूं तो अनुराग कहकर पुकारती हूं। है न अजीब बात दादी मां?"

"तुम्हारी मम्मी ठीक ही तो कहती हैं बेटी—तुम कहां रहती हो बेटी?"

"यहीं बराबर वाले फ्लैट में?"

"स्कूल में पढ़ती हो?"

"जी हां —तीसरी क्लास में।"

"शाबाश बेटी—तुम तो बहुत प्यारी बच्ची हो।"

अनु शरमा गई। और उसके शरमाने की अदा मां जी को इतनी प्यारी लगी कि उन्होंने फिर अनु को अपनी बांहों में भरकर भींच लिया।

थोड़ी देर के बाद अनु ने चौंककर देखा और बोली—

"अच्छा दादी मां, मैं जाती हूं।"

"क्यों अनु, ठहरो ना।"

"शायद मम्मी आ गई होंगी।"

"अच्छा बेटी। तुम मेरे पास आया करना—और कभी मुझे भी अपने घर ले चलना।"

"बहुत अच्छा दादी मां।"

अनु मां जी को प्यार करके बाहर निकल आई।

मां जी प्यार भरी नज़रों से दरवाज़े की ओर देखती रहीं।

अनु ने अपने फ्लैट का दरवाज़ा देखा। दरवाज़ा बंद था। फिर वह कुछ सोचकर इत्मीनान से चलती हुई सावित्री देवी के फ्लैट की ओर चल दी।

फ्लैट का दरवाज़ा खुला हुआ था।

अंदर राजीव और बसन्ती थे।

बसन्ती राजीव को बता रही थी –

"और अब गीता दीदी ही 'सावित्री सदन' की मालिक हैं। और गीता दीदी कहती हैं कि इस बिल्डिंग का नाम यही रहेगा। यानी 'सावित्री सदन' ही रहेगा। गीता दीदी ने ही लोगों की तक-

लीफ देखकर लिफ्ट खुलवा दी है।"

अनु ने जैसे ही अंदर कदम रखा उसकी नज़र राजीव पर पड़ी। उसने ज़ोर से चिल्लाकर पूछा—

"अंकल—अंकल—आप आ गए अंकल?"

"अरे अनु—मेरी बेबी डाली," राजीव ने दोनों हाथ फैला दिए, और अनु भागती हुई राजीव की गोद में चढ़ गई।

"आपने इतने दिन क्यों लगा दिए अंकल? हम आपको बहुत याद करते थे अंकल।"

"सच?"

और राजीव ने अनु को फिर ज़ोर से भींच लिया।

गीता ने ऊपर आकर बाल्कनी में बढ़ते हुए राजीव के फ्लैट के दरवाज़े की ओर देखा। दरवाज़ा खुला हुआ था। उसने नीचे राजीव की कार खड़ी देखी थी। उसके दिल की धड़कनों में कुछ अस्त-व्यस्तता जाग उठी। आंखों में अनायास ही लाज की लालिमा दौड़ने लगी।

फिर वह नपे तुले कदम बढ़ाती हुई धीरे-धीरे फ्लैट के दरवाज़े तक पहुंच गई। उसने दरवाज़े के सामने खड़े होकर दरवाज़े पर उंगली की नोक से दस्तक दी और फिर धीरे से पुकारा—

"राजीव बाबू!"

दूसरे ही पल एक बूढ़ी आवाज़ उसके कानों से टकराई—

"कौन है?"

गीता चौंक पड़ी। उसे याद आ गया कि राजीव तो मां जी को लेने गया था। तो यह मां जी ही हैं।

उसने एक कदम आगे बढ़ाया। सामने ही आराम कुर्सी पर मां जी बैठी हुई थीं। कमज़ोर और चुप-चुप-सी। उनके माथे पर उनके आत्म विश्वास, दृढ़ता और संकल्प की झलक स्पष्ट दिखाई दे रही थी। ऐसा लगता था जैसे उनकी ज़बान से जो बात निकल जाती है पत्थर की लकीर बन जाती है।

गीता के दिल में फिर बेतरतीब-सी धड़कनें जाग उठीं। उसने जल्दी से अपने आपको संभाल लिया। फिर जल्दी-जल्दी आंचल ठीक किया और दोनों हाथ जोड़कर बोली—

"नमस्ते मां जी—!"

"जीती रहो बेटी— जीती रहो—आओ अंदर आओ।"

गीता धीरे-धीरे चलती हुई अंदर पहुंच गई।

उसके दिल में एक विचित्र-सी धड़कन थी। एक विचित्र-सी बेचैनी थी लेकिन चेहरे पर एक विचित्र-सी दृढ़ता थी। वह धीरे-धीरे बढ़ती हुई मां जी के पास पहुंच गई।

मां जी उसे बड़े ध्यान से देख रही थीं। उनके होंठों में कंप-कंपाहट थी। आंखों में एक तेज़ चमक थी। जब गीता उनके पास पहुंच गई तो मां जी के होंठों की कंपकंपाहट मुस्कराहट में बदल गई। उन्होंने इत्मीनान से कहा—

"तुम गीता हो?"

गीता ने आगे बढ़कर मां जी के पैर छू लिए।

मां जी ने उसका कन्धा पकड़कर कहा—

"जीती रहो बेटी—यहीं, रुक जाओ—मैं तुम्हें जी भरकर देखना चाहती हूं।"

गीता लाज भरी पलकें लिए हुए बैठी रही। मां जी ने उसकी ठोढ़ी पकड़कर उसका चेहरा ऊपर उठाया और उसे बड़े ध्यान से देखने लगीं।

गीता ने लजाकर आंखें मूंद लीं।

कुछ देर तक मां जी उसे ध्यान से देखती रहीं फिर बोलीं—

"झूठा है— एकदम झूठा है—यह राजीव का बच्चा—।"

गीता ने घबराकर आंखें खोल दीं। और सहमी हुई-सी मां जी की ओर देखने लगी।

मां जी ने कहा—

"उस बुद्धू ने कहा था—गीता बहुत सुन्दर है। चंदा की तरह।"

गीता के चेहरे का रंग उड़ गया।

मां जी कुछ रुककर बोलीं—

"उसे तो यह कहना चाहिए था कि गीता चंदा से भी अधिक सुन्दर है।"

गीता शर्मा गई। उसने दोनों हाथों में अपना चेहरा छिपा लिया। मां जी ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए सपनीले स्वर में कहा—

"सच कहती हूं बेटी—मैंने अपनी बहू के सौन्दर्य के बारे में जो रेखाचित्र अपने मस्तिष्क में बनाया था—एकऐसी बहू जिसकी आंखों के चिराग मेरे घर को उजाले से भर दें। जिसकी सांसों की पवित्र महक से घर का कोना-कोना महक उटे। राजीव ने मुझे बताया था कि उसने एक लड़की खोज ली है तो मैं बेचैन हो उठी थी—यह सोचकर कि कहीं मेरी कल्पना को ठेस न लगे।

"लेकिन आज तुम्हें देखकर मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि मैंने भगवान से अपने घर के लिए एक चिराग मांगा था पर भगवान ने चिराग के बदले मुझे एक सूरज दे दिया—जिसकी रोशनी से मेरी आत्मा तक जगमगा उठी है।"

तभी कदमों की चाप सुनाई दी।

मां जी चौंककर दरवाज़े की ओर देखने लगीं।

"लो वह राजीव भी आ गया।—कहां चला गया था रे?"

गीता ने चौंककर देखा। राजीव के साथ अनु भी थी। अनु ने गीता को देखा तो बोल उठी—

"अरे मम्मी, आप यहां हैं? मैं आपको बसन्ती आन्टी के पास देखने गई थी।"

"मम्मी—!" मां जी हैरान रह गईं।

गीता जल्दी से उठी और अनु को गोद में उठाकर तेज़ी से चली गई।

राजीव दरवाज़े पर ही खड़ा रह गया। और मां जी आश्चर्य से राजीव की ओर देखने लगीं।

उनके मस्तिष्क में अनगिनत धमाके गूंज रहे थे। ऐसा महसूस हो रहा था जैसे एक के बाद एक सारी दीवारें उनके ऊपर गिरती चली जा रही हों। चारों ओर बाढ़ उमड़ पड़ी है, पेड़ों के चटाक-चटाक टूटने की आवाजें आ रही हों।

वह फटी-फटी आंखों से राजीव को देखती रहीं। लेकिन अब वहां राजीव कहां था। वहां तो केवल तूफान ही तूफान थे। फिर तूफान भी अंधेरे की तहों में गुम होते चले गए और धीरे-धीरे गहरा सन्नाटा छा गया।

मां जी की गर्दन एक ओर को ढुलक गई थी और वह गहरी-गहरी सांसें ले रही थीं।

राजीव चुपचाप खड़ा मां जी को देख रहा था। फिर वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा। उसने मां जी को उठाकर बिस्तर पर लिटा दिया और मां जी के बालों में उंगलियां फेरते हुए धीरे-धीरे कहने लगा—

"मैं जानता था कि जब आपको यह पता चलेगा तो आपको जबर्दस्त धक्का लगेगा। अच्छा हुआ यह भेद जल्दी ही खुल गया। मैं आपकी भावनाओं को जानता हूं। आप कुछ दिनों के बाद गीता को समझने लगेंगी। और फिर आपको खुद ही महसूस होने लगेगा

कि आपके सपनों के निर्माण से कहीं अधिक आवश्यक गीता और अनु के भविष्य का निर्माण है। उन्हें संसार की दया पर नहीं छोड़ा जा सकता।"

लेकिन मां जी ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह तो बेहोश पड़ी थीं।

तेरह

मां जी ने पूरी रात आंखों में ही काट दी।

सुबह जब राजीव ऑफिस जाने लगा तो मां जी ने उसका चेहरा ध्यान से देखा। उसके चेहरे पर कोई पछतावे या खेद का भाव नहीं था। एक मौन निर्णय की झलक थी।

मां जी ने पूछा—

"शाम को कितने बजे तक लौटोगे?"

"छै बजे तक," राजीव ने इत्मीनान से उत्तर दिया।

"मुझे घर कब वापस पहुंचाओगे?"

राजीव ने ध्यान से मां जी का चेहरा देखा और फिर उसके होंठों पर मुस्कराहट फैल गई। वह मां जी के पास गया। उसने उनके गले में बांहें डालकर कहा—

"इतनी जल्दी उकता गईं अपने बेटे से?"

"औलाद जब अपना अच्छा-बुरा समझकर स्वयं निर्णय करने लगती है तो उसे मां-बाप की जरूरत ही कब रहती है।"

गीता ने चौंककर देखा। राजीव के साथ अनु भी थी। अनु ने गीता को देखा तो बोल उठी—

"अरे मम्मी, आप यहां हैं? मैं आपको बसन्ती आन्टी के पास देखने गई थी।"

"मम्मी—!" मां जी हैरान रह गईं।

गीता जल्दी से उठी और अनु को गोद में उठाकर तेज़ी से चली गई।

राजीव दरवाज़े पर ही खड़ा रह गया। और मां जी आश्चर्य से राजीव की ओर देखने लगीं।

उनके मस्तिष्क में अनगिनत धमाके गूंज रहे थे। ऐसा महसूस हो रहा था जैसे एक के बाद एक सारी दीवारें उनके ऊपर गिरती चली जा रही हों। चारों ओर बाढ़ उमड़ पड़ी है, पेड़ों के चटाक-चटाक टूटने की आवाजें आ रही हों।

वह फटी-फटी आंखों से राजीव को देखती रहीं। लेकिन अब वहां राजीव कहां था। वहां तो केवल तूफान ही तूफान थे। फिर तूफान भी अंधेरे की तहों में गुम होते चले गए और धीरे-धीरे गहरा सन्नाटा छा गया।

मां जी की गर्दन एक ओर को ढुलक गई थी और वह गहरी-गहरी सांसें ले रही थीं।

राजीव चुपचाप खड़ा मां जी को देख रहा था। फिर वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा। उसने मां जी को उठाकर बिस्तर पर लिटा दिया और मां जी के बालों में उंगलियां फेरते हुए धीरे-धीरे कहने लगा—

"मैं जानता था कि जब आपको यह पता चलेगा तो आपको ज़बर्दस्त धक्का लगेगा। अच्छा हुआ यह भेद जल्दी ही खुल गया। मैं आपकी भावनाओं को जानता हूं। आप कुछ दिनों के बाद गीता को समझने लगेंगी। और फिर आपको खुद ही महसूस होने लगेगा

कि आपके सपनों के निर्माण से कहीं अधिक आवश्यक गीता और अनु के भविष्य का निर्माण है। उन्हें संसार की दया पर नहीं छोड़ा जा सकता।"

लेकिन मां जी ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह तो वेहोश पड़ी थीं।

तेरह

मां जी ने पूरी रात आंखों में ही काट दी।

सुबह जब राजीव ऑफिस जाने लगा तो मां जी ने उसका चेहरा ध्यान से देखा। उसके चेहरे पर कोई पछतावे या खेद का भाव नहीं था। एक मौन निर्णय की झलक थी।

मां जी ने पूछा—

"शाम को कितने बजे तक लौटोगे?"

"छै बजे तक," राजीव ने इत्मीनान से उत्तर दिया।

"मुझे घर कब वापस पहुंचाओगे?"

राजीव ने ध्यान से मां जी का चेहरा देखा और फिर उसके होंठों पर मुस्कराहट फैल गई। वह मां जी के पास गया। उसने उनके गले में बांहें डालकर कहा—

"इतनी जल्दी उकता गईं अपने बेटे से?"

"औलाद जब अपना अच्छा-बुरा समझकर स्वयं निर्णय करने लगती है तो उसे मां-बाप की ज़रूरत ही कब रहती है।"

"बस ?" राजीव हंस पड़ा, "इतनी जल्दी निर्णय कर लिया आपने ?"

"तुम तो मुझसे पहले ही निर्णय कर चुके हो।"

"हां, निर्णय तो कर चुका हूं। लेकिन आपने यह कैसे सोच लिया कि मेरा निर्णय आपके निर्णय से टकरा जाएगा।"

मां जी बड़े ध्यान से उसके चेहरे को देखने लगीं।

राजीव ने मुस्कराकर कहा—

"मैंने काफी दिनों तक गीता को पास और दूर से देखने के बाद ही यह निर्णय किया है। लेकिन आपने कुछ मिनट देखने के बाद ही उसके विरुद्ध निर्णय दे डाला।"

"बेटा, जवान नज़रों की रफ्तार तेज़ होती है। इसलिए उसे रास्ते के ईंट पत्थर भी सपाट सड़क की तरह मालूम होते हैं। लेकिन बूढ़ी आंखें ठहर-ठहरकर चलती हैं इसलिए रास्ते की छोटी-से-छोटी ऊंच-नीच भी उनकी नज़रों से छिपी नहीं रहती।"

"और आपने यह भी देखा होगा कि कभी-कभी हम हीरे को भी कांच का टुकड़ा समझकर मिट्टी में फेंक देते हैं और वह एक दिन मिट्टी में ही खोकर रह जाता है।"

मां जी ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह राजीव की आंखों की दृढ़ता, निश्चय और संकल्प को पढ़ती रहीं।

राजीव ने मुस्कराकर कहा—

"फिर भी मैं आपको इत्मीनान दिलाता हूं। गीता तब तक आपकी बहू नहीं बनेगी जब तक आप स्वयं उसके पक्ष में निर्णय न दे देंगी। और मैं यह निर्णय आपकी ममता और स्नेह पर दबाव डाल कर कभी नहीं कराऊंगा। आप कल ही आई हैं। दो चार सप्ताह या दो चार महीने यहां रहिए। गीता से घृणा करके भी देखिए और स्नेह करके भी देखिए। उसे निकट से भी देखिए और दूर से भी देखिए। उसे खूब अच्छी तरह जांचिए परखिए। और इसी तरह

अनु को भी कभी अपने कलेजे से लगाकर उसके मासूम दिल की धड़कनों को भी सुनिए। फ्लैट से बाहर निकलकर गीता और अनु के बारे में पड़ौसियों से खुलकर बातें कीजिए। अनु और इस बिल्डिंग में रहने वालों का परस्पर स्नेह देखिए और यह सब देखने के बाद भी अगर आप गीता के विरुद्ध निर्णय देंगी तो इत्मीनान रखिए आपका बेटा आपके निर्णय पर सब कुछ निछावर कर देगा।"

मां जी ने इस तरह इत्मीनान भरी सांस ली जैसे कोई कलाकार अपनी किसी कृति पर सन्देह कर बैठा हो कि उसमें कोई कमी रह गई है। और फिर उसे सन्तुष्टि और विश्वास हो जाए कि उसमें कोई कमी नहीं है तो वह चैन की सांस ले।

"अच्छा, अब मुझे जल्दी से प्यार कीजिए। मुझे आफिस को देर हो रही है," राजीव ने मां जी की आंखों में देखते हुए कहा।

मां जी ने राजीव का माथा चूम लिया।

राजीव हंसते हुए दरवाज़े की ओर बढ़ने लगा तो मां जी ने कहा—

"अरे सुन तो—क्या वह विधवा है ?"

दरवाज़े की ओर बढ़ते हुए राजीव के कदम रुक गए। वह कुछ देर बिना मुड़े चुपचाप खड़ा रहा और फिर धीरे से बोला—

"वह कुंवारी मां है।"

और फिर वह मां जी की ओर बिना देखे ही बाहर निकल गया।

मां जी आश्चर्य में डूबी बैठी रहीं।

उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे राजीव उनके कानों के पास एटम बम छोड़ गया हो। जिसके धमाके के बाद न केवल उनकी सुनने

की शक्ति नष्ट हो गई हो बल्कि उनके सारे अंग बेकार हो गए हों।

वह जैसी बैठी थीं, वैसी ही बैठी रहीं।

राजीव और गीता आफिस से लौट रहे थे। गीता राजीव के बराबर अगली सीट पर बैठी हुई थी। वह कुछ चिन्तित दिखाई दे रही थी।

राजीव ने कार ड्राइव करते-करते कहा—

"गीता—!"

"आं—!" गीता चौंक पड़ी।

"किस सोच में डूबी बैठी हो?"

"जी—, मैं मां जी के बारे में सोच रही हूं।"

"क्या सोच रही हो?"

"न जाने क्यों मुझे उन्हें देखकर डर-सा लगता है?"

"अरे वाह, क्या मां जी इतनी डरावनी हैं?"

"नहीं, यह बात नहीं है। मेरी समझ में नहीं आता कि किस तरह बताऊं। उनके चेहरे से मुझे एक विचित्र-सी रोशनी फूटती महसूस होती है। ऐसी रोशनी जो केवल देवी-देवताओं के चेहरों से ही फूटती है। जब मैं उनके पास बैठी थी तो ऐसा लग रहा था जैसे मेरी आत्मा झुलसती जा रही हो। मैं बता नहीं सकती कि मैं अपने आपको कितनी कमज़ोर महसूस कर रही थी।"

"पगली, देवी-देवताओं के चेहरों की रोशनियां झुलसाया नहीं

करतीं। वह तो आत्मा के अंधकारों को धो डालती हैं और सोने को तपाकर कुन्दन बना देती हैं।"

"फिर भी मुझे ऐसा लगता है कि मां जी मुझे स्वीकार नहीं करेंगी।"

"इसका अर्थ है कि तुम्हें स्वयं पर विश्वास नहीं है। और इंसान अपने आप पर से विश्वास तभी खोता है जब वह यह महसूस कर लेता है कि उसके अंदर कोई कमी है।"

गीता कुछ न बोली।

राजीव ने उसका कन्धा पकड़ा और उसे अपने निकट लाते हुए बोला—

"गीता, अगर अपने ऊपर विश्वास नहीं है तो कम से कम मेरे प्यार पर तो भरोसा रखो।"

"आपने उन्हें अनु के बारे में वहीं क्यों नहीं बता दिया था ?"

"मैं चाहता था कि वह स्वयं तुम्हें और अनु को यहां आने के बाद निकट से देखें। अगर वहां बता देता तो वह यहां कभी न आतीं।"

"और अब क्या भरोसा है कि वह—।"

कहते-कहते गीता रुक गई।

"हमें परिस्थितियों के अंधेरे पक्ष की बजाय उजले पक्ष पर नज़र रखनी चाहिए।"

राजीव ने गीता को अपने और निकट कर लिया।

"मैं चाहता हूं कि तुम अधिक से अधिक समय मां जी के सामने रहो। वह तुम्हें बार-बार देखें।—अरे हां, अब तो तुम 'सावित्री सदन' की मालिक हो। काफी किराया आता है इस बिल्डिंग का। फिर तुम्हें साढ़े चार सौ रुपये की नौकरी करने की क्या ज़रूरत है।"

"नौकरी तो मैं स्वयं को व्यस्त रखने के लिए करती रहूंगी।"

"बेकार है। इससे कोई लाभ न होगा। तुम नौकरी छोड़ दो और अनु की ढंग से देखभाल करो। ताकि तुम्हें मां जी के सामने बार-बार आने का मौका मिल सके।"

गीता ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"तुम कल ही रिज़ाइन दे दो। समय बिताने के लिए ऐसी बातें सीखो जिनसे विवाह से बाद मेरी और अनु की देखभाल में आसानी हो।"

और गीता की चिन्तित आंखों में कुछ सपने उभर आए।

अनु और राजू लिफ्ट से निकलकर बाल्कनी में आए और एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए राजीव के फ्लैट के सामने से गुज़रने लगे।

अचानक अनु ठिठककर रुक गई।

"क्या हुआ?" राजू ने पूछा।

"तुम जाओ राजू –मैं दादी मां के पास होकर आऊंगी।"

"अरे, तुम्हारी दादी मां कहां से आ गईं?"

"मेरी नहीं हैं," अनु ने बड़ी मासूमियत से कहा, "लेकिन बहुत अच्छी हैं। कल मुझे बहुत प्यार किया था। ऐसी अच्छी दादी मां तो शायद सचमुच की भी नहीं होती होंगी।"

"अच्छा तुम जाओ। मैं थोड़ी देर के बाद किताब लेकर आ जाऊंगा। फिर हम साथ-साथ पढ़ेंगे।" राजू ने कहा और अपने फ्लैट की ओर चला गया।

मां जी ने अनु और राजू की बातें सुन ली थीं। उनके दिल में एक विचित्र-सी धड़कन जाग उठी थी। जब उन्होंने अनु को आते देखा तो वह संभलकर बैठ गईं।

अनु ने हाथ जोड़कर कहा—

"नमस्ते दादी मां!"

लेकिन मां जी ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह बहुत ध्यान से अनु को देखती रहीं।

अनु—जो एक कुंवारी मां की बेटी थी। अपनी मां की चरित्र-हीनता का जीवन्त प्रमाण थी। मां जी के मन में घृणा और क्रोध जाग उठा। और यह सोचकर कि यह गीता की बेटी है। उस गीता की जिसने उनके बेटे को अपने रूप जाल में फांस रखा है।

मां जी की आंखों में क्रोध और घृणा की आग धधक उठी।

मां जी के चेहरे को देखकर अनु सहमकर पीछे हट गई। और फिर धीरे-धीरे अपने फ्लैट की ओर चली गई।

मां जी की आंखों के आगे अनु का सहमा हुआ चेहरा उभर रहा था। और अनु सहमी हुई बाल्कनी की रेलिंग से लगी चुपचाप खड़ी थी। मां जी के दिल में ममता उमड़ पड़ी। लेकिन दूसरे ही पल उनकी आंखों के आगे गीता का चेहरा घूम गया। और उनके दिल में अनु के प्रति उमड़ती ममता जहां की तहां ठंडी पड़ गई।

अनु रेलिंग के सहारे चुपचाप उदास-उदास-सी खड़ी थी।

राजू ने उसके पास आकर उसके चेहरे को देखते हुए कहा—

"अरे अनु, तुम दादी मां के पास नहीं गईं ?"

"आं हां," अनु ने गर्दन हिलाकर कहा।

"फिर इतनी जल्दी क्यों बाहर आ गईं ?"

"दादी मां नाराज़ मालूम होती हैं आज हमसे," अनु की आवाज़ गले में रुंध गई।

"क्यों ? नाराज़ क्यों हैं ? तुमने उनका क्या बिगाड़ा है ?"

"कुछ भी नहीं," अनु ने हल्की-सी सुबकी ली, "हमने तो किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा। पहले हमसे सभी नाराज़ रहते थे। तुम्हारी मम्मी भी—तुम्हारे डैडी भी और भी सब।"

"तो क्या हुआ ?" राजू अनु के सिर पर हाथ फेरते हुए बोला, "अब तो तुम्हें सब प्यार करते हैं। पहले बिल्डिंग के किसी भी बच्चे को तुम्हारे साथ खेलने नहीं दिया जाता था। अब तो सब तुम्हारे साथ खेलते हैं। अब तो मेरी मम्मी मुझे डांटती हैं तो जानती हो क्या कहती हैं ? कहती हैं तू एकदम नालायक है। अनु जैसी बच्ची के साथ रहकर भी तुझे अकल नहीं आई। उस दिन शन्नो की मां शन्नो से कह रही थीं—ओ शन्नो की बच्ची, कम्बख्त—अगर तुझे कुछ नहीं आता जाता तो अनु के साथ रहा कर। उससे सीखा कर। उस दिन गुड्डू अपने पापा के कन्धे पर चढ़ गया था तो उसकी मम्मी ने चिल्लाकर कहा था, "तमीज़ से रहा कर। जैसे अनु रहती है। वरना मार-मारकर भुस भर दूंगी खाल में।··· अरे अनु, अगर गुड्डू की खाल में भुस भर दिया जाए तो वह खूब मोटा हो जाएगा—कैसा लगेगा तब ?"

अनु और राजू हंस पड़े।

और फिर सहसा अनु की आंखें गीली हो उठीं।

राजू ने कहा—

"अब तुम दादी मां के पास नहीं जाओगी ?"

"जाऊंगी। लेकिन जब वह बुलायेंगी तभी जाऊंगी।"

"वह तुमसे नाराज़ हैं यह तो बहुत बुरी बात है अनु—अच्छे आदमी बच्चों से कभी नाराज़ नहीं होते—।"

"दादी मां भी बहुत अच्छी हैं राजू—बहुत ही अच्छी हैं। लेकिन पता नहीं क्यों नाराज़ हो गई हैं—कोई बात नहीं। फिर खुश हो जायेंगी—जैसे तुम्हारी मम्मी और डैडी पहले हमसे नाराज़ थे लेकिन अब खुश हैं।"

"तुम यहां कब तक खड़ी रहोगी इस तरह ?" राजू ने कहा और फिर कुछ सोचकर बोला, "ठहरो, मैं मम्मी से पूछता हूं शायद गीता आन्टी उन्हें चाबी दे गई हों।"

राजू चला गया।

अनु ने फिर राजीव के फ्लैट की ओर देखा। मां जी दरवाज़े में खड़ी थीं।

अनु उन्हें देखते ही फिर सहम गई। और भयभीत हिरणी की तरह उनकी ओर देखने लगी।

तभी राजीव और गीता बालकनी में आ गए। गीता को देखते ही अनु ज़ोर से चिल्लाई—

"मम्मी—!"

मां जी ने पलटकर उस ओर देखा। और फिर क्रोध में भरकर पीछे हट गईं।

मां जी ने चौंककर दरवाज़े की ओर देखा। अनु सहमी हुई दरवाज़े के पास खड़ी थी। मां जी को अपनी ओर देखते पाकर

उसने सहमे हुए अन्दाज़ में दोनों हाथ जोड़े और बोली—

"नमस्ते दादी मां !"

मां जी के मस्तिष्क को एक झटका-सा लगा। और फिर वह सीधी होकर बैठ गईं। कुछ कहने के लिए उनके होंठ फड़फड़ाए लेकिन वह कहते-कहते रुक गईं। अनु की मासूम और भयभीत आंखों ने उन्हें कोई कड़ुवी बात कहने से रोक दिया।

वह सोचने लगीं—कभी राजीव भी तो ऐसा ही मासूम था। वह उसे बहुत प्यार करती थीं। और जब कभी वह इस तरह सहम जाता था तो उनका दिल तड़प उठता था। बच्चा जब डर-कर सहम जाता है तो उसके बदन का खून फटने लगता है। और यह मासूम बच्ची—इस पर गुस्सा किया भी जाए तो किस बात पर? अगर यह अपनी मां की चरित्रहीनता का परिणाम है भी तो इसमें इसका क्या दोष है?

मां जी के होंठों पर एक नर्म-सी मुस्कराहट उभर आई। उन्होंने धीरे से कहा—

"जीती रहो।"

अनु का चेहरा इस तरह खिल उठा जैसे मुरझाई हुई कली पर वर्षा की पहली बूंद आ पड़ी हो। उसने धीरे से पूछा—

"मैं अन्दर आ जाऊं दादी मां?"

"आ जाओ।"

अनु धीरे से चलती हुई मां जी के पास पहुंचकर रुक गई। मां जी उसे ध्यान से देखती रहीं। अनु भी उन्हें बड़े ध्यान से देख रही थी।

मां जी ने पूछा—

"स्कूल जा रही हो?"

"जी हां।"

"हमारे पास आओ।"

अनु थोड़ी-सी और बढ़ी फिर सहमी-सहमी आंखों से मां जी की ओर देखती हुई वोली—

"आप हमसे नाराज़ हैं दादी मां ?"

"नहीं बिटिया।"

अनु का चेहरा एकदम खिल उठा।

मां जी ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—

"मेरे नाराज़ होने से तुम्हारा क्या नुकसान होगा ?"

"आप हमें वहुत अच्छी लगती हैं," अनु ने मासूमियत से कहा, "मम्मी से भी ज़्यादा अच्छी लगती हैं।"

"सच—?" मां जी मुस्कराईं।

"जी हां।"

तभी वाहर से राजू की आवाज़ आई—

"अनु जल्दी चलो। स्कूल की वस आ गई।"

"अच्छा दादी मां, हम जायें ?"

"जाओ बेटी—शाम को आओगी न।"

अनु ने 'हां' के इशारे में सिर हिला दिया। मां जी ने उसका माथा चूमा और अनु खुश-खुश भाग गई।

वाहर जाकर उसने खुशी भरी आवाज़ में राजू से कहा—

"अब दादी मां, हमसे नाराज़ नहीं हैं—सचमुच वहुत अच्छी हैं दादी मां—बिल्कुल असली दादी मां की तरह।"

मां जी के होंठों पर हल्की-सी मुस्कराहट दौड़ गई। फिर वह किसी सोच में डूब गईं।

राजीव ऑफिस से लौटा और अपने फ्लैट में पहुंचा तो मां

जी आराम कुर्सी पर लेटी हुई थीं। अनु उनके पीछे खड़ी थी। मां जी के बाल पीछे की ओर लटक रहे थे और अनु उनके बालों में कंघी कर रही थी। बहुत धीरे-धीरे और बड़ी नर्मी से।

राजीव ठिठककर रुक गया। मां जी की आंखें बन्द थीं और वह इस तरह गहरी-गहरी सांस ले रही थीं जैसे उन्हें बड़ा चैन मिल रहा हो।

राजीव मुस्कराता हुआ अन्दर आया। अनु ने उसे देखते ही कहा—

"गुड ईवनिंग अंकल।"

"गुड ईवनिंग माई डॉल," राजीव मुस्कराकर बोला।

मां जी ने आंखें खोल दीं। वह राजीव से इस तरह नज़रें बचाने लगीं जैसे अनु को उनके पास देखकर राजीव उनसे कुछ कहेगा।

लेकिन राजीव हंसकर ही रह गया।

अनु ने मां जी से कहा—

"दादी मां, लाइए—अब आपके हाथ-पैरों की उंगलियां चटकाएं।"

"नहीं बेटी, अब तुम जाकर पढ़ो।"

अनु कुछ देर तक बड़े ध्यान से दादी मां के चेहरे को देखती रही। और फिर उसने पंजों के बल उचककर उनके गाल पर प्यार किया। मां जी चौंक पड़ीं। लेकिन अनु रुकी नहीं। वह भागती हुई बाहर निकल गई।

और मां जी अपना गाल थामे दरवाज़े की ओर देखने लगीं।

कुछ दिनों में ही मां जी अपने पड़ौसियों से खूब घुल मिल गईं। उनके आने से पहले राजीव ऑफिस की केन्टीन में ही खाना खाता था। लेकिन मां जी के कारण उसने खाने का समय बसन्ती के सुपुर्द कर दिया था। बसन्ती ही मां जी के लिए खाना और नाश्ता तैयार करती थी।

मां जी बसन्ती का इंतज़ार कर रही थीं।

थोड़ी देर के वाद बसन्ती खाना लेकर आ गई।

मां जी ने पूछा—

"यह गीता राजीव के ऑफिस में ही काम करती है न ?"

"जी हां।"

"आजकल क्या उसने छुट्टी ले रखी है ? मैंने उसे कई दिन से ऑफिस जाते नहीं देखा।"

"नहीं। उन्होंने नौकरी छोड़ दी।"

"क्यों ?" मां जी ने चौंककर पूछा, "क्यों छोड़ दी नौकरी ? —अब खर्च कैसे चलेगा ?"

उनके मन में एक संदेह जाग उठा था।

बसन्ती ने उत्तर दिया—

"मां जी, अब गीता दीदी किराएदार नहीं हैं। अब वह इस पूरी बिल्डिग की मालिक हैं।"

"इस बिल्डिग की मालिक—?" मां जी ने आश्चर्य से कहा।

"हां मां जी। इस बिल्डिग की मालिक सावित्री देवी गीता दीदी को बहुत प्यार करती थीं। और बिल्डिग में रहने वाले लोग गीता दीदी को यहां से निकाल देना चाहते थे। इसलिए

सावित्री देवी ने सोचा कि जब तक वह जिन्दा हैं तब तक तो गीता दीदी का कोई कुछ बना-बिगाड़ नहीं सकेगा लेकिन उनके मर जाने के बाद बिल्डिग में रहने वाले लोग उन्हें जरूर परेशान करेंगे। इसलिए उन्होंने मरने से पहले ही अपनी सारी जायदाद गीता दीदी के नाम कर दी।"

"क्या गीता सावित्री देवी की रिश्तेदार है?"

"नहीं। उनका गीता दीदी से कोई रिश्ता नहीं था।"

"फिर उन्हें गीता से इतनी हमदर्दी क्यों थी?"

"मालकिन कहती थीं कि गीता गंगा की तरह पवित्र है।"

मां जी बड़े ध्यान से बसन्ती का चेहरा देखती रहीं।

"ये लोग गीता को बिल्डिग से क्यों निकालना चाहते थे?"

"शुरू-शुरू में बिल्डिग में रहने वाले गीता दीदी को गलत समझते थे। कहते थे वह हरामकी बच्ची की मां है। इसका चाल-चलन ठीक नहीं है। इसलिए सब लोग गीता दीदी से घृणा करते थे। और उन्हें यहां से निकाल देना चाहते थे।"

फिर बसन्ती ने दिलीप और कामिनी की कहानी सुनाई। जिसे सुनकर मां जी कुछ चौंक पड़ीं। फिर सोच में डूबी-डूबी खाना खाने लगीं।

सावित्री देवी के फ्लैट से निकलकर गीता अपने फ्लैट में जा रही थी। रास्ते में कामिनी का फ्लैट था। उसने फ्लैट में अनु की आवाज़ सुनी तो वह उधर मुड़ गई। लेकिन वह दरवाज़े पर ही पहुंची थी कि उसने कामिनी के फ्लैट में मां जी की आवाज़ सुनी जो कामिनी से बातें कर रही थीं।

वह ठिठककर रुक गई।

कामिनी मां जी से कह रही थी—

"और मां जी, इस तरह गीता के बारे में जो गलतफहमी पैदा हो गई थी वह दूर हो गई। मैं अकारण ही उस बेचारी पर इतने दिनों तक सन्देह करती रही। असल में दोष मेरे पति का ही था जो गीता को अकेला और नाजाइज़ बच्ची की मां समझ कर उसके अकेलेपन का लाभ उठाने का प्लान बनाने लगे थे। लेकिन गीता के करेक्टर और दृढ़ता ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि वे उसके साथ शादी करने पर तुल गए। गीता चाहती तो शादी कर लेती। मेरे पति लखपती हैं। मुझे तलाक दे देते तो मैं क्या कर लेती? लेकिन गीता—क्या बताऊं मां जी, मैंने कैसे-कैसे अत्याचार किए हैं उस पर। सबके सामने उसे मारा-पीटा। लेकिन उस गरीब ने पलटकर उत्तर नहीं दिया।"

कुछ देर रुककर कामिनी बोली—

"जब आंखों पर गलतफहमी का पर्दा पड़ा रहे तो सामने की चीज़ें भी अपने असली रंग की बजाय पर्दे के रंग में दिखाई देती हैं। लेकिन जब से पर्दा हटा है तब से मैंने गीता की परिस्थितियों और उसके करेक्टर पर विचार किया है—मां जी, मैंने मनोविज्ञान में एम० ए० किया है। मैं दावे के साथ कह सकती हूं कि अगर गीता के साथ इस बच्ची का मामला न होता तो हमारे देश में उस जैसी औरत खोजने पर भी न मिलती। पता नहीं बेचारी किस तरह धोखा खा गई किसी आदमी से। कच्ची उम्र की लड़की को दुनिया की ऊंच-नीच का पता ही कहां होता है। और अब गीता ने आसान रास्ते की जगह कठिन रास्ता अपना लिया है और उस पर बड़ी दृढ़ता से कदम बढ़ा रही है। उसे किसी भी बात की कोई परवाह नहीं है। न उसे धूप से डर लगता है न आंधी से। अपनी बच्ची की उंगली पकड़े बड़े इतमीनान से चली जा

रही है।"

दरवाज़े पर खड़ी गीता कामिनी की बातें सुनती रही। उसका दिल बड़ी ज़ोर से धड़क रहा था। क्योंकि अब मां जी खामोश बैठी थीं। वह चुपचाप बैठी कामिनी की बातें सुन रही थीं।

अंदर राजू और अनु एक ओर बैठे पढ़ रहे थे।

और जब अनु अपनी किताबें उठाकर आने लगी तो गीता जल्दी से दरवाज़े पर से हटी और अपने फ्लैट की ओर बढ़ गई।

उस शाम जब मां जी खाना खा चुकीं तो उन्होंने अन्त में रायता पीने के बाद कहा—

"अरी बसन्ती, तू तो बहुत स्वादिष्ट खाना बना लेती है। मुझे उम्मीद नहीं थी कि तू इतना बढ़िया खाना बना पाएगी।—लेकिन न जाने क्यों मुझे पहले दिन तेरे हाथ का बना खाना अच्छा नहीं लगा था।"

"वह—वह—," बसन्ती सिर खुजाती हुई बोली, "सच-सच बताऊं मां जी?"

"हां सच-सच ही बता। झूठ बोलने की भला क्या ज़रूरत है।"

"मां जी, पहले दिन तो मैंने ही खाना बनाया था। लेकिन आपको खाना अच्छा नहीं लगा था। क्योंकि आपने दो-चार टुकड़े खाने के बाद खाना छोड़ दिया था। मैंने यह बात गीता दीदी को बताई थी। और उस दिन से वही आपका खाना बनाती हैं।"

"क्या?" मां जी ने आश्चर्य से कहा।

"हां मां जी, दीदी ने मुझसे कहा था कि मैं यह बात आपको

न बताऊं।"

"ओह—!"

मां जी के मुंह से निकला और वह गहरे सोच में डूब गईं।

गीता ने घड़ी देखी। नौ बज चुके थे। उसने अनु की मेज़ देखी वह खाली थी।

गीता ने बड़बड़ाकर कहा—

"अरे अनु अभी तक नहीं लौटी।"

वह बिस्तर से उठकर बाहर निकल आई।

कामिनी के फ्लैट में अंधेरा था। गीता का दिल धड़क उठा। उसने कामिनी के फ्लैट के दरवाज़े पर दस्तक दी।

कुछ देर के बाद कामिनी ने दरवाज़ा खोल दिया।

गीता ने पूछा—

"अनु राजू के पास पढ़ने आई थी?"

"वह तो आठ बजे ही चली गई थी," कामिनी ने बताया।

"आठ बजे ही चली गई?" गीता कलेजा दबाकर बोली, "हाय राम—मेरी बच्ची कहां गई।"

कामिनी भी घबराकर बाहर आ गई।

गीता तेज़ी से राजीव के फ्लैट की ओर चल दी। कामिनी भी उसके पीछे थी।

दरवाज़े पर पहुंचते ही गीता और कामिनी ठिठककर रुक गईं। अनु अंदर मौजूद थी। वह मां जी का सिर धीरे-धीरे दबा रही थी।

कामिनी ने ठंडी सांस भरकर कहा—

"शुक्र है भगवान का—मैं तो डर ही गई थी।"

फिर वह अपने फ्लैट में लौट गई।

गीता दरवाजे पर खड़ी-खड़ी अनुको देखती रही। उसे मां जी के कराहने की हल्की-हल्की आवाज़ सुनाई दी। वह घबराकर अंदर चली गई।

उसे देखकर अनु चौंक पड़ी। उसने जल्दी से कहा—

"मम्मी, ज़रा देखिए, दादी मां की तबियत कितनी खराब है।"

गीता ने जल्दी से बढ़कर मां जी के सिर पर हाथ रखा। उनका माथा बुखार से तप रहा था।

अनु ने कहा—"दादी मां के सिर में दर्द हो रहा है बहुत ज़ोर का।"

"राजीव बाबू नहीं आए अभी तक ?"

"दादी मां कह रही थीं अंकल बाहर गए हैं। कल शाम को आयेंगे।"

"ओह—अच्छा बेटी, तुम हटो। मैं दबाती हूं मां जी का सिर। लेकिन ठहरो, मैं फ्लैट बंद कर आऊं।"

और गीता तेज़ी से बाहर चली गई।

थोड़ी देर के बाद गीता मां जी के सिर पर पानी में भिगो-भिगोकर पट्टियां रख रही थी। उसने एक बार टेम्प्रेचर भी देखा। मां जी को एक सौ तीन डिग्री बुखार था। वह मां जी के सिरहाने बैठी पट्टियां रखती रही। उसके चेहरे से गहरी बेचैनी और चिन्ता टपक रही थी। अनु मां जी के पैरों के पास बैठी थी। और अपने

नन्हें-नन्हें हाथों से उनके पांव दवा रही थी।

अगली सुबह जब मां जी की आंख खुली तो उन्होंने धीरे से पलकें उठाकर ऊपर की ओर देखा। उनके सिर पर एक हाथ धीरे-धीरे चलता और फिर रुक जाता। उन्होंने पूरी तरह आंखें खोलकर ध्यान से देखा। गीता उनके सिरहाने वैठी थी। वह उनका सिर धीरे-धीरे दवाती हुई ऊंघ रही थी।

मां जी आश्चर्य से गीता को देखती रह गईं।

फिर उन्होंने अपने पैरों की ओर देखा। उनकी एक टांग पर अनु के दोनों हाथ इस तरह रखे हुए थे जैसे वह उनकी टांगें दवाने वाली हो। उसका सिर मां जी की टांगों पर ही रखा हुआ था। और वह बेखबर सोयी पड़ी थी।

फिर जब मां जी कराहीं तो गीता हड़बड़ाकर जाग उठी और जल्दी-जल्दी मां जी का सिर दवाने लगी।

मां जी ने धीरे से कहा "वस बेटी, अब वस करो—देख तो —अनु किस तरह सो रही है। इसे राजीव के विस्तर पर लिटा दे।"

और गीता के होंठ धीरे से कांप उठे—

"अनु—!"

और उसकी आंखें वरवस भीग उठीं।

चौदह

राजीव जिस समय 'सावित्री सदन' पहुंचा मूसलाधार वर्षा हो रही थी।

वह लिफ्ट से ऊपर पहुंचा। लेकिन जैसे ही उसने लिफ्ट से निकलकर बाल्कनी में कदम रखा चारों ओर गहरा अंधेरा छा गया।

बिजली अचानक ही चली गई थी।

अंधेरा इतना गहरा था कि हाथ को हाथ सुझाई नहीं दे रहा था। आकाश पर बादल दूर तक काली चादरों की तरह फैले हुए थे।

राजीव अंधों की तरह टटोल-टटोलकर कदम बढ़ाते हुए फ्लैट तक पहुंचा। फ्लैट का दरवाज़ा खुला हुआ था। लेकिन अंदर और भी गहरा अंधेरा छाया हुआ था। उसने मां जी को पुकारना चाहा लेकिन तभी अंधेरे में मां जी की आवाज़ सुनाई दी। वह कह रही थीं—

"अरे बेटी, पता नहीं बिजली कब तक आए। आज अमावस की रात तो वैसे ही है। हाथ को हाथ सुझाई नहीं दे रहा। ज़रा-सा तेल ही किसी ढक्कन में लेकर दिया जला दो।"

राजीव ने इत्मीनान की सांस ली। उसे विश्वास था कि उसके पीछे बसन्ती मां की पूरी तरह देखभाल करेगी। और इस समय

भी वही होगी। लेकिन मां जी की बात का जब बसन्ती ने कोई उत्तर नहीं दिया तो राजीव को आश्चर्य हुआ क्योंकि बसन्ती तो इतनी देर तक चुप रहने वाली ही नहीं थी।

मां जी की आवाज़ फिर सुनाई दी—

"पता नहीं क्या बजा होगा—राजीव अभी तक नहीं लौटा।"

"जब बिजली गई थी साढ़े नौ बजे थे।"

राजीव चौंक पड़ा। यह आवाज़ तो बसन्ती की नहीं थी।

कुछ देर मां जी के खांसने की आवाज़ आती रही।

फिर मां जी ने कहा—

"जा, बेटी, अब तू सो जा। कल रात से लगातार जाग रही है, दिन में भी तो एक पल नहीं सोयी। कहीं बीमार न पड़ जाए। मैं तो अब बिल्कुल ठीक हूं। मुझे अब बिल्कुल बुखार नहीं है।"

"राजीव बाबू को आ जाने दीजिए। मैं खुद जाकर सो जाऊंगी।"

"यह तो गीता की आवाज़ है," राजीव बड़बड़ाया। उसके मस्तिष्क को एक ज़ोरदार झटका-सा लगा। ऐसा मालूम हुआ जैसे उसके कानों में जल-तरंग बज उठा हो।

तभी चिराग की लौ टिमटिमाई। गीता ने चिराग जला दिया था। उसकी पीली-पीली रहस्यपूर्ण-सी रोशनी में गीता का चेहरा स्पष्ट दिखाई दे रहा था। उसके बालों की चोटी दाएं कन्धे से नीचे लटक रही थी। उसके चेहरे पर एक विचित्र-सी पवित्रता झलक रही थी।

मां जी बिस्तर पर तकिए से टेक लगाए चाय पी रही थीं। उनकी गोद में सिर रखे बेतरतीब-सी अनु पड़ी सो रही थी।

अचानक मां जी की नज़र राजीव पर पड़ी। वह चौंककर बोलीं—

"अरे राजीव, तू कब आया बेटे—और वहीं क्यों खड़ा है?"

गीता ने राजीव की ओर चौंककर देखा। राजीव का सारा बदन झनझना उठा।

गीता ने जल्दी से पलकें झुका लीं और जल्दी-जल्दी उंगलियों पर आंचल लपेटने लगी।

राजीव अंदर आ गया।

मां जी ने गीता से कहा—

"ले बेटी, अनु को उठा ले। सारे हाथ-पांव दुख गए होंगे बेचारी के। मुझसे अलग ही नहीं होती थी।"

गीता ने अनु को उठाया और बड़े इत्मीनान और दृढ़ता भरे कदमों से चलती हुई कमरे से निकल गई।

उसकी चाल में कितनी गरिमा थी। कितनी दृढ़ता और आत्म विश्वास था। कितना दर्द था। एक पवित्रता भरा दर्द।

और जब गीता चली गई तो मां जी ने राजीव को बताया कि उन्हें कल से बुखार था। और गीता तथा अनु ने उनकी कितनी सेवा की है।

राजीव मुस्कराता हुआ कपड़े बदलने चला गया।

वह कपड़े बदलने के बाद लौटा तो मां ने उसे अपने पास बुलाया।

वह मां जी के पास आ बैठा।

"खाना खा लिया बेटा?" मां जी ने पूछा।

"मैं खाना खाकर ही चला था।"

"देख, अब तो मुझे बुखार नहीं है?"

राजीव ने मां जी का हाथ और माथा देखा और फिर बोला—

"जी नहीं। इस समय तो बिल्कुल नहीं है।"

"रहता कैसे?" मां जी मुस्कराकर बोलीं, "पहली बार तो मेरी बहू ने मेरी सेवा की थी। बुखार रह ही कैसे सकता था।"

"मां जी," राजीव ने मां जी के गले में बांहें डाल दीं।

"अब मैं देर नहीं करना चाहती —बहुत दिन हो गए इन्तज़ार करते-करते।"

"लेकिन मां जी, अभी तो आपको यहां आए तीन महीने भी पूरे नहीं हुए।"

"ठीक है। लेकिन आज सुबह से तो मुझे ऐसा महसूस होने लगा है जैसे यहां रहते-रहते बरसों बीत गए हों। कितनी बेचैन थी मैं तेरे इन्तज़ार में। यह कहने के लिए कि जितनी जल्दी हो सके तू गीता के साथ शादी कर ले।"

राजीव ज़ोर से हंस पड़ा।

और अचानक तभी बिजली आ गई।

चारों ओर रोशनी ही रोशनी बिखर गई।

उसने गर्दन उठाकर धीरे से देखा। मां जी बेखबर सोयी पड़ी थीं। टाइमपीस की टिक-टिक वातावरण में गूंज रही थी। वर्षा अब कुछ धीमीं पड़ गई थी। केवल सड़कों और नालियों में बहते पानी की आवाज़ें ही सुनाई दे रही थीं।

राजीव ने चुपके से बिस्तर से पांव उतारे। गीता को यह खुशखबरी सुनाने के लिए वह बेचैन था कि मां जी ने उनके विवाह की स्वीकृति दे दी है।

उसने टाइमपीस पर नज़र डाली। बारह बजने वाले थे।

वह बिस्तर से उठा और फ्लैट से बाहर आ गया।

चारों ओर गहरा अंधेरा छाया हुआ था। हाथ को हाथ सुझाई न दे रहा था। बिजली फिर चली गई थी। और इस बार

बिजली गए हुए एक घंटे से अधिक हो गया था। वह दबे पांव टटोलता हुआ गीता के फ्लैट की ओर बढ़ने लगा।

फ्लैट के दरवाज़े पर पहुंचकर वह रुक गया।

उसने बहुत चुपके-चुपके गीता के फ्लैट के दरवाज़े पर दस्तक दी लेकिन अंदर से कोई उत्तर नहीं मिला।

राजीव ने फिर दस्तक दी। फिर भी कोई उत्तर नहीं मिला।

ठीक उसी समय बिल्डिग के नीचे कार के रुकने की आवाज़ सुनाई दी। राजीव ने चौंककर कुछ सोचा। और फिर उसने जल्दी से गीता के फ्लैट की चटकनी देखी। कुंडे में ताला पड़ा हुआ था। उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क उठा। वह फुर्ती से बाल्कनी की रेलिंग पर आ गया। और नीचे झांककर देखने लगा। नीचे भी अंधेरा छाया हुआ था। उसे बिल्डिग के ठीक नीचे एक कार का साया दिखाई दिया।

तभी कुछ देर के लिए सड़क पर खड़े लेम्प पोस्टों के बल्ब एक पल के लिए जगमगाए और फिर बुझ गए। और उस एक पल में ही राजीव ने बिल्डिग के नीचे एक कार खड़ी देखी। गीता उस कार से उतरी थी और एक अजनबी अनु को अपनी गोद में से गीता की गोद में दे रहा था।

बत्ती के जाते ही फिर चारों ओर घटाटोप अंधेरा छा गया। आमावस की काली रात का गहन अन्धकार—ऐसा ही गहन अन्धकार राजीव के मन: प्राण में भी छा गया। वे सारे तारे अचानक ही बुझ गए थे जो मां जी के निर्णय के बाद उसके दिल में जगमगा उठे थे।

वह यों ही गुमसुम बाल्कनी की रेलिंग से लगा खड़ा रहा। उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसके कदम जहां के तहां जम गए हों। और उसके बदन की सारी जान खिचकर आंखों में आ गई हो। और उसकी आंखों से गर्म-गर्म तेज़ भाप निकल रही हो।

थोड़ी देर के बाद बाल्कनी में कदमों की आहटें सुनाई दीं। लेकिन वह जैसे खड़ा था वैसे ही खड़ा रहा। कदमों की आहटें निकट आती गईं लेकिन वह यों ही खड़ा रहा।

फिर घटाटोप अंधेरे में उसने एक सफेद साया देखा। गीता सफेद साड़ी पहने हुए थी। यह गीता का ही साया था।

वह मुड़कर गीता की ओर देखने लगा। लेकिन शायद गीता उसे नहीं देख पाई थी।

और जब गीता उससे केवल कुछ कदम दूर रह गई थी कि अचानक बिजली आ गई। बाल्कनी में लगे बल्ब जगमगा उठे और इस छोर से उस छोर तक उजाला फैल गया।

और तभी गीता की नज़र राजीव पर पड़ी। उसे देखते ही वह ठिठककर रुक गई और उसकी नज़रें राजीव की नज़रों में फंसी रह गईं। दोनों एक-दूसरे की ओर एकटक देखते रह गए थे।

राजीव ने कुछ नहीं कहा। वह चुपचाप खड़ा गीता को देखता रहा।

गीता भी खामोश खड़ी रही।

कुछ देर के बाद उसने एक लम्बी सांस ली और तेज़ी से अपने फ्लैट की ओर चल दी।

उसने अपने फ्लैट का ताला खोला और अन्दर चली गई।

और जब वह अन्दर पहुंची तो उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। अनु उसके कंधे से लगी सो रही थी। गीता को ऐसा लग रहा था जैसे अनु का भार अपने वास्तविक भार से हज़ार गुना बढ़ गया हो। उसे ऐसा लग रहा था कि अगर उसने फौरन अनु को कंधे से अलग न किया तो उसके कंधे टूट जायेंगे। दोनों हाथ बेजान होकर शरीर से अलग हो जायेंगे।

उसने बड़ी कठिनाई से दीवार पर लगा स्विच टटोलकर तलाश किया और बत्ती जला दी।

उसने अनु को बिस्तर पर लिटा दिया। अनु बेखबर सो रही थी। फिर वह दरवाज़े की ओर बढ़ गई।

वह दरवाज़ा बंद करने ही वाली थी कि उसे दरवाज़े पर अंधेरे में एक साया-सा दिखाई दिया। गीता चौंककर रुक गई। और फिर उसने आगे बढ़कर बत्ती जला दी।

राजीव सामने खड़ा था और चुपचाप गीता की ओर देख रहा था।

गीता कुछ न बोली। वह जैसे बोलने की शक्ति खो बैठी थी। लेकिन उसके चेहरे पर अब पहले जैसी घबराहट न थी। उसके चेहरे पर से धीरे-धीरे अंधेरे की पर्तें छंट गई थीं और उसके साफ-सुथरे चेहरे पर चमक दिखाई देने लगी थी। उसकी आंखों में हमेशा जैसी ही दृढ़ता और निर्भीकता थी।

राजीव कुछ देर वहीं खड़ा रहा। फिर धीरे-धीरे उसके कदम उठे और वह गीता से केवल कुछ कदम की दूरी पर आकर रुक गया।

वह कुछ देर गीता के चेहरे को बड़े ध्यान से देखता रहा और फिर धीरे से उसने पूछा—

"कौन था वह ?"

गीता ने कोई उत्तर नहीं दिया।

कुछ देर बाद राजीव ने फिर पूछा—

"कौन था वह आदमी ?"

गीता ने फिर भी कोई उत्तर नहीं दिया।

राजीव कुछ देर तक गीता के चेहरे को बड़े ध्यान से देखता रहा और फिर बोला—

"मैं तुमसे कुछ पूछ रहा हूं गीता।"

गीता के होंठों में कम्पन हुआ। उसने धीमे लेकिन स्पष्ट और दृढ़ स्वर में कहा—

"मैं आपके इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकती राजीव बाबू।"

राजीव का चेहरा कठोर हो उठा। उसने सख्ती से पूछा—

"तुम्हें मेरे प्रश्न का उत्तर देना ही पड़ेगा गीता। तुम्हें बताना ही होगा कि वह आदमी कौन था।"

राजीव के स्वर की कठोरता की चुभन से गीता के चेहरे पर वेदना और पीड़ा उभर आई। उसने मज़बूती से होंठ भींच लिए। कुछ पल तक वह राजीव को घूरकर देखती रही और फिर कठोरता भरे स्वर में बोली—

"आपको क्या अधिकार है यह प्रश्न करने का?"

"गीता—!" राजीव के मन और मस्तिष्क को एक ज़ोरदार झटका लगा।

"मैंने आपसे एक बार कह दिया कि मैं इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकती।" गीता ने निर्णयात्मक स्वर में कहा—

"गीता—!" राजीव के होंठों पर एक बुझी-बुझी-सी मुस्कराहट दौड़ गई, "यह तुम कह रही हो गीता?—ज़रा अपने दिल पर हाथ रखकर सोचो— क्या मुझे इस बात को पूछने का कोई अधिकार नहीं है? क्या मेरे और तुम्हारे बीच कोई रिश्ता नहीं है? कोई डोर नहीं है जिसने हम दोनों को बांध रखा है?"

गीता ने कोई उत्तर न दिया।

वह बहुत मज़बूती से होंठ बंद किए चुपचाप खड़ी रही। शायद वह होंठ भींचकर अपने आंसुओं को रोकने की कोशिश कर रही थी।

राजीव ने ठंडी सांस लेकर कहा—

"सम्भव है यह सच ही हो कि मेरे तुम्हारे बीच कोई रिश्ता, कोई सम्बन्ध या कोई डोर न हो। सम्भव है यह सब एक बहलावा और एक सपना रहा हो जिसे मैंने प्यार समझा था। और आज के इस दृश्य को देखने के बाद तो मुझे विश्वास हो गया है कि वास्तव

में वह सब कुछ एक बहलावा ही था जो तुम प्यार के रूप में मुझे देती रही थीं। मैंने तुम्हें एक बार पहले भी इसी कार से और इसी अजनबी के साथ उतरते देखा था। और उस समय मैंने सोचा था कि शायद वह तुम्हारा कोई वैसा ही चाहने वाला होगा, जैसा दिलीप था। क्योंकि उस समय मेरा मस्तिष्क भटका हुआ था।

इतने दिनों में मैं उस दृश्य को बिल्कुल भूल गया था। लेकिन आज—उसी दृश्य को दूसरी बार देखकर मेरे मस्तिष्क में एक बार फिर कई प्रश्न जाग उठे हैं। —इधर देखो गीता मेरी ओर —क्या यह अजनबी वही नहीं है जिसे तुम प्यार करती हो?"

"नहीं," गीता ने सख्ती से होंठ भींच लिए।

"तुम झूठ बोलती हो गीता—तुम झूठ बोलती हो—मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूं कि यह अजनबी ही तुम्हारा प्रेमी है—वही प्रेमी जिसने तुम्हें शादी से पहले ही एक बच्ची की मां बना दिया। और तुम -तुम आज भी उससे प्रेम करती हो। जब कि तुम्हें एक बच्ची की मां बनाने के बाद भी उसने तुम्हारे साथ शादी नहीं की और संसार भर की बुराइयों और बदनामियों को ढोने के लिए तुम्हें अकेला छोड़ दिया। हो सकता है ऐसा उसने किन्हीं विवशताओं के कारण किया हो लेकिन वह तुम्हें आज भी प्रेम करता हो।"

"यह झूठ है," गीता ने हल्की-सी चीख के साथ अपने दोनों हाथों से कान मूंद लिए, "यह झूठ है—वह मेरा प्रेमी नहीं है।"

"तब फिर वह कौन है? राजीव ने गीता की दोनों बांहें मजबूती से पकड़कर कहा, "बताओ वह कौन है?—अगर वह तुम्हारा प्रेमी नहीं है तो तुम उसके साथ कहां गई थीं? और क्यों गई थीं? —अगर वह तुम्हारा प्रेमी नहीं है तो स्पष्ट हो जाता है कि तुम अवारा हो—बदचलन हो—तुम्हारे पास पहले भी पैसे की इतनी कमी नहीं थी कि तुम ज़िन्दा रहने के लिए अपना शरीर बेचतीं।

और अब तो तुम इतनी बड़ी बिल्डिंग की मालिक हो जिसका किराया कई हज़ार रुपए तुम्हें हर महीने मिलता है। फिर इस तरह रात के अंधेरे में किसी अजनबी के साथ छिपकर कहीं जाने का क्या मतलब है ? क्या इससे यह प्रगट नहीं होता कि तुम अपनी वासना की प्यास बुझाने के लिए उसके साथ जाती हो ?"

गीता खामोश खड़ी रही। उसने अपने होंठ मजबूती से बंद कर रखे थे।

राजीव ने उसे झंझोड़ते हुए कहा —

"बताओ गीता—अगर तुम्हारा बदन इतना ही प्यासा है तो तुमने मुझे प्यार का धोखा क्यों दिया ? अपनी पवित्रता का ढोंग रचकर मुझे अपने निकट बुलाया ? तुम्हारे पास प्यास बुझाने का एक साधन था तो मुझे अपने प्रेम के जाल में फांसने की क्या ज़रूरत थी ?"

"किसने कहा था कि आप मेरे प्यार के जाल में फंसिए ?" गीता ने कठोरता और कड़वाहट भरे स्वर में पूछा। और फिर उसने ज़ोर से झटका देकर अपनी बांहें राजीव के हाथों में से छुड़ा लीं।

उसने क्रोध भरी निगाहों से राजीव की ओर घूरते हुए कहा —

"मैंने आपकी खुशामद नहीं की थी कि मुझसे प्यार कीजिए। आप खुद ही मेरे निकट आए थे। मैंने आपसे शादी करने की कभी इच्छा प्रगट नहीं की। आपने खुद ही मेरे साथ शादी करने की इच्छा प्रगट की थी। और केवल इच्छा ही प्रगट नहीं की थी बल्कि आग्रह भी किया था।"

"मैंने तुम्हारे साथ भलाई की थी," राजीव ने कहा।

वह कुछ और भी कहना चाहता था लेकिन गीता ने जल्दी से उसकी बात काट दी और झटके से बोली—

"मुझे किसी की भलाई की ज़रूरत नहीं है। दुनिया मेरे साथ

आज तक भलाई ही करती चली आ रही है। मैं भलाई की इस चक्की में अब और पिसना नहीं चाहती। अनु मेरी बच्ची है। वह अजनबी मेरा प्रेमी है या अनु का पिता। या मेरी आवारगी का साथी। या मेरी वासनात्मक प्यास बुझाने का एक साधन। यह सब कुछ जो भी कुछ है मेरा व्यक्तिगत मामला है। और संसार के किसी भी व्यक्ति को यह अधिकार नहीं है कि वह मेरे व्यक्तिगत मामलों में हस्तक्षेप करे।"

"गीता—!" राजीव ने तड़पकर कहा।

"आप जा सकते हैं राजीव बाबू," गीता ने दरवाज़े की ओर उंगली उठाकर कठोरता और दृढ़ता भरे स्वर में कहा।

"गीता—!"

"मैं कहती हूं आप यहां से चले जाइए।"

राजीव भौंचक्का-सा गीता की ओर देखता रह गया।

कुछ देर वह यों ही हक्का-बक्का-सा खड़ा रहा और फिर धीरे-धीरे कदम उठाते हुए गीता के फ्लैट से बाहर निकल आया।

और उसने जैसे ही बालकनी में कदम रखा कहीं दूर बड़े ज़ोर से बिजली चमकी और फिर उसकी कड़क के साथ ही एक ज़ोर का धमाका सुनाई दिया।

शायद कहीं बिजली गिरी थी।

राजीव के बाहर निकलते ही गीता ने दरवाज़ा बंद कर लिया और फिर दरवाज़े से पीठ लगाकर खड़ी हो गई। उसकी आंखों में देर से रुके आंसुओं का बांध टूट गया और वह एकदम तेज़ी से बहने लगे। कमरे में छाई हुई खामोशी में उसकी हल्की-हल्की सिसकियां गूंज उठीं।

वह न जाने कब तक रोती रही। और फिर धीरे-धीरे उसकी सिसकियां धीमी पड़ती गईं। और कुछ देर बाद थम गईं।

उसने साड़ी के आंचल से अपने आंसू पोंछे और फिर अनु की

ओर देखने लगी।

उसके चेहरे पर फिर वही पहले जैसा ठहराव, आत्म विश्वास, दृढ़ता और संकल्प के साथ शान्ति छा गई।

वह धीरे-धीरे कदम उठाती हुई अनु के पास पहुंच गई।

वह अनु के पास बिस्तर पर बैठ गई और उसके सिर पर बड़े स्नेह और ममता से हाथ फेरने लगी। उसके उदास होंठों पर फिर वही स्नेह भरी मीठी मुस्कान दौड़ गई। और आंसुओं के स्थान पर उसकी आंखों में फिर वही ममता का सागर लहराने लगा।

पन्द्रह

राजीव थके-थके कदमों से अपने फ्लैट में पहुंचा।

रोजाना की तरह अनु आज भी उसके फ्लैट में मौजूद थी। वह मां जी की गोद में बैठी थी और उसकी बांहें मां जी के गले में पड़ी हुई थीं। मां जी उसे किसी परी की कहानी सुना रही थीं जो किसी राज कुमार को उड़ाकर ले गई थी, और जिसे एक राक्षस से छिपाकर रखती थी।

राजीव के देखते ही अनु खुशी से चिल्ला उठी—

"आ गए—अंकल आ गए।"

राजीव के मन में एक पल के लिए कुछ ख्याल पैदा हुआ। लेकिन दूसरे ही पल उसने उस विचार को अपने मस्तिष्क से झटक दिया।

वह सोचने लगा—अनु तो एक मासूम बच्ची है। वह तो गीता के धोखे से परिचित नहीं है।

उसने अनु के सिर पर बड़े प्यार से हाथ फेरा और फिर कपड़े बदलने चला गया।

जब वह कपड़े बदलकर बाहर निकला तो उसने गीता को देखा जो चाय की ट्रे लिए अंदर आ रही थी।

राजीव को देखते ही एक पल के लिए वह ठिठककर रुक गई। लेकिन फिर वह बड़े इत्मीनान से चलती हुई मां जी के पास पहुंच गई। उसने ट्रे मां जी के सामने सेन्ट्रल टेबुल पर रख दी और फिर मुस्कराते हुए राजीव की ओर देखकर बोली—

"आप बिल्कुल ठीक समय पर आ गए। गर्म-गर्म चाय पीजिए सारी थकन दूर हो जाएगी।"

अनु मां जी की गोद से उतर आई।

मां जी ने गीता के हाथ से चाय का प्याला ले लिया और धीरे-धीरे चाय पीने लगीं।

गीता ने राजीव को चाय का प्याला थमाते हुए मां जी से कहा—

"मां जी, आप खाना यहां खायेंगी या मेरे फ्लैट में ?"

"वहीं खा लूंगी। यहां खाने में मजा नहीं आता।"

"तो फिर थोड़ी देर के बाद आ जाइएगा !" गीता ने कहा और फ्लैट से निकल गई।

गीता के जाने के बाद राजीव सोचने लगा कि गीता के इस रवैए का क्या अर्थ हो सकता है। वह अभी तक यह निर्णय नहीं कर पाया था कि वह गीता से घृणा करने लगे या फिर उसके दिल की गहराइयों में गीता का जो प्यार छिपा हुआ है उसे उभारकर टटोले। फिर भी जब गीता की ज़िन्दगी का वह घिनौना पहलू उसकी आंखों के आगे घूम उठता था तो उसके मन में गीता के प्रति

अत्यधिक घृणा और आक्रोश जाग उठता था। वह रात से अभी तक यह निर्णय नहीं कर पाया था कि सत्य क्या है। उसने जो कुछ देखा था वह संदेह पैदा करने के लिए पर्याप्त था। लेकिन गीता की दृढ़ता और उसका रवैया उस सन्देह को हिला देता था।

वह एक विचित्र असमंजस में पड़ा हुआ था। एक विचित्र-सा अन्तर्द्वन्द उसके मन और मस्तिष्क में छिड़ा हुआ था।

मां जी के कहने पर वह खाना खाने के लिए गीता के फ्लैट में ही चला गया। गीता उसके साथ रोज़ाना की तरह ही बातें करती रही लेकिन राजीव ने अपनी ओर से कोई बात नहीं की।

खाना खाने के बाद जब मां जी अनु को कहानी सुनाने के लिए अपने फ्लैट में लेकर चली गईं और राजीव हाथ धोता रह गया तो फ्लैट में गीता और राजीव दोनों ही रह गए।

हाथ धोकर राजीव वाश बेसिन से हटा ही था कि गीता ने तौलिया उसकी ओर बढा दिया। राजीव ने गीता की ओर देखा तो गीता की नज़रें झुक गईं।

राजीव ने तौलिया लेकर हाथ पोंछे और धीरे से बोला—

"क्या मैं पूछ सकता हूं कि अब इस नाटक की ज़रूरत क्या रह गई है ?"

गीता ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने राजीव की ओर देखा और मुस्कराने लगी।

राजीव ने तौलिया कुर्सी पर डालते हुए कहा—

"तुमने मेरी बात का उत्तर नहीं दिया गीता।"

"अपना धर्म निभा रही हूं," गीता ने इत्मीनान भरे स्वर में उत्तर दिया।

"कौन-सा धर्म ?" राजीव ने कड़वाहट भरे स्वर में पूछा, "वह धर्म जो तुम जैसी स्त्रियों को अभिनय का पाठ पढ़ाता है ?"

"यह तो अपनी-अपनी समझ की बात है," गीता मुस्कराते

हुए बोली।

राजीव झल्ला उठा।

"मैं पूछता हूं अब इस नाटक की ज़रूरत क्या रह गई है? तुम मां जी के चारों ओर अपने सौन्दर्य और मासूम अभिनय का यह जाल क्यों बुन रही हो जिसमें एक बार फ़ंस जाने के बाद आदमी फड़फड़ा तो सकता है लेकिन इससे छुटकारा नहीं पा सकता।"

"तो क्या आप अब तक फड़फड़ा रहे हैं?" गीता की मुस्कराहट और अधिक गहरी हो उठी।

गीता ने राजीव की ओर खूंखार लेकिन ज़ख्मी निगाहों से घूरकर कहा—

"हां, मैं अभी तक एक ऐसे पंछी की तरह फड़फड़ा रहा हूं जिसके पंख काटने के बाद उसे खुले आंगन में छोड़ दिया गया हो। मैंने तुमसे प्यार किया है। और प्यार कोई ढोंग, नाटक या तमाशा नहीं होता। मैं केवल उस गीता से प्यार करता हूं जो मेरी कल्पना है। मैं उस गीता से प्यार नहीं करता जिसने मुझे प्यार का धोखा दिया है। और आज भी वह एक अजनबी को प्यार करती है।"

गीता खामोश खड़ी राजीव के चेहरे को देखती रही।

राजीव कुछ पल खामोश रहा। फिर बोला—

"आखिर तुम्हारे साथ ऐसी कौन-सी विवशता है गीता? तुम उस अजनबी के बारे में मुझे सब कुछ साफ-साफ क्यों नहीं बता देतीं? मैं उसे विवश करूंगा कि तुम्हें तुम्हारे प्यार का अधिकार दे दे।"

गीता ने हल्की मुस्कराहट के साथ ठंडी सांस भरकर कहा—

"जिसका जो अधिकार है वह उसे बराबर मिल रहा है। आप चाहते हैं कि मैं यह नाटक छोड़ दूं। मां जी के दिल को दुख पहुंचाकर अनु को उनके पास जाने से रोक दूं। तो ऐसा ही होगा।

लेकिन क्या आपने इस बात पर भी कभी विचार किया है कि अगर मां जी ने आपसे इस अचानक परिवर्तन का कारण पूछा तो आप उन्हें क्या उत्तर देंगे ?"

"मैं कह दूंगा कि मेरा चुनाव गलत था। मुझे जबर्दस्त धोखा हुआ था।"

"जानते हैं इसके बाद क्या होगा ?" गीता ने दृढ़ता भरे स्वर में कहा, "इसके बाद कोई भी प्यार करने वाला अपने प्यार को सच्चा साबित करके अपनी मां को सन्तुष्ट न कर पाएगा। लेकिन जाने दीजिए। मुझे इसका कोई दुख नहीं है। मुझे यह बताइए कि जब अनु मां जी से और मां जी अनु से बिछुड़ेंगी तो उन दोनों पर क्या बीतेगी ? अनु तो मासूम बच्ची है। उसका क्या अपराध है कि उसे मां जी से अलग किया जाए। आपने शायद महसूस नहीं किया वह अब मां जी से इतना प्यार करने लगी है कि उनसे एक मिनट भी अलग नहीं रहना चाहती।"

"मैं जानता हूं कि अनु निर्दोष है। उसे किसी प्रकार का कोई दंड नहीं मिलना चाहिए," राजीव ने गम्भीर स्वर में कहा।

वह और भी कुछ कहना चाहता था कि अनु आ गई और वह चुप रह गया।

और फिर थके-थके कदमों से अपने फ्लैट की ओर बढ़ने लगा।

रात को अपने बिस्तर पर लेटा राजीव गई रात तक गीता के बारे में ही सोचता रहा। वह सोचता रहा कि आखिर गीता के इस रवैए का अर्थ क्या है ? गीता आखिर चाहती क्या है ? क्या उसके इस रवैए से यह स्पष्ट नहीं हो जाता कि वह भी मुझे प्यार

करती है ? और अगर वह मुझे प्यार करती है तो उसके सामने ऐसी कौन-सी विवशता है जो उसे उस अजनबी की वास्तविकता प्रगट करने से रोक देती है ?

लेकिन उस अजनबी की वास्तविकता क्या हो सकती है ?— दो ही बातें हो सकती हैं—या तो वह अजनबी अनु का पिता है। और किसी कारण गीता से विवाह नहीं कर सकता। लेकिन दोनों अब भी एक दूसरे को अत्यधिक प्यार करते हैं। और छिप-छिप कर मिला करते हैं। या फिर गीता चरित्र भ्रष्ट है।

लेकिन इस दूसरी बात को न जाने क्यों राजीव का हृदय स्वीकार नहीं कर पा रहा था। वह जब भी गीता को ऊपर से नीचे तक देखता था तो उसके शरीर पर चरित्रहीनता का कोई भी चिन्ह कहीं दिखाई नहीं देता था।

अगर वह चरित्रहीन ही थी तो उसकी चरित्रहीनता ने दिलीप पर अपना प्रभाव क्यों नहीं डाला ? यदि वह चरित्रहीन है तो उसने आज तक अपनी वासना की प्यास राजीव से क्यों नहीं बुझाई ? वासना की प्यास बुझाने के और भी अनगिनत साधन हो सकते थे। लेकिन फिर वह एक उसी अजनबी तक सीमित क्यों रही ? नहीं वह चरित्रहीन नहीं है। यदि वह चरित्रहीन होती और अपनी वासना की प्यास बुझाने उस अजनबी के पास जाती तो अनु को अपने साथ कभी न ले जाती।

और यह सब सोचने के बाद राजीव इसी निर्णय पर पहुंचा कि वह अजनबी वास्तव में अनु का पिता है। और शायद गीता अब भी उससे प्यार करती है। शायद दोनों ही एक-दूसरे को प्यार करते हों लेकिन उन दोनों के सामने कोई ऐसी वहुत बड़ी विवशता है जिसके कारण वे विवाह नहीं कर सकते।

स

वह रात—

बहुत ही भयानक और डरावनी रात थी।

राजीव अपने फ्लैट के दरवाज़े के पास खड़ा हुआ था। उसने किवाड़ों में एक छोटी-सी झिरी बना दी थी। और उस झिरी में से बाहर झांक रहा था। कई दिन से वह इस दिन की प्रतीक्षा में था। उसने कई रातें जागकर ही बिता दी थीं।

और एक लम्बी प्रतीक्षा के बाद आज वह दिन आया था।

थोड़ी देर बाद उसने गीता को अनु को गोद में लिए अपने फ्लैट के दरवाज़े के सामने से गुज़रते हुए देखा।

राजीव का दिल धड़क उठा। उसने पलटकर देखा। मां जी गहरी नींद सो रही थीं। वह धीरे से बाहर निकल आया। उसने दरवाज़ा बाहर से बंद किया और दबे पांव बाल्कनी की ओर बढ़ने लगा।

जब वह सीढ़ियां उतरकर आखिरी सीढ़ी पर पहुंचा तो उसने वही काली कार देखी जो स्टार्ट हुई और तेज़ी से आगे बढ़ गई। उसकी सारी बत्तियां बुझी हुई थीं।

राजीव लपककर अपनी कार में जा बैठा और फिर उसकी कार तेज़ी से सड़क पर दौड़ने लगी। काली कार की बत्तियां थोड़ी दूर जाने के बाद जल गई थीं लेकिन राजीव ने अपनी कार की बत्तियां नहीं जलाई थीं। उसने अपनी कार उस काली कार से काफी पीछे रखी थी। उसकी नज़रें काली कार की डिम लाइट के नन्हें से सुर्ख प्वाइन्ट पर जमी हुई थीं।

काली कार शहर के छोर पर पहुंचकर एक कॉलोनी में मुड़

गई। यह कॉलोनी अभी-अभी आवाद हुई थी। कॉलोनी के अन्तिम छोर पर एक सुनसान जगह पर पहुंचकर एक कोठी के पास कार की स्पीड कम हो गई। और फिर कार उस कोठी के कम्पाउन्ड में चली गई।

राजीव ने अपनी कार उस कोठी से क़ाफी दूर सड़क के किनारे रोक दी और फिर कार से उतरकर कोठी की ओर चल दिया।

पहले वह फाटक की ओर गया। उसने फाटक पर एक औरत को देखा जो हाथ में एक केरोसिन लैम्प लिए चुपचाप खड़ी थी। उसकी आंखें शून्य में टिकी हुई थीं।

उसे देखते ही राजीव तेजी से पीछे हट गया। उसने देखा वह काली कार कोठी के शानदार पोर्टिको में खड़ी थी।

राजीव ने निश्चय कर लिया कि आज भले ही कुछ भी हो वह इस रहस्य को जान कर ही दम लेगा।

कुछ सोचकर वह झुका और उसने सड़क पर से एक छोटा-सा पत्थर उठा लिया और फिर वह पत्थर कम्पाउन्ड में एक ओर को उछाल दिया। लेकिन जैसे ही पत्थर गिरा किसी के दर्द से कराहने की धीमी-सी आवाज़ उसके कानों से टकराई। उसे लगा पत्थर किसी के जा लगा है। वह चौंक पड़ा। और साथ ही उसने उस औरत को भी चौंकते हुए देखा।

उस औरत ने आवाज़ की दिशा में मुंह करके ज़ोर-ज़ोर से पुकारा—

"कौन है—? कौन है उधर—?"

फिर जब वह आवाज़ की दिशा में चलने लगी तो राजीव ने देखा वह एक लाठी के सहारे टटोलती हुई आगे बढ़ रही थी।

तभी राजीव ने बरामदे में एक आदमी को देखा। उसने ज़ोर से चिल्लाकर पूछा—

"क्या हुआ लक्ष्मी—? कौन है?"

"अभी किसी के कराहने की आवाज़ आई थी।"

"वहम होगा तुम्हारा," उस आदमी ने कहा, "तुम्हें हर सातवें-आठवें दिन कोठी में न जाने किस-किस की आवाज़ें सुनाई देती हैं। कभी सिसकियों की आवाज़ें और कभी किसी के रोने की आवाज़ सुनाई देती हैं। चलो जाकर सो जाओ।"

वह औरत कुछ नहीं बोली। वह जहां खड़ी थी वहीं खड़ी रही।

राजीव ने उस आदमी को पहचान लिया। यह वही अजनबी था जिसकी गाड़ी में गीता और अनु आई थीं। राजीव ने लक्ष्मी को देखा जो आगे की ओर कुछ टटोल रही थी। फिर उसने एक साए को देखा जो लक्ष्मी के हाथ से बचकर सिकुड़ा जा रहा था।

और अन्धी लक्ष्मी बड़बड़ा रही थी—

"अगर कुछ नहीं होता तो मेरे कान ये आवाज़ें क्यों सुनते हैं?"

फिर वह कुछ सोचती हुई धीरे-धीरे कोठी के पिछवाड़े की ओर जाने लगी। फिर राजीव ने उस साए को देखा। साया अब सीधा खड़ा हो गया था और लक्ष्मी की ओर देख रहा था।

राजीव की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। लेकिन फिर उसने छिपे रहना ही ठीक समझा।

कुछ देर तक वह साया उसी तरह खड़ा रहा।

लक्ष्मी कोठी के पिछवाढ़े पहुंचकर गायब हो गई।

राजीव फिर उस साए को देखने लगा। साया वहीं दीवार के सहारे छिपकर बैठ गया।

कुछ देर के बाद कपड़ों की सरसराहट सुनाई दी। और फिर माचिस जलने की आवाज़ सुनाई दी। वह साया सिगरेट सुलगा रहा था। दियासलाई की रोशनी उस साए के चेहरे पर पड़

रही थी।

और राजीव की आंखें आश्चर्य से फैली रह गईं। क्योंकि वह साया प्रदीप था। उसके ऑफिस का असिस्टेन्ट मैनेजर प्रदीप। राजीव हैरान रह गया। फिर वह अपनी जगह से निकला और दबे-पांव चलता हुआ साए के बिल्कुल पीछे पहुंच गया।

प्रदीप सिगरेट के हल्के-हल्के कश ले रहा था।

राजीव ने धीरे से उसके कन्धे पर हाथ रख दिया। और प्रदीप ने पलटकर घूंसा चला दिया।

घूंसा राजीव के माथे पर पड़ा और वह लड़खड़ाकर चित गिर पड़ा।

प्रदीप ने फुर्ती से टार्च की रोशनी राजीव के चेहरे पर डाली और आश्चर्य से बड़बड़ा उठा—

"राजीव बाबू—आप!"

"हां प्रदीप," राजीव ने माथा सहलाते हुए कहा।

प्रदीप ने सहारा देकर राजीव को उठाते हुए आश्चर्य से पूछा—

"आप यहां कैसे?"

"यही सवाल मैं तुमसे करने वाला था।"

"मैं—!" प्रदीप ने गम्भीर होकर कहा, "राजीव बाबू, मैंने आज बड़ी कठिनाई से इस रहस्य का पता लगा लिया है जिसने मेरी रातों की नींद और दिन का चैन छीन लिया था।"

"ओह—!"

"हां राजीव बाबू, अभी-अभी कुछ देर पहले जो आदमी बरामदे में खड़ा लक्ष्मी को पुकार रहा था।"

"हां- हां!"

"वही मेरी शान्ति का दुश्मन है।"

"आश्चर्य है," राजीव ने धीरे से कहा।

लेकिन प्रदीप ने कहा—

"कई दिन बर्बाद किए हैं मैंने तब यह भेद खुला है कि मेरी पत्नी रीता जो घर में खोयी-खोयी रहती है, सपने देखती रहती है और जो हर शनिवार की शाम को घर से गायब हो जाती है और फिर रात गए घर वापस लौटती है। वह असल में यहीं आती है। इसी अजनबी की कोठी में। और मुझे विश्वास है कि मेरी पत्नी रीता मुझसे नहीं इस अजनबी से प्यार करती है।"

"आश्चर्य है—, बहुत ही आश्चर्य की बात है," राजीव बड़-बड़ाया।

"क्यों ? इसमें आश्चर्य की क्या बात है राजीव बाबू ?"

"आश्चर्य की बात यह है प्रदीप कि जिस आदमी ने तुम्हारा सुख चैन छीना है उसी ने मेरे मन की शान्ति भी छीन रखी है।"

"मैं समझा नहीं।" प्रदीप ने आश्चर्य से कहा।

"तुम तो जानते ही हो कि मैं गीता से प्रेम करता हूं।"

"मैं ही क्या अब तो सारा ऑफिस जान गया है। और हम लोग यह भी जानते हैं कि बहुत जल्द आप दोनों का विवाह होने वाला है। और इसीलिए गीता ने नौकरी छोड़ दी है।"

"लेकिन अब यह शादी नहीं होगी।"

"क्यों ?"

"क्योंकि मैं तो गीता को प्यार करता हूं लेकिन गीता मुझे प्यार नहीं करती।"

"यह क्या कहते हैं आप ?"

"मैं सच कहता हूं। गीता इस अजनबी से प्यार करती है।"

"इस अजनबी से ?" प्रदीप चौंक पड़ा।

"हां—बल्कि गीता इस आदमी की नाजायज़ बच्ची की मां भी है।"

"नहीं ?"

"मैंने अक्सर गीता को इस आदमी के साथ कार में देखा है।"

"आश्चर्य है – और मेरा विचार है कि रीता इसे प्यार करती है।"

"और मेरा ख्याल नहीं बल्कि विश्वास है।"

"लेकिन एक ही आदमी दो लड़कियों से प्यार कैसे कर सकता है?"

"एक ऐयाश आदमी तो एक नहीं कई लड़कियों से प्यार कर सकता है।"

प्रदीप कुछ पल सोचता रहा।

राजीव ने कहा—

"यह सोचने का समय नहीं है प्रदीप।"

प्रदीप ने एक ठंडी सांस ली और मुस्कराकर राजीव के हाथ में हाथ डालकर बोला—

"तो आइए—अब आप जैसा कहेंगे वैसा ही होगा।"

वे दोनों बरामदे की ओर बढ़ने लगे।

तभी कदमों की आहटें सुनाई दीं। और फिर बरामदे में वह अजनबी दिखाई दिया।

प्रदीप और राजीव ठिठककर रुक गए।

"लक्ष्मी—ऐ लक्ष्मी – कहां हो तुम?" उस आदमी ने पुकारा।

लेकिन लक्ष्मी की कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी।

राजीव और प्रदीप संभलकर खड़े हो गए। क्योंकि उन्होंने गीता और रीता को एक साथ बाहर निकलते हुए देखा। अनु रीता की गोद में थी।

"राजीव बाबू, यही है रीता—जो एक बच्ची को गोद में लिए हुए है।" प्रदीप ने कहा।

"हां, यह बच्ची गीता और इस अजनबी की नाजायज़ औलाद है," राजीव ने धीरे से कहा।

"ओह—!"

उन दोनों ने देखा गीता और रीता धीरे-धीरे बरामदे से उतर-कर पोर्टिको में आ गईं। अजनबी ने कार का दरवाज़ा खोल दिया।

रीता ने अनु को खूब लिपटाकर प्यार किया। उसका माथा चूमा और फिर उसे गीता की गोद में देकर कार की पिछली सीट पर जा बैठी। और गीता भी अनु को गोद में लेकर रीता के पास बैठ गई।

अजनबी ने खिड़की बंद की और फिर जैसे ही वह ड्राइविंग सीट की खिड़की खोलने लगा पास ही से लक्ष्मी की आवाज़ सुनाई दी—

"अब आप कहां जा रहे हैं?"

"कारखाने ही जा रहा हूं।"

"सुनिए," लक्ष्मी ने धीरे से कहा।

"कहो," अजनबी ने बड़े प्यार से लक्ष्मी का हाथ दबाया।

"एक बात बताइएगा सच-सच—आपको मेरी कसम है। आपके कारखाने में इतना काम कहां से बढ़ गया है कि आप हर शनिवार को दो-दो बार कारखाने जाते हैं। और जिस रात आप नाइट शिफ्ट में काम करने जाते हैं उसी रात को मुझे ऐसा लगता है कि कोठी में आपके अलावा कोई और भी मौजूद है। कभी-कभी मेरा मन कहता है कि एक नहीं बल्कि कई आदमी कोठी में मौजूद हैं। कभी आपके कमरे से खुसर-पुसर बातों की आवाजें सुनाई देती हैं। कभी किसी बच्चे की मासूम-सी आवाज़—और आप कह देते हैं कि यह सब मेरा वहम है। सम्भव है आप एक अन्धी पत्नी से उकता गए हों। यह तो मैंने शादी से पहले ही सुना

था कि आप किसी से प्रेम करते थे। अगर आप अब भी किसी से प्यार करते हैं तो मुझे साफ-साफ बता दीजिए। मैं कसम खाती हूं कि मैं आपके रास्ते से हट जाऊंगी।"

"भगवान के लिए मुझे गलत न समझो लक्ष्मी —मैं भगवान की कसम खाकर कहता हूं। मैं तुम्हें उतना ही प्यार करता हूं जितना प्यार एक पति अपनी पत्नी से करता है।"

"हे भगवान, फिर मेरे मन में ये वहम क्यों उठा करते हैं। मुझे क्षमा कर दीजिए—भगवान के लिए मुझे क्षमा कर दीजिए।"

"जाओ लक्ष्मी, तुम सो जाओ। मैं जल्दी वापस आ जाऊंगा।"

अजनबी ने लक्ष्मी को बरामदे तक पहुंचाया और लक्ष्मी लाठी टेकती हुई अन्दर चली गई।

अजनबी वापस आकर कार में बैठ गया। उसने कार स्टार्ट की और आगे बढ़ा दी।

लेकिन जैसे ही कार फाटक के पास पहुंची एकदम चरचरा-कर रुक गई। क्योंकि फाटक पर राजीव और प्रदीप एक दूसरे का हाथ पकड़े रास्ता रोके खड़े थे।

गीता ठंडी सांस लेकर रह गई। लेकिन रीता—उसे जोर का एक चक्कर आया और वह सीट पर एक ओर को लुढ़क गई। वह बेहोश हो गई थी।

वह अजनबी की कोठी का ही ड्राइंग रूम था।

गीता, प्रदीप और राजीव उस ड्राइंग रूम में बैठे थे। अनु एक सोफे पर सोयी पड़ी थी। रीता अब होश में आ चुकी थी। वह अजनबी भी एक कुर्सी पर बैठा था।

राजीव ने गीता से कहा—

"गीता, क्या अब भी कोई कसर रह गई है। तुम्हारा भेद खुल चुका है। यह अजनबी जो अपना नाम दर्शन बताते हैं तुम्हारी इस बच्ची के बाप हैं जिसकी मां तुम हो। शायद यह इसलिए तुमसे शादी करने से विवश थे। क्योंकि इनका पहले ही विवाह हो चुका था। एक अंधी और अपाहिज पत्नी के साथ जिसे ये आसानी से धोखा दे सकते थे।"

"आश्चर्य तो इस बात का है," प्रदीप ने रीता से कहा, "कि तुम भी एक ऐसे आदमी से प्यार करती हो जो एक दूसरी लड़की को धोखा देकर उसे कुंवारी मां बना चुका है।"

"यह सही है," रीता ने धीरे से कहा।

"क्या सही है," गीता जल्दी से बोली, "तेरा दिमाग खराब हो गया है रीता। तू कसम खा सकती है अपने सुहाग की कि दर्शन बाबू से तू प्यार करती थी?"

"तो दीदी, तुम कसम खा सकती हो कि तुम दर्शन बाबू से प्यार करती थीं?"

"दीदी--?" राजीव ने आश्चर्य से दोहराया।

"रीता," प्रदीप ने पूछा, "गीता देवी से तुम्हारा क्या रिश्ता है?"

"कोई रिश्ता नहीं," गीता ने जल्दी से कहा।

"नहीं दीदी, अब यह उलझन समाप्त हो जानी चाहिए—मुझ में अब और सह पाने की शक्ति नहीं रह गई," रीता ने कहा।

गीता रीता को रोकती ही रही लेकिन रीता ने दर्शन की ओर देखते हुए कहा—

"आज मैं हमेशा के लिए इस घुटन से मुक्ति पा लेना चाहती हूं। भले ही आप मुझे कोई भी सजा दें। मैं अपने ईश्वर, अपनी अनु और अपने सुहाग की सौगन्ध खाती हूं कि आप ही मेरे

देवता हैं।"

"अनु—?"

"रीता—तुम पागल हो गई हो?" गीता ने तेज़ लहज़े में कहा।

"आज वास्तविकता पर से पर्दा हट ही जाना चाहिए दीदी—मैं स्वीकार करती हूं कि अनु गीता दीदी की नहीं मेरी बेटी है," रीता ने दृढ़ता भरे स्वर में कहा।

"रीता—!" प्रदीप के मस्तिष्क में एक छनाका-सा हुआ।

"मैं अब यह बेचैनी बर्दाश्त नहीं कर सकती—अनु मेरी बेटी है—उसे मैंने नौ महीने अपनी कोख में रखा है—मैं अपनी बच्ची को दिन के उजाले में जी भरकर न देख सकती। मेरे लिए इससे बड़ी सज़ा और क्या होगी। और यह सज़ा मुझे इसलिए मिली कि मैं बिना शादी किए ही मां बन गई थी।"

रीता थोड़ी देर सिसकियां लेती रही। फिर धीरे से बोली—

"लेकिन मैं आज कुछ नहीं छिपाऊंगी—आज मैं सब कुछ सुना दूंगी—बता दूंगी। मैं एक औसत घराने की लड़की हूं। अपने पिता की दूसरी पत्नी की औलाद। मेरे पिता धनश्याम दास एक आफिस में हेड क्लर्क थे। गीता दीदी उनकी पहली पत्नी की सन्तान हैं। गीता दीदी ने मेरे लिए अपनी ज़िन्दगी का सारा सुख-चैन दाव पर लगा दिया। मेरी अनु का भविष्य संवारने के लिए परिस्थितियों से जूझ रही हैं। क्योंकि इन्होंने मेरी मां को वचन दिया था। हां, मेरी मां को जो दीदी की सौतेली मां थीं।"

रीता कुछ देर चुप रहने के बाद फिर बोलने लगी—

"गीता दीदी जब पांच वर्ष की थीं तभी इनकी मां की मृत्यु हो गई थी। और पिताजी एक ही समय में दो काम नहीं कर सकते थे। नौकरी और दीदी का पालन-पोषण ये दोनों काम एक साथ करना कठिन था। कुछ लोगों ने उन पर ज़ोर डाला कि वह दूसरी

शादी कर लें। लेकिन वह इस डर से शादी नहीं करना चाहते थे कि कहीं सौतेली मां उनकी बेटी को दुख न दे।

"लेकिन जब पिताजी के लिए दीदी का पालन-पोषण कर पाना कठिन हो गया तो उन्होंने दूसरी शादी कर ली। और जब पहली बार सौतेली मां ने गीता दीदी को गोद में लेकर प्यार किया तो गीता दीदी हैरान रह गईं। और फिर उनके इशारों पर नाचने लगीं— शादी के एक साल बाद मेरा जन्म हुआ। और दीदी को जैसे एक खिलौना मिल गया। गीता दीदी मुझे पाकर फूली नहीं समाईं। हम दोनों साथ-साथ पलने-बढ़ने लगे।

"हम दोनों के बाद कोई सन्तान नहीं हुई। पिताजी हम दोनों को अपना बेटा भी समझते थे और बेटी भी। उन्होंने हम दोनों की पढ़ाई की ओर पूरा-पूरा ध्यान दिया। जब गीता दीदी ने हाई स्कूल पास किया तो मैं छठे क्लास में थी। और जब गीता दीदी ने बी० ए० किया तो मैं इंटर में पहुंची। हमारा घर न बहुत धन-सम्पन्न था न गरीब ही था। जब मैं कालेज में पहुंची तो मेरे सौन्दर्य पर न जाने कितने लड़के पागल हो उठे। लेकिन मैं किसी से सीधे मुंह बात ही नहीं करती थी। एक आज़ाद पंछी की तरह ज़िन्दगी बिता रही थी। मैं प्रेम करने वालों का हमेशा मज़ाक उड़ाया करती थी। जो भी लड़का मेरी ओर बढ़ता शुरू-शुरू में तो मैं उसे लिफ्ट देती थी और जब वह मेरे प्रेम में गम्भीर हो जाता था तो मैं उसका खूब मज़ाक उड़ाया करती थी।

"मैंने इसी आदत के अनुसार दर्शन बाबू को भी पहले बढ़ावा दिया और फिर इनका मज़ाक उड़ाया। दर्शन बाबू को ज़िद हो गई कि अगर यह शादी करेंगे तो मेरे साथ ही करेंगे। और मेरा निश्चय यह था कि मैं किसी ऐसे व्यक्ति से शादी करूंगी जिसे मैंने पहले कभी देखा ही न हो। न उससे कभी मेरा कोई सम्बन्ध ही रहा हो।

"मैं दर्शन की इच्छा को ठुकराती रही। और एक दिन दर्शन ने मेरे अकेलेपन का लाभ उठाकर मुझे लूट लिया। मैं इस सदमे से बेहोश हो गई, होश आया तो दर्शन का लिखा हुआ एक पर्चा मेरे पास पड़ा था। जिसमें दर्शन ने लिखा था कि वह मेरे साथ यह खेल खेलने पर इसलिए मजबूर हुए हैं कि वह मुझसे शादी करना चाहते हैं।

"लेकिन दूसरे दिन जब दर्शन मुझे दिखाई दिए तो मैंने घृणा से इनकी ओर देखा और ज़मीन पर थूक दिया। दर्शन का दिल टूट गया और यह कालेज छोड़कर चले गए।

"फिर कुछ दिनों के बाद मैंने महसूस किया कि मेरी कोख में दर्शन की अमानत पल रही है। तो मैं घबरा गई। मैंने गीता दीदी को बताया तो यह सन्नाटे में रह गईं। हम दोनों ने दर्शन को बहुत खोज़ा लेकिन इनका कहीं कोई पता नहीं चला। डर के मारे गीता दीदी किसी डाक्टर से भी मशवरा न कर सकीं। समय बीत गया।

"फिर मेरी हालत का पता पिताजी को चल गया। उसी रात उन्हें दिल का दौरा पड़ा और उनका देहान्त हो गया। उन दिनों मेरी शादी की बात प्रदीप बाबू से चल रही थी। मां को इस बात का पता तब चला जब मेरा पेट बढ़ने लगा। मां सन्नाटे में रह गईं। जब उन्हें वास्तविकता का पता चला तो उन पर जैसे सकता छा गया। उन्होंने आत्महत्या करने की कोशिश की। लेकिन गीता दीदी ने मां को बचा लिया और उन्हें वचन देकर विश्वास दिलाया कि वह मेरी बदनामी न होने देंगी।

"मां हम दोनों बहनों को लेकर एक गांव में चली गईं। वहां अनु ने जन्म लिया। गीता दीदी उसी रात अनु को लेकर शहर चली आईं। मेरे ज़िगर का टुकड़ा कुछ घंटे बाद ही मुझसे अलग कर दिया गया। मैं तड़पती रह गई। मेरे जीवन की धारा पलट

गई।

"कुछ दिन बाद मैं और मां भी शहर लौट आए। मां ने मेरा विवाह प्रदीप बाबू के साथ कर दिया। और जिस दिन मेरी डोली विदा हुई उसके कुछ दिन बाद ही मां भी चल बसीं। मैं अक्सर बाज़ारों के चक्कर लगाती और दीदी और अनु को खोजा करती। मुझे पता नहीं था कि दीदी अनु को लेकर कहां रह रही हैं।

"एक दिन अचानक दर्शन बाबू से मेरी भेंट हो गई। इन्होंने बताया कि वह गीता दीदी से मिल चुके हैं। दीदी अनु के साथ 'सावित्री सदन' में रहती हैं। मैं दीदी और अनु को देखने के लिए पागल हो उठी। दर्शन बाबू ने मुझे बताया कि मेरे व्यवहार से उन्हें इतना दुख हुआ था कि वह शहर छोड़कर गांव चले गए थे। उनका विवाह करने का कोई इरादा नहीं था। लेकिन गांव में ही इनकी भेंट अन्धी लक्ष्मी से हुई। वह अन्धी थी इसलिए कोई उसके साथ शादी करने के लिए तैयार ही नहीं होता था। लक्ष्मी के दुख से द्रवित होकर इन्होंने लक्ष्मी के साथ विवाह कर लिया। और शहर आकर कारोबार करने लगे। इन्होंने मुझसे वायदा किया कि यह मुझे गीता दीदी से मिला दिया करेंगे। और इसके बाद हम दोनों बहिनों की मुलाकातें इस कोठी में होने लगीं।"

रीता कुछ देर चुपचाप बैठी रही और फिर सिसकी भरकर बोली—

"प्रदीप, मैं अपनी बच्ची की कसम खाती हूं, दर्शन बाबू से न तो मुझे पहले प्यार था और न अब है। मैं आपको ही अपना सर्वस्व समझती हूं। अब आपकी इच्छा है चाहें तो मुझे क्षमा कर दें या फिर जो भी चाहें सज़ा दें।"

"सज़ा—?" प्रदीप ने एक लम्बी सांस ली और दर्द भरी मुस्कराहट के साथ कहा, "तुम्हें बहुत सज़ा मिल चुकी है रीता।

एक बिना किए अपराध की सजा। तुम्हें इससे अधिक सज़ा देना बहुत बड़ा अन्याय होगा। मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया। और सुनो—आज से अनु तुम्हारी ही नहीं मेरी भी बेटी है।"

"प्रदीप—मेरे देवता—," रीता सिसकती हुई प्रदीप के पैरों से लिपट गई।

प्रदीप ने उसे उठाकर गले से लगा लिया।

राजीव ने गीता के कन्धे पर हाथ रखकर कहा—

"गीता—!"

गीता चौंककर राजीव की ओर देखने लगी।

राजीव ने कहा—

"गीता, तुम असाधारण नारी नहीं देवी हो—देवी।"

और जब राजीव, गीता, प्रदीप और रीता कोठी से निकले तो दर्शन लक्ष्मी का हाथ थामे बरामदे में खड़ा था। उन दोनों की आंखों से झर-झर आंसू गिर रहे थे।

राजीव और गीता की शादी के बाद जब राजीव ने अपने फ्लैट में सावित्री सदन में रहने वालों को पार्टी दी तो उसमें रीता और प्रदीप भी शामिल हुए।

मां जी बहुत खुश दिखाई दे रही थीं।

पार्टी आरम्भ होने से पहले जब प्रदीप ने सब मेहमानों के सामने अनु को गीता से मांगा तो लोग चौंक पड़े। मां जी के आश्चर्य का तो ठिकाना न रहा।

रीता ने बताया—

"हां मां जी, अनु मेरी बेटी है। मैंने अनु को अपनी कोख से जन्म दिया है। गीता दीदी ने मुझे बदनामी से बचाने के लिए अपनी बेटी बनाकर अनु को पाला है।"

"नहीं !" मां जी ने हैरान होकर कहा।

सारे मेहमान भौंचक्के रह गए।

और जब रीता अनु को गोद में लेने लगी तो अनु ने रोकर कहा—

"नहीं, मैं नहीं जाऊंगी—मम्मी, मैं नहीं जाऊंगी," उसने गीता का आंचल थाम लिया।

"आ जाओ बेटी," रीता ने प्यार से कहा, "मैं तुम्हारी मां हूं बेटी।"

"नहीं, तुम मेरी मम्मी नहीं हो मेरी मौसी हो—मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊंगी।"

गीता बेचैन हो उठी। उसने लपककर अनु को उठा लिया और उसे प्यार करते हुए बोली—

"हां बेटी, तुम कहीं नहीं जाओगी—मैं तुम्हारी मां हूं—तुम मेरे पास ही रहोगी।"

और अनु गीता के सीने से लिपटकर सिसकियां भरने लगी।

●●●

पाठकों से निवेदन

यह उपन्यास आपको कैसा लगा। कृपया अपने विचार मुझे निम्न पते पर लिख भेजें ताकि मैं आपकी भावनाओं के अनुरूप सुन्दर व रोचक उपन्यास आपकी सेवा में प्रस्तुत कर सकूं।

चेतना
३२, बापू भाई बशी रोड,
विले पारले वेस्ट
बम्बई-४०००५६

उपन्यास के पात्र व घटनाएं काल्पनिक हैं।

डायमंड पाकेट बुक्स

में

संजोग व क़ैदी

जैसे रोचक उपन्यासों के
लोकप्रिय लेखक

लोकदर्शी

का
मर्मस्पर्शी उपन्यास

अबला

आपके प्रिय लेखक 'लोकदर्शी' के उपन्यास अब केवल 'डायमंड पाकेट बुक्स' में ही प्रकाशित होते हैं!

'अनुराग' के बाद

डायमंड पॉकेट बुक्स में :

उपन्यास लेखिका

चेतना का

नया उपन्यास

पूजा के फूल

मूल्य 4/-

स्वार्थ, नफरत और वासना के अंधेरों
में घिरी एक मासूम युवती
जिसे तलाश है पूजा के फूलों की।

चेतना के अन्य उपन्यास

परछाईं • सरगम • कुर्बानी • दीवानगी • फूलों के आँसू

डायमंड पॉकेट बुक्स की चर्चित पुस्तकें

'क्रिकेट सम्राट सुनील गावस्कर'
(सचित्र जीवनी) जैनेन्द्र जैन — ४/-

- जूडो, कैराटे, बाक्सिंग व कुंगफू कैसे सीखें — ४/-
- क्रिकेट कैसे सीखें — २/-
- वृहद वात्स्यायन कामसूत्र — ४/-
- सैक्स विवाहितों के लिये — २/-
- सैक्स किशोर किशोरियों के लिये — २/-
- स्वमूत्र चिकित्सा — ३/-
- हिप्नोटिज्म (सम्मोहन विज्ञान) — ४/-
- चिन्ता छोड़ो सुख से जियो - स्वेट मार्डन — ४/-

—— आचार्य भगवान देव कृत ——
योग विषयक अनुपम पुस्तकें :

- योग और सैक्स — ४/-
- योग पुरुषों के लिये — ४/-
- योग स्त्रियों के लिये — ४/-

१०/- की पुस्तकें मंगाने पर डाक व्यय फ्री

डायमंड पॉकेट बुक्स
2715 दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

सुन्दर व उपयोगी पुस्तकें आपके घर की शोभा

रु. १०/- में १२/- की पुस्तकें

और डाक व्यय फ्री

घर बैठे कम मूल्य पर प्राप्त करें

'अपने घर में अपनी लायब्रेरी योजना' के सदस्य बनिये

- ☐ पहली बार नये सदस्यों को १०/- मूल्य की उनकी मन पसन्द पुस्तकें केवल ८/- रु. में दी जाती हैं।
- ☐ सदस्यों को केवल पहली बार सदस्यता शुल्क के दो रुपये देने होते हैं, जो अमानत के रूप में हमारे पास जमा रहते हैं।
- ☐ फिर हर महीने १२/- रु मूल्य की उनकी मन पसन्द पुस्तकें रु १०/- में दी जाती है।
- ☐ पैकिंग व डाक खर्च हर बार हम वहन करते हैं।
- ☐ पहली वी पी में प्लास्टिक कवर भी निःशुल्क भेजा जाता है।
- ☐ लगातार ६ वी.पी छुड़ाने पर सातवीं वी.पी. में एक तीन रुपये की पुस्तक उपहार स्वरूप भेजी जाती है।
- ☐ यदि कोई सदस्य किसी मास वी.पी न मंगाना चाहे तो सूचित करने पर वी.पी. नहीं भेजी जाती और फिर भी सदस्यता जारी रहती है।
- ☐ योजना के सदस्य किसी भी अन्य सीरीज़ की पाकेट बुक्स मंगवा सकते है।
- ☐ डायमंड पुस्तक समाचार भी निःशुल्क भेजा जाता है।

पूरे परिवार के लिये एक उपयोगी योजना

डायमंड पाकेट बुक्स की 'अपने घर में अपनी लायब्रेरी योजना' के सदस्य बनकर हर माह १२/- की पुस्तकें १०/- में प्राप्त करें।

विवरण पत्र लिखकर निःशुल्क मंगावें

सुन्दर पुस्तकें आपके घर की शोभा

डायमंड पाकेट बुक्स

२७१५, दरिया गंज, नई दिल्ली-११०००२

अपनी पसन्द की पुस्तकें इनमें से चुनिये

रानी बाजपेयी

- ☐ गुलमेंहदी

प्रेमबाजपेयी

- ० जले पंख

गुलशन नन्दा के उपन्यास

- ✕ नीलकण्ठ
- ० घाट का पत्थर
- ० जलती चट्टान

कुशवाहाकान्त के उपन्यास

- ० दानव देश
- ० उसके साजन
- ० खून का प्यासा

चेतना के उपन्यास

- ☐ कुर्बानी
- ☐ सरगम
- ☐ परछाईं
- ☐ दीवानगी
- ☐ फूलों के आंसू

राहुल के उपन्यास

- ☐ रिश्ते नाते
- ☐ पतिव्रता
- ☐ मां
- ☐ दो भाई
- ☐ घराना

समीर के उपन्यास

- ☐ पायल
- ☐ आन
- ☐ कसक
- ☐ दाग
- ☐ आराधना
- ☐ सुहाग
- ☐ बदनाम
- ० सपना
- ० तितली
- ० वह लड़की
- ० गहरा सागर
- ० सीमा
- ० कल्पना
- ० बहाना
- ० आंख मिचौली
- ० लाडली
- ० विश्वासघात

लोकदर्शी के उपन्यास

- ☐ अबला
- ☐ कैदी
- ☐ निर्मोही
- ☐ दासी
- ☐ संजोग
- ☐ पतंगा
- ☐ सूना दर्पण
- ☐ प्यार की प्यास
- ० खामोशी
- ० एक भूल
- ० अधूरी कहानी
- ० काजल
- ० दो किनारे
- ० कोमल
- ० अभिलाषा
- ० झूठे सपने

इ० गिरीश के उपन्यास

- ० भटकती आत्मा
- ० मौत की घाटी
- ० कमरे में हत्या
- ० नाग की प्रेमिका
- ० खूनी चेहरे
- ० स्वीमिंग पूल में लाश
- ☐ ड्रैगन
- ☐ खून के सौदागर

जे० एस० कंवल

- ० करवट

आशा पूर्णा देवी

- ☐ श्रावणी

आबिद सुरती

- ☐ कुंडली

फिल्मी गीतमाला सीरीज

लता के नग्मे
लता के युगल गीत
रफी के नग्मे
रफी के युगल गीत
किशोर के नग्मे
किशोर के युगल गीत
मुकेश के नग्मे
मुकेश के अन्य नग्मे
मुकेश के युगल गीत
तलत व रूना लैला के नग्मे
हेमन्त, मन्नाडें के नग्मे
महेन्द्र कपूर के नग्मे
आशा भौंसले के नग्मे
नये फिल्मी नग्मे
दर्द भरें फिल्मी नग्मे
फिल्मी हास्य गीत
फिल्मी गजलें
फिल्मी कव्वालियां
भूले बिसरे फिल्मी नग्मे
फिल्मी राष्ट्रीय व भक्ति गीत
बिनाका गीत माला भाग-१
बिनाका गीत माला भाग-२
बिनाका गीत माला भाग-३
सदाबहार फिल्मी नग्मे
फिल्मी डायरेक्टरी

फिल्मी जीवन माला

ग्रेट शो मैन - राजकपूर
चुलबुली रेखा

सैक्स एजुकेशनल सीरीज

सेक्स : विवाहितों के लिए
किशोर-किशोरियों के लिए
वात्स्यायन : कामसूत्र
गर्भवती एवं शिशुपालन
परिवार नियोजन

जोक्स सीरीज

प्रेमी-प्रेमिकाओं के जोक्स
पति-पत्नी के जोक्स
- मॉडर्न जोक्स
- मिडनाईट जोक्स
- फिल्मी जोक्स
- टॉप जोक्स, चटपटे जोक्स

चुने हुए जोक्स
पार्टी जोक्स
बच्चों के जोक्स
बड़े आदमियों के जोक्स
अकबर बीरबल के जोक्स

खेल-कूद सीरीज

जूडो कैराटे कैसे सीखें
क्रिकेट कैसे खेलें
हाकी कैसे खेलें
फुटबाल, वालीबाल कैसे खेलें
टैनिस, टेबल टैनिस कैसे खेलें
शतरंज कैसे खेलें
बैडमिंटन व बास्केटबाल कैसे खेलें
जिमनास्टिक तथा शारीरिक व्यायाम कैसे करें
कबड्डी तथा अन्य भारतीय खेल कैसे खेलें
ताश व कैरम कैसे खेलें

धार्मिक सीरीज

श्रीमद्भगवतगीता (हिन्दी अनुवाद सहित)
संक्षिप्त रामायण
महाभारत
धार्मिक भजनावली

हास्य कविता सीरीज

काका की फिल्मी पैरोडियां (काका हाथरसी)

ससुराल चलो
(गोपाल प्रसाद व्यास)
० बूढ़ों ने किया कमाल यार
(गोपाल प्रसाद व्यास)
हुल्लड़ का हंगामा
(हुल्लड़ मुरादाबादी)
गोरी बैठी छत
(ओमप्रकाश आदित्य)
जमाना चमचों का
(निर्भय हाथरसी)

आचार्य विपुलराव

० स्वमूत्र चिकित्सा

डायमण्ड शायरी सीरीज

गालिब की शायरी
जफर की शायरी
दाग की शायरी
शकील की शायरी
चुनी हुई रूबाइयां

डायमण्ड कुकरी सीरीज

अचार, मुरब्बे, चटनियां बनाइए
शाकाहारी भोजन
मांसाहारी भोजन
कांटिनेंटल डिशिज

बाल जासूसी उपन्यास

फैंटम और आदमखोर जंगल
लम्बू मोटू और जंगल का तूफान
चालाक बिल्ली
मुजरिम बादशाह
खूनी फकीर
जहरीली रोशनी
मौत से टक्कर
अद्भुत खण्डहर
फैण्टम और चार शिकारी
लम्बू मोटू और यमराज का हे

हीरा पन्ना सीरीज

नीला जहर
धमाके
शैतान
जालसाज

एस० सी० बेदी

काला भूत
भयानक चेहरा

सदाबहार रोचक कहानियां

राजस्थान की लोककथाएं
बंगाल की लोक कथाएं

नन्हे जासूस सीरीज
प्रत्येक डेढ़ रुपया

समुद्री डाकू
काले धंधे
ठंडी आग
रहस्यमयी कैंची

6467

बिना चिह्न की पुस्तकों का मूल्य दो रुपया प्रति ० चिह्न की पुस्तकों का मूल्य तीन रुपया प्रति □ चिह्न की पुस्तकों का मूल्य चार रुपया प्रति × चिह्न की पुस्तकों का मूल्य पांच रुपया प्रति।

सम्पर्क करें : डायमण्ड पाकेट बुक्स २७१५, दरियागंज
नई दिल्ली-११०००२

२०१.४३२
पं. ४१५३८

डायमंड पाकेट बुक